श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर की वार्षिक स्मारिका

मणिभद्र

41वां पुष्प वि.सं. 2056, सन् 1999

दिनांक 11.9.99

सम्पादक मण्डल

सम्पादन

मोतीलाल भड़कतिया

सदस्य

राकेश मोहनोत
गुणवन्तमल सांड

राजेन्द्र कुमार लूनावत
सुश्री सरोज कोचर

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जयपुर–302 003

फोन : 563260/569494

मुद्रक :

खुशबू ऑफसेट प्रिन्टर्स

41, एकता मार्ग, घाटगेट रोड, आदर्श नगर, जयपुर

फोन : (ऑ.) 609038, (नि) 607165

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर
की
स्थायी प्रवृत्तियाँ

श्री सुमति नाथ भगवान का मदिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर

श्री सीमधर स्वामी का मदिर, पाच भाइयो की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर

श्री ऋषभ देव स्वामी तीर्थ (जीर्णोद्धारान्तर्गत नव-निर्माण), ग्राम बरखेडा (जिला जयपुर)।

श्री शातिनाथ स्वामी का मदिर, ग्राम चन्दलाई (जिला जयपुर)

श्री जैन चित्रकला दीर्घा एव भगवान महावीर के जीवन चरित्र-भित्ति चित्रो मे (सुमतिनाथ भगवान का तपागच्छ मदिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर)

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय मारुजी का चौक, जयपुर

निर्माणाधीन विजयानन्द विहार, 1816-18 घी वालो का रास्ता जयपुर

श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

श्री जैन श्वे भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

श्री जैन श्वे मित्र मण्डल पुस्तकालय एव सुमति ज्ञान भण्डार

2 श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

3 धार्मिक पाठशाला

4 स्वरोजगार प्रशिक्षण उद्योगशाला सिलाईशाला

5 जैन उपकरण भडार घी वालो का रास्ता जयपुर

6 "माणिभद्र' वार्षिक स्मारिका।

संपादकीय

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर की वार्षिक स्मारिका माणिभद्र के 41वें अंक को निर्धारित समय पर श्री संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है। यह महासमिति के लिये आत्मसंतोष का विषय है ही कि संघ की स्थायी गतिविधियां तो पूर्ववत निर्बाध रूप से संचालित हो रही हैं और इसमें इस स्मारिका का प्रकाशन भी एक प्रमुख अंग रहा है।

दो विशाल एवं महत्त्वाकांक्षी योजनाएं— बरखेडा तीर्थ के जिनालय का आमूल-चूल निर्माण एवं संघ के लिये घी वालों के रास्तें में खरीदे हुए स्थान पर चार मंजिला भवन का निर्माण, जिसका नामकरण आचार्य श्रीमद्‌विजय नित्यानंद सूरीश्वर जी म.सा. द्वारा 'विजयानंद विहार' किया गया है, कार्य अबाध रूप से जारी है।

मनुष्य भव को गतिमान एवं सार्थक बनाने के लिए, जीवन जीने की कला और जीवीकोपार्जन, दो प्रमुख अंग हैं। जीवीकोपार्जन के अन्तर्गत साधर्मिक एवं अजैन महिलाओं को भी स्वावलंबी बनाने की दृष्टि से प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश में महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है, प्रतिदिन उद्योग एवं सिलाई शाला में निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। वहीं जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना करने हेतु देवगुरु धर्म की आराधना स्वरूप जिनालय, उपाश्रय, प्रतिवर्ष चातुर्मास, आयंबिल शाला, भोजन शाला, साहित्य प्रकाशन आदि सभी प्रकार के कार्यकलाप यहां संचालित हो रहे हैं।

प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली माणिभद्र स्मारिका में जैन धर्म संस्कृति, नवकार मंत्र, भगवान महावीर, सत्य, अहिंसा आदि पर पूर्व में बहुत कुछ लिखा जाता रहा है, इस बार के अंक की विशेषता यह है कि विद्वान लेखक लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर तो किया ही है, सामाजिक एकता, कर्त्तव्य, विनय, श्रद्धा, भक्ति आदि को जीवन में उतारकर किस प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति की जा सकती है, इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। ऐसे विषयों में विचार भेद होना तो स्वाभाविक है ही। रचनाकारों ने अपने विचारों एवं भावों को प्रकट किया है जिसके सत्यासत्य उपयोगिता आदि का निर्णय पाठकों को स्वयं करना है। कतिपय बालक-बालिकाओं एवं महिलाओं को प्रोत्साहन देने स्वरूप उनकी रचनाओं को भी यथावत प्रकाशित किया गया है। संपादक मंडल का इन सभी से सहमत होना अथवा सत्य असत्य का निर्णय करना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में संघ के घी वालों के रास्ते में स्थित श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय में विराजित भगवान महावीर स्वामी की प्राचीन प्रतिमा का चित्र, चातुर्मास हेतु विराजित मुनिराज का चित्र एवं कतिपय उल्लेखनीय घटनाओं के चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं।

स्मारिका प्रकाशन में लेखकों, विज्ञापनदाताओं मुद्रण कार्य में सहयोगियों सभी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए आशा है कि पूर्ववत् यह अंक भी पठनीय एवं उपयोगी सिद्ध होगा। असावधानीवश रही हुई भूलों के लिये संपादक मंडल अग्रिम रूप से क्षमाप्रार्थी है।

दीपक

श्रीमती शान्ती देवी लोढा

दीपक तेरी स्वर्णप्रभा है, रजनी उर उपवन मधुमास ।
रत रहता है तू परहित मे, हिय मे सदा छिपाये हास ।
अपने तन मे ज्वाल जलाकर, करता है तू पर उपकार ।
अखिल विश्व के ऊपर तेरा, सदा रहेगा शाश्वत भार ।
निम्नभाग मे तिमिर छिपाये, करता तू प्रतिपल नर्तन ।
गृह, आंगन ज्योतिर्मय कर तू, सफल समझता निज जीवन ।
अमा निशा आरती जब काली चादर से ढक कर निज गात ।
हेम वर्ण की किरण लिए तुम, आते झिलमिल करते रात ।
लख कर तेरी स्वर्णिम आभा, कीट पतग हुए मदमस्त ।
प्रेम याचना करते तुझसे, होकर यौवन मे उन्मत्त ।
लेकिन तूने क्षणिक प्रेम का तनिक महत्त्व नहीं जाना ।
भस्मीभूत किया कइयो को प्रेम तत्त्व को पहचाना ।
मधुर-मधुर गुंजार सुनाते कलियो पर अलि मंडराते ।
कलि के कटक जालो से वे बिध करके अति दुख पाते ।
दिनकर लख केरव की शोभा आता गाता नूतन छन्द ।
किन्तु कुमुदिनी रवि विलोक कर, कर लेती लोचन पट बन्द ।
प्रेम-सिन्धु मे अवगाहन को, उत्सुक रहता है ससार ।
किन्तु लगाता गोता ज्योही मिलता उसको कष्ट अपार ।
लौकिक-प्रेम कभी मत करना, अति प्रचड है इसकी ज्वाल ।
छेदन कर देती है उर का बन करके कंटक की माल ।
प्रभु का प्रेम अलौकिक है नित स्वर्णिम सौरभ से भरपूर ।
मिलन-वियोग सभी सुख-दुख यह कर देता है चकनाचूर ।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर
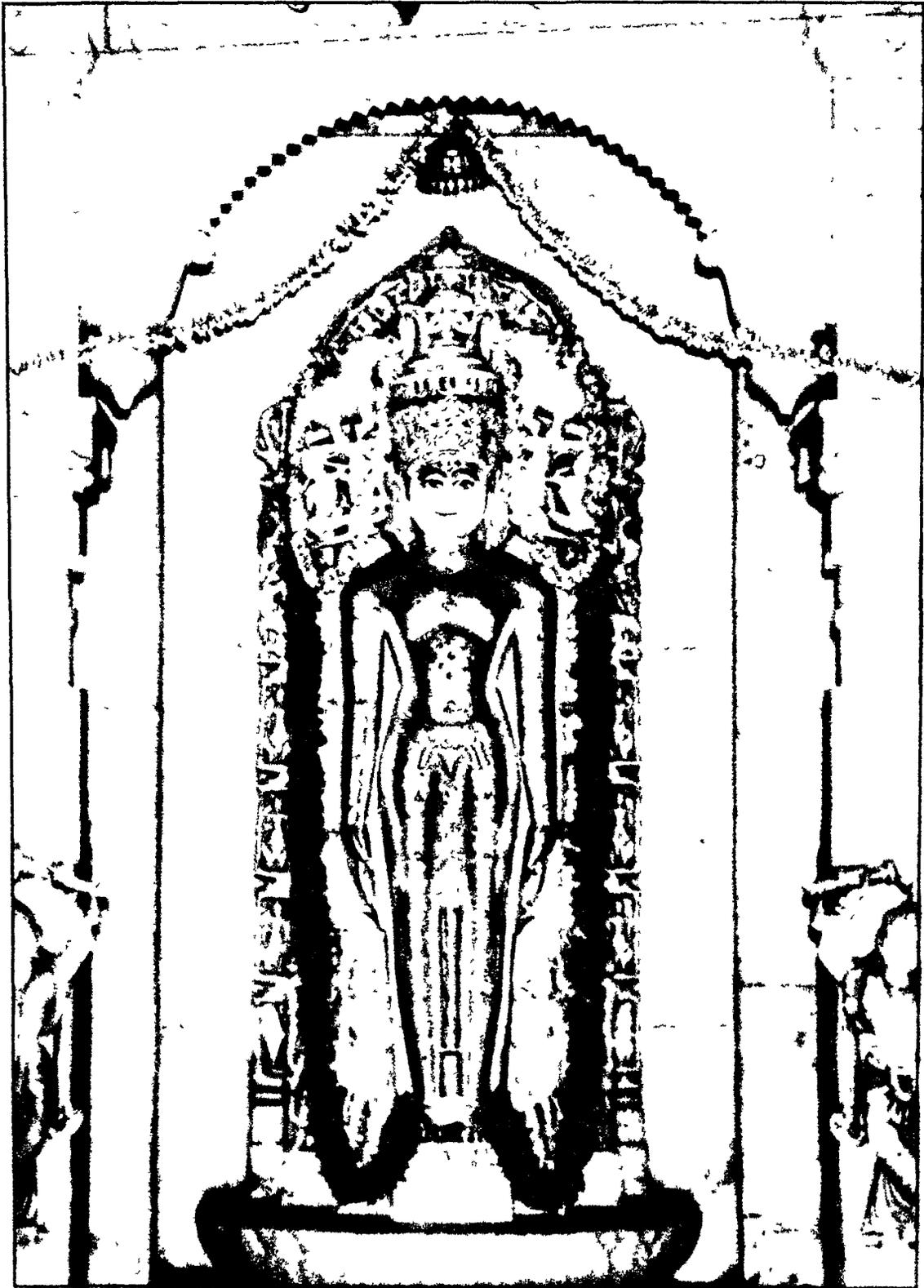
श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय, घी वालों का रास्ता, जयपुर में विराजित

भगवान महावीर स्वामी की प्राचीन प्रतिमाजी

श्री ऋषभदेवाय नमः

प्रकट प्रभावी भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ

ग्राम बरखेड़ा (जिला-जयपुर)

यात्रा हेतु अवश्य पधारिए

लगभग सात सौ वर्षीय प्राचीन प्रतिमाजी एवं तीन सौ वर्षीय जिनालय का जीर्णोद्धारान्तर्गत आमूल-चूल नव-निर्माण हो रहा है। शिखर एवं गर्भ गृह का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर आ. श्री नित्यानंद सूरी जी म.सा. की पावन निश्रा में तीर्थाधिपति का दि. 29.4.99 को गर्भगृह में प्रवेश हो गया है। कार्य जारी है।

यात्रियों के आवास की समुचित व्यवस्था है। पास ही दो किलोमीटर पर प्रसिद्ध तीर्थ श्री पदमप्रभुजी स्थित हैं। साथ ही 3 कि.मी. पर इसी संघ का श्री शांतिनाथ स्वामी का प्राचीन जिनालय चन्दलाई ग्राम में है जहाँ आचार्य श्री हीरसूरीश्वर जी म.सा. यहां पर पधारे थे जिसका शिलालेख यहां लगा हुआ है।

जीर्णोद्धार में अधिक से अधिक आर्थिक योगदान कर अर्जित लक्ष्मी का सदुपयोग कर अक्षय पुण्योपार्जन का अपूर्व अवसर है। जिनालय जीर्णोद्धार में योगदान स्वरूप एक ईंट का नकरा 3,111/- रु. भेंट करने वालों के नाम शिलालेख पर अंकित किये जायेंगे। भोजनशाला में फोटो लगाने का नकरा 5,111/- रु. है।

वहीवट एवं संचालन

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार

जयपुर - 302 003

फोन : 563260 / 569494

अनुक्रमणिका

उपनगर सोडाला में वीतराग दर्शन

अहमदाबाद-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग सख्या-8 पर अजमेर रोड से जयपुर के प्रवेश मार्ग पर उपनगर सोडाला क्षत्र म जिन मदिर एव उपाश्रय की आवश्यकता को देखते हुए पूज्य माताश्री की जिन मदिर निर्माण की भावना पूर्ण करने हेतु श्रीमती शशी मेहता धर्मपत्नी श्री प्रकाश चन्द्र मेहता ने "श्री आदीश्वर भगवान जैन श्वे मदिर सघ ट्रस्ट, सोडाला" का गठन करते हुए अजमेर रोड पर रत्नापुरी कॉलोनी मे एक भूखण्ड ट्रस्ट को समर्पित किया।

नूतन जिन मदिर एव उपाश्रय हेतु खाद मुहूर्त एव शिला स्थापना महोत्सव परम पूज्य आचार्य श्री हिंकार सूरिश्वर जी म सा की निश्रा मे सवत् 2037 मे सपन्न हुआ था। एक अन्तराल के बाद परम आदरणीय जीवदया प्रेमी श्री कुमारपाल वी शाह के मार्ग-दर्शन एव सहयोग से मदिर व उपाश्रय का निर्माण कार्य प्रारभ किया गया। पन्यास प्रवर श्री पद्मविजय श्री म सा आदि के सान्निध्य मे चतुर्विध सघ की शुभ निश्रा म जठ सुदि 12 स 2052 को महोत्सवपूर्वक जिनालय म जिन बिम्बो का भव्य प्रवेश सपन्न हुआ।

सन् 1996 मे परम पूज्य आचार्य देव श्री जितेन्द्र सूरिश्वर जी म सा आदि चतुर्विध सघ की शुभ निश्रा मे नूतन जिनालय मे मूलनायक आदीश्वर भगवान्, श्री शातीनाथ भगवान एव महावीर स्वामी जी की भव्य एव मनमो प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा महोत्सव सपन्न हुई थ प्रतिवर्ष ज्येष्ठ सुदि 12 को वर्षगाठ पर सत्रह भ पूजा का आयोजन होता है।

जयपुर के प्रवेश द्वार सोडाला मे यह जि मदिर व उपाश्रय बन जाने से एव शहर से म 8 कि मी दूर होने से इस क्षेत्र से विहार करने व साधु-साध्वीवृन्द का निरतर यहा पवास आवागमन रहता है। इस क्षेत्र मे समुचित सख्या जैन परिवारो का निवास है तथा उनमे उत्तरा अभिवृद्धि हो रही है। सभी के लिये य आराधना-साधना की सुगमता सुलभ है।

ट्रस्ट के विधान मे तपागच्छ मान्यतानुसार सात क्षेत्र की आय-व्यय का वि ध्यान रखा गया है। श्री जैन श्वे तपागच्छ स जयपुर के मनोनीत दो प्रतिनिधि ट्रस्टियो सहयोग से ट्रस्ट का सफल सचालन हो रहा है

यहा के उपाश्रय की निर्माणाधीन द्विती मजिल का कार्य भी आप सभी उदारम सहयोगियो के सहयोग से पूर्ण होना है। यहा पध कर प्रभु दर्शन, सेवा, भक्ति का अवश्य लाभ ले की विनती है।

श्री आदीश्वर भगवान जैन श्वे. मंदिर संघ ट्रस्ट, सोडाला

प्रकाश चन्द्र मेहता
अध्यक्ष

नरेन्द्र कुमार लुनावत
मत्री

आचार्य देवेश श्री नीति-हर्षसूरीश्वर जी म.सा. के पट्टधर

आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय महेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के अंतिम अन्तेवासी

अध्यात्मयोगी, मधुर प्रवचनकार

मुनिवर्य श्री मणिप्रभविजय जी म.सा.

जिनकी पावन निश्रा में चातुर्मास सं. 2056 सन् 1999 की आराधनाएं सम्पन्न होने जा रही है।

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर में निर्मित होने वाले भवन "विजयानन्द विहार" का भूमि पूजन समारोह दि. 2.12.98

आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरीश्वर जी म.सा. भूमिपूजन से पूर्व वासक्षेप प्रदान कर क्रियाएं सम्पन्न कराते हुए।

भूमिपूजन के लाभार्थी श्री पूनमचंद भाई शाह एवं पुत्रों–परिवार का अभिनन्दन करते हुए संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी। संयोजक श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत पास में हैं।

इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन्त

बरखेड़ा तीर्थाधिपति श्री आदीश्वर भगवान का नव-निर्मित गर्भगृह में प्रवेश महोत्सव (29.4.99)

पावन निश्रा—शातिदूत आचार्य श्रीमदविजय नित्यानद सूरीश्वर जी म सा

आचार्य भगवन्त का वरखेडा ग्राम मे मगल–प्रवेश
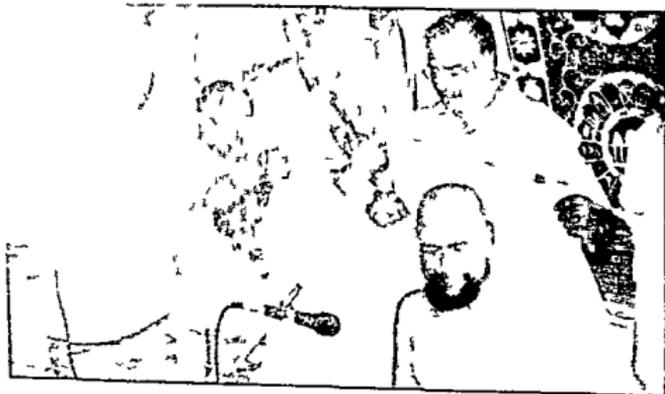
आचार्य भगवन्त का सार्वजनिक अभिनन्दन करते हुए तपागच्छ सघ जयपुर के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एव सघ मत्री

गम्भारे मे प्रवेशोपरान्त तीर्थाधिपति को विराजमान कराते हुए लाभार्थी श्री मीठालाल जी कुहाड।

बरखेड़ा तीर्थाधिपति श्री आदीश्वर भगवान का नव-निर्मित गर्भगृह में प्रवेश महोत्सव (29.4.99)

पावन निश्रा—शांतिदूत आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरीश्वर जी म.सा.
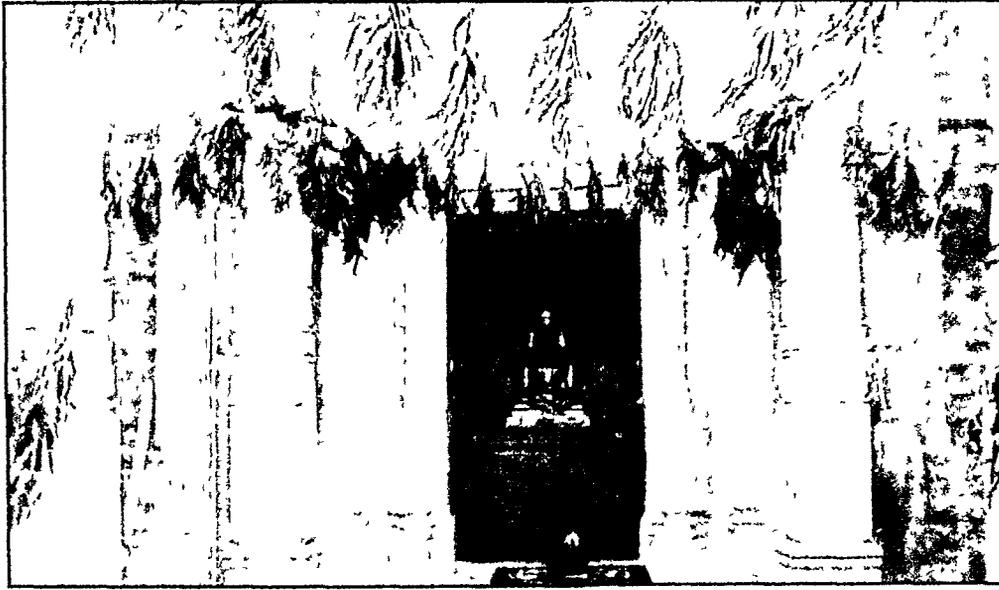
प्रवेशोपरान्त विराजित भगवान श्री आदीनाथ स्वामी

आचार्य भगवन्त, मुनिवर्य श्री मणिप्रभ विजय जी, महत्तरा साध्वीजी आदि साध्वीवृन्द एवं प्रवेश कराने के लाभार्थी श्री मीठालालजी कुहाड।

जीर्णोद्धारान्तर्गत जिनालय का 29.4.99 का चित्र।

नित्यानंद विहार का शिलान्यास समारोह (दि. 4.12.98)

शिलास्थापना से पूर्व पूजा की क्रियाए सम्पन्न करते हुए लाभार्थी चोधरी श्री हीराभाई मगलचंदजी (मगलचद ग्रुप) परिवार के सदस्यो के साथ आचार्य भगवन्त वासक्षेप प्रदान कर रहे है।

शिलास्थापना के पश्चात् श्री सघ की ओर से लाभार्थियों का वहुमान करते हुए उपाध्यक्ष श्री तरसेम कुमार जी पारख। सयोजक श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत भेट सामग्री लिये हुए।

वरखेडा मे उत्तरग स्थापना समारोह दि 11 12 98 आचार्य श्री नित्यानद सूरीश्वर जी म सा की निश्रा मे उत्तरग स्थापनाकर्ता चाधरी श्री हीराभाई सपत्नि एव सयोजक श्री उमरावमल जी पालेचा के साथ स्थापना करते हुए।

विजयानन्द विहार में भवन निर्माण सहयोगी बनने हेतु विनम्र निवेदन

शासनदेव की असीम कृपा से एवं गुरु भगवन्तों के मंगल आशीर्वाद से इस श्रीसंघ द्वारा घी वालों के रास्ते में नया क्रय किया गया भवन संख्या 1816-18 के आमूलचूल निर्माण की योजना गत पर्यूषण पर्व पर श्रीसंघ के समक्ष प्रस्तुत की गई थी। संघ ने इसको हाथों-हाथ लेकर जो अदम्य उत्साह एवं साहस का संबल प्रदान किया उसके लिए श्रीसंघ को हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई।

आचार्य प्रवर श्रीमद्विजय नित्यानंद सूरीश्वर जी म.सा. की पावन निश्रा में दि. 2 एवं 4 दिसम्बर, 1998 की मंगल बेला में भूमि पूजन एवं शिलान्यास सम्पन्न होकर निर्माण कार्य का श्रीगणेश हुआ था और अब तक मेजनाइन की छत तक का कार्य पूरा होकर आगे का निर्माण कार्य भी तीव्र गति से जारी है। इस भवन का नाम आचार्य श्री के श्रीमुख से विजयानन्द विहार घोषित किया गया था।

जैसा कि आपको विदित है कि इस भवन योजना में बड़ा प्रवचन हाल मय मेजनाइन, चार छोटे हाल, 21 कमरे, बोरिंग इत्यादि लिफ्ट सुविधा के साथ बनाये जायेंगे। विभिन्न नकरे पूर्ण होने पर भी बालकनी, प्रवेश द्वार, जीने इत्यादि विभिन्न कार्यों के लिये आवश्यक धन की पूर्ति हेतु महासमिति के निर्णयानुसार जो भी भाग्यवान इस महत्ती व्यय साध्य योजना में अपना योगदान 21,000/- रु. या इससे अधिक प्रदान करेंगे उनके नाम **"भवन निर्माण सहयोगी"** के रूप में शिलापट्ट पर बडे हाल में अंकित किये जायेंगे। अतः आप सभी उदामना दानदाताओं से विनम्र विनती है कि इस महत्त्वाकांक्षी योजना में भरपूर सहयोग प्रदान करने की कृपा करें ताकि यह कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जा सके।

हीराभाई चौधरी	नरेन्द्र कुमार लुनावत	मोतीलाल भडकतिया
अध्यक्ष	संयोजक, भवन निर्माण समिति	संघ मंत्री

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (पंजी.) जयपुर

आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302 003

श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर

चित्र दिग्दर्शन
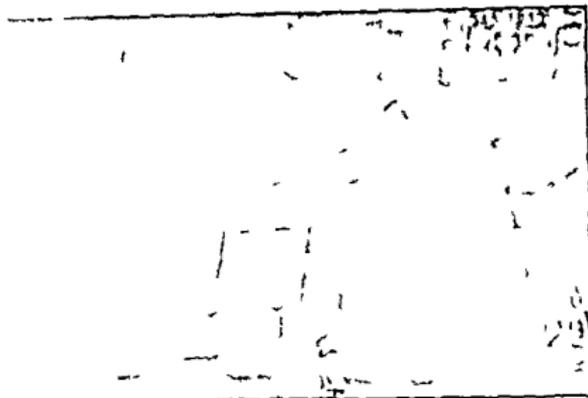
माणिभद्र के 40वे अक का विमोचन श्रीमती लाडवाई सिघी ने किया। श्रीमती जीवनकुमारी चौधरी उनका अभिनन्दन करते हुए।
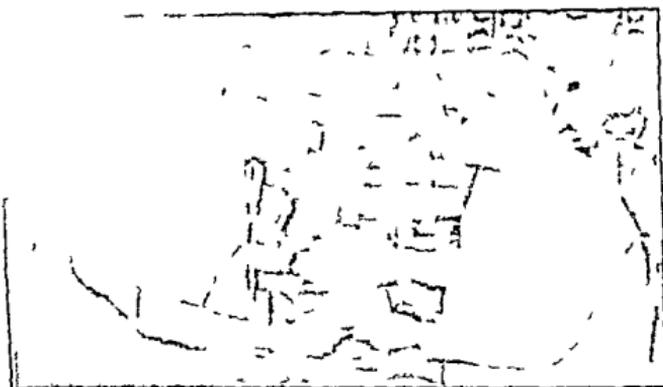
विशिष्ट सेवाओ के लिए डा अरुण जैन वरिष्ठ चिकित्सक अमर जैन चिकित्सालय का अभिनन्दन करते हुए सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी

श्री जैन श्वे महासभा के तत्वावधान मे आयोजित सामूहिक क्षमापना दिवस पर श्री आत्मानद सभा भवन मे मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार जी दूगड, महानिरीक्षक कारागार, जयपुर का अभिनदन करते हुए सघ के अध्यक्ष

चातुर्मासिक नगर प्रवेश दि. 18.7.99
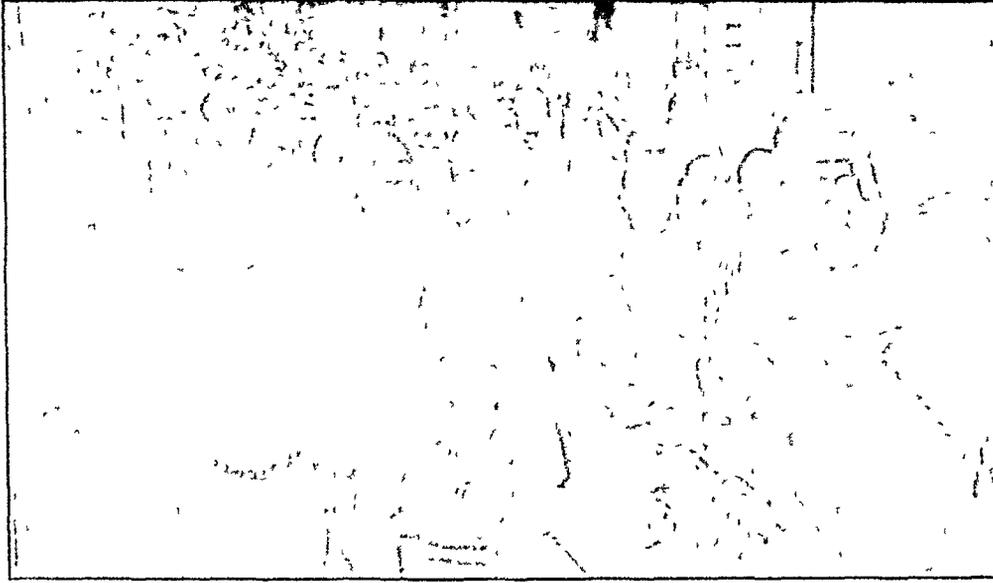
शोभा यात्रा का
विहगम दृश्य
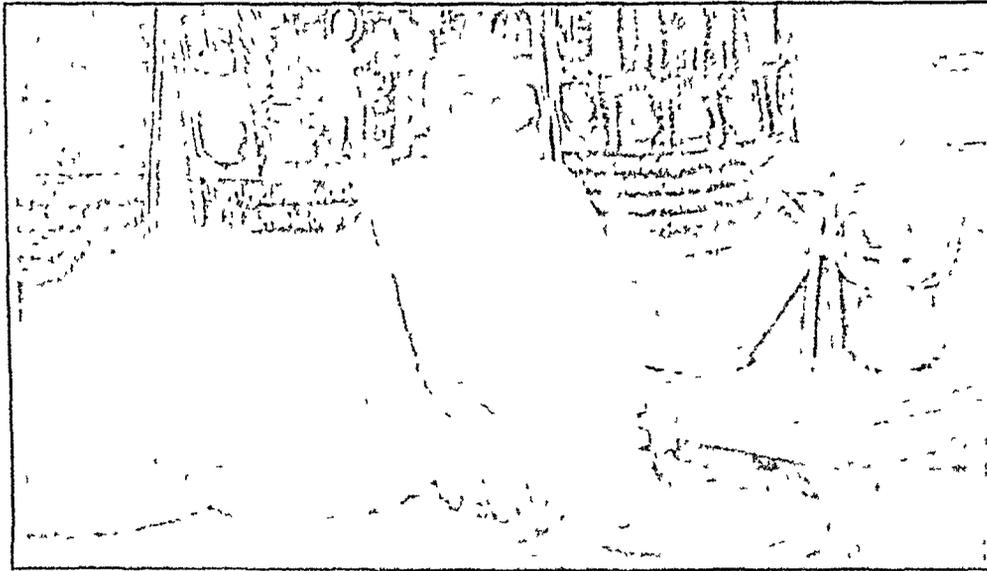
धर्मसभा को सम्बोधित
करते हुए पू. मुनिवर्य
श्री मणिप्रभ विजय जी म.सा.

धर्म सभा में विराजित
सा हर्षप्रभा श्री जी म.सा.
आदि साध्वीवृद ।
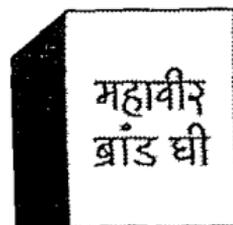
जैन एकता आधार और विस्तार

आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वर जी म.सा., खोड़

एकता कैसी हो ?

एक विचारक ने लिखा—संगठन का मतलब है, एक साथ मिलजुल कर परस्पर एक दूसरे का सहयोग करना।

प्रकृति संगठन चाहती है, संगठन के आधार पर ही संसार चलता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखना हो तो कहीं दूर मत जाइये, अपने शरीर पर ही एक नजर डालिये। शरीर में विभिन्न अवयव हैं, अंग-उपांग हैं-हाथ, पैर, ऑख, कान, नाक, जीभ आदि। इस शरीर के भीतर पेट हैं, हृदय है, यकृत है, गुर्दा है, इन सबके व्यवस्थित कार्य संचालन से शरीर चल रहा है। देखिये ये सब अलग-अलग हैं, स्थान भी अलग है किन्तु फिर भी सब एक-दूसरे से जुडे हुये हैं। हाथ-पैर परिश्रम करते हैं, मुँह-भोजन ग्रहण करता है, पेट उस भोजन को पचाता है, रक्त आदि रस बनते हैं। हृदय प्रतिक्षण धडकता रहकर उस रक्त को हजारों नसों में फेंकता है। अशुद्ध रक्त को स्वयं ग्रहण करता है, शुद्ध रस को नसों में प्रवाहित करता है। गुर्दा रक्त को शुद्ध/रिफाइन करता है। इस प्रकार प्रत्येक अवयव की अपनी जिम्मेदारी है, सब स्वतंत्र है किन्तु फिर भी एक-दूसरे से जुडे हैं। यदि पुरुष का एक हाथ या एक पैर बेकार हो जाता है तो दूसरा हाथ-पैर अकेला ही पूरी जिम्मेदारी से अपना काम संभाल लेता है। एक ऑख या कान खराब हो जाता है तो दूसरी आँख अपने आप पूरी जिम्मेदारी उठा लेती है और देखने का सब काम एक ही आँख पूरा कर लेती है।

दो गुर्दे हैं, जिन्हें किडनी कहते हैं। यदि एक किडनी खराब हो जाती है तो दूसरी किडनी पूरे शरीर में रक्त शुद्धि का काम अकेली करती जाती है। हृदय का एक वाल्व बंद हो जाता है या एक फेफड़ा काम नहीं करता तो इसका दूसरा अंग अपने आप सब काम पूरा कर लेता है। शरीर के सभी अंग बिना किसी शिकवे शिकायत के स्वयं ही पूरी जिम्मेदारी से शरीर का संचालन करते रहते हैं और मनुष्य को पूरे जीवन काल तक जीवित सक्रिय रखते हैं। सब अवयव एक दूसरे के लिए काम करते हैं, एक दूसरे के क्षतिग्रस्त या नष्ट होने पर उसका पूरा काम अकेले करते जाते हैं—सामाजिक चेतना का, सामूहिक सहयोग भावना का कितना बडा और आश्चर्यकारी उदाहरण आपके सामने है। प्रकृति ने आपको सामाजिकता का, संगठन का, पारस्परिक सहयोग और मेल-जोल का कितना सुन्दर पाठ दिया है, परन्तु आप हैं कि इस पर ध्यान ही नहीं दे रहे हैं।

मैं पूछता हूँ, आप जो भाषणों में, चर्चाओं में संगठन, एकता और सहयोग की बडी-बडी लच्छेदार बातें करते है- कभी सोचा है आपने कि

सगठन कैसे चलता है, एकता कैसे निभती है ओर किस प्रकार हम सब एक-दूसरे के लिए उपयोगी बन सकते ह ? सगठन की बात करने वाले जरा पाच मिनट शान्त चित्त से अपने ही शरीर पर चिन्तन करे। प्रकृति द्वारा पढाया यह पाठ याद करे कि एकता या सगठन कैसे चलता हे। केसे निभाया जाता है।

हमारे आचार्यो ने हजारो वर्ष पहले ही हमे एक अमर सूत्र दिया था—परस्परोपग्रहो जीवानाम् । सभी जीव परस्पर एक-दूसरे के उपकारी व सहयोगी होते है। यह जीव का स्वभाव है, प्रकृति का नियम हे और इसी आधार पर मानव समाज क्या समूचा प्राणिजगत जीवित हे, गतिशील हे प्रगतिशील भी हे ओर उन्नतिशील भी ह।

अपने ऊपर आकाश मण्डल मे देखिये जरा ! इस नील गगन मे असख्य-असख्य तारे अनादि काल से विचरण कर रहे ह। सब तारो का अपना-अपना स्वभाव है अपनी-अपनी चमक हे और अपना मण्डल हे, दायरा है। कभी कोई किसी दूसरे की सीमा पर आक्रमण नहीं करता। किसी पर प्रहार नहीं करता। किसी से कोई टकराता नहीं। सब तारे मिलकर ससार को प्रकाशित कर रहे है। क्या हम इस ससार मे रहकर अपना अलग अस्तित्व रखकर भी तारो की तरह विचरण नहीं कर सकते। क्या हमारी एकता, हमारा सगठन इतना प्रभावशाली नहीं हो सकता कि जैन शासन के सभी तारे मिलकर ससार को प्रकाश देते रहे।

मुझे आश्चर्य होता है और खेद भी होता है कि आज जेन एकता की बाते हो रही है और वह भी हवाई। पचासो वर्षो से जैन एकता और जैन समाज का सगठन होने की चर्चाये चल रहीं ह। हमारे आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज ने जेन एकता के लिये पचास वर्ष पहले एक जोरदार प्रयास प्रारम्भ किया था। उनकी आत्मा का कण-कण, शरीर का रोम-रोम पुकारकर कह रहा था जैनो ! एक हो जाओ। एकता के विना तुम अपने धर्म व सस्कृति को सुरक्षित नहीं रख सकोगे। उन्होने सभी सम्प्रदायो के आचार्यो व नेताओ से भी सम्पर्क किया था। जैन एकता के प्रयासो मे काफी प्रगति हुई थी परन्तु कहते ह एन मोके पर मक्खी छींक गई। कुछ साम्प्रदायिक तत्त्वो ने उन प्रयासो को सफल नहीं होने दिया आर जेन समाज पहले से भी ज्यादा फूट ग्रस्त हो गया।

जो जैन समाज अनेकान्तवादी हे, स्याद्वादी है, जिसने समन्वय का सिद्धान्त ससार को सिखाया है, परस्पर सहयोग एव उपकार का अमर सिद्धान्त जिसने अपने दर्शन का आधार माना हे वही जेन समाज एकता ओर सगठन के लिये वर्षो से बाते कर रहा हे, परन्तु आज भी वही ढाक के तीन पात।

मुझे दुख होता है यह देखकर कि आज पहले से भी ज्यादा फूट-द्वेष-झगडे और एक-दूसरे पर दोषारोपण करने की प्रवृत्ति बढी है, बढ रही है ओर यही प्रवृत्ति हमारे समाज की शान्ति को छिन्न-भिन्न कर रही है। फूट की धुन साज रूपी वृक्ष की जडे खोखली करता जा रहा है। बल्कि कहूँ, कर चुका है।

स्वार्थ व अहंकार त्यागे बिना एकता कैसी ?

आप जानते हैं कि एकता बातों से नहीं होती, केवल भाषणबाजी से एकता नहीं चलती। एकता के लिए एक बात छोडनी पडती है और एक बात स्वीकारनी पडती है। एकता का आधार है- सरलता, प्रेम और विश्वास। एकता का शत्रु है- अहंकार और स्वार्थ।

एक ऐतिहासिक उदाहरण

भगवान महावीर के समय में गणधर इन्द्रभूति 94 हजार साधुओं में सबसे ज्येष्ठ थे। प्रथम गणधर थे। अगणित लब्धि- ऋद्धि-सिद्धि के धारक थे। देव-देवेन्द्र भी उनके चरणों की रज मस्तक पर चढाकर आनन्दित होते थे। स्वयं को भाग्यशाली समझते थे। वे गौतम स्वामी एक बार जब श्रावस्ती नगरी में पधारे, उनके शिष्य नगर में भिक्षा लेने जाते हैं और वहां देखते है कि उनके जैसे ही श्रमण जिनके वस्त्र रग-बिरंगे हैं, नगर में भिक्षा के लिए घूम रहे हैं। गौतम शिष्यों को आश्चर्य होता है, उनसे मिलते हैं, पूछते हैं- आप कौन हैं ?

वे श्रमण कहते है—हम भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य केशी कुमार श्रमण के शिष्य हैं। उनको आश्चर्य होता है, जब हम सब निर्ग्रन्थ है, एक ही मोक्षमार्ग के पथिक हैं तो फिर यों अलग-अलग क्यों हैं ? क्या बात है जो हमें एक दूसरे से दूर किये हुये है।

महान ज्ञानी गौतम स्वामी शिष्यों को बताते हैं—भगवान पार्श्वनाथ का धर्म चातुर्याम धर्म हैं। भगवान महावीर का धर्म पंचयाम धर्म हैं। बस ऐसे ही कुछ छोटे-छोटे मतभेद हैं, जिनके कारण हम अलग-अलग हैं किन्तु अब हमें परस्पर मिलकर इन मतभेदों को सुलझाना है और दोनों ही श्रमण परम्पराओं को एक धारा बन जाना है। छोटी-छोटी धारा-धारा होती हैं किन्तु जब सब धाराएं मिल जाती हैं तब प्रवाह बन जाता है, नदी बन जाती है और नदी समुद्र बन जाती हैं। अलग-अलग बिखरे तिनके कचरा कहलाते हैं, किन्तु सब तिनके मिलकर झाडू बन जाता है तो वही तिनके कचरा बुहारने और सफाई करने का साधन हो जाता है। लकडी के छोटे-छोटे टुकडे अलग-अलग स्थानों पर पड़े जल रहे हैं, उनसे धुँआ निकल रहा है। वातावरण दूषित हो रहा है, परन्तु जब सब जलती लकडियॉ एकत्रित हो जाती हैं तो वही महाज्वाला बन जाती है। उस महाज्वाला का सामना करने की शक्ति किसी में नहीं है। तो गौतम स्वामी अपने शिष्यो से कहते हैं—हमें केशीकुमार श्रमण से मिलना चाहिए। प्रश्न खड़ा होता है, पहले कौन मिले ? एकता और संगठन तो चाहिए किन्तु पहल कौन करे ? जब बडप्पन का प्रश्न आ जाता है तो पॉव वहीं चिपक जाते हैं, किन्तु गौतम गणधर थे। पूरे संघ में सबसे ज्येष्ठ और घोर तपस्वी, महाज्ञानी थे जबकि केशीकुमार श्रमण भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के एक अन्तिम प्रतिनिधि आचार्य मात्र थे। पद की दृष्टि से गौतम ज्येष्ठ थे, ज्ञान की दृष्टि से भी, साधना की दृष्टि से भी वे उत्कृष्ट थे। परन्तु जहॉ प्रेम और सरलता होती है, वहॉ बडे छोटे का विचार भी संकीर्ण और छोटे मन की उपज है। गौतम कहते हैं—वे भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य हैं। हमारी निर्ग्रन्थ कुल परम्परा में बडे हैं। हम ही उनके पास जायंगे। उनसे मिलेंगे और परस्पर बातचीत करके सभी

मतभेदो को दूर कर एक हो जायेगे ।

एकता के लिये यह है त्याग । एकता व सगठन हमेशा त्याग चाहता है । बलिदान चाहता है । जब तक आप अपने अहकारो का त्याग नहीं करेगे, अपने छोटे-छोटे स्वार्थ नहीं छोडेगे तब तक एकता का स्वप्न पूरा नहीं होगा । गौतम और केशी स्वामी का इतना प्रेरक और उच्च उदाहरण हमे मार्गदर्शन करता है, प्रेरणा देता हे कि यदि एकता और सगठन चाहते है तो अपना अहकार छोडो, शिष्यो का मोह छोडो, पदो की लालसा छोडो और दूध-चीनी की तरह मिल जाओ । दूध पानी की तरह नहीं जो दूध का मोल गिरा दे, मिलो तो ऐसे मिला ज्यो दूध मिश्री । प्रेम स मिलो । सद्भाव बढाओ ।

आप सब जैन हे, भाई-भाई ह, स्वधर्मी है। आपके शास्त्रो मे स्वधर्मी प्रेम, स्वधर्मी सहायता की बडी-बडी महिमा बताई हे । आपने भी सुनी है, स्वधर्मी बन्धु की सवा करना महान पुण्य का कार्य है । परन्तु जान-बूझकर भी आप भाई-भाई क्यो लडते है ? क्यो एक-दूसर की निन्दा करते है ? क्यो एक-दूसरे क चरित्र पर कीचड उछालते है ? सोचिये यदि कोई आप पर कीचड उछालता है तो आपके ऊपर उसके छीटे लगे या न लग किन्तु आपके हाथ तो गन्दे होगे ही। कीचड़ उछालने वाला सदैव घाटे मे रहता है ।

निन्दा मे तेरह पाप हे आज जैन समाज राग-द्वेष, कलह, फूट फजीता मे बदनाम हा चुका है अपनी हजारा वर्षों की प्रतिष्ठा खो रहा है। तीर्थो के झगडे, स्थानको व उपाश्रयो के झगडे, सस्थानो के झगडे और इससे भी आगे साधु साध्वी मे परस्पर प्रतिद्वन्द्विता । एक दूसरे की यश कीर्ति सुनकर जलना, एक दूसरे की सफलता और सम्मान देखकर छाती पीटना और निंदा करना। उनके चरित्र पर अवाछनीय लाछन लगाना कितना नीचे गिर गया हे हमारा समाज। करोडो के सामने लाखो की सख्या मे ही हे और वह भी इतने टुकडो मे बँटा है तो भी कोई बात नहीं, परन्तु एक-दूसरे को नीचा दिखाने मे, एक-दूसरे की टाग खींचने म, एक दूसरे की प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचाने मे ही अपनी शक्ति, समय और धन का बर्बाद कर रहा है और बात केवल धन की ही नहीं, अपनी आत्मा को कलुषित, पतित कर रहा है।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज फरमाया करते थे--एक-दूसरे की निदा आलोचना और छींटाकशी करना महापाप है। निदक अठारह पापो मे तेरह पापो का भागी होता है यानि कि दूसरो की निदा चुगली आलोचना दोषारोपण करने वाला 13 पापो का सेवन करता हे । पाप के अठारह भेद मे से तेरह भेद निदा के साथ जुडे हुए है इसलिए ये महापाप है । अस्तु ।

आज सगठन की एकता की बहुत जरूरत है । आज की दुनिया मे जो सगठित है वही शक्ति सम्पन्न है । शुक्ल यजुर्वेद म एक मत्र है **अनाधृष्टा सीदत सहोजस** जो सगठित है परस्पर प्रेम सूत्र मे बधे हे उन्हे कोई भी महाबली परास्त नहीं कर सकता उन्हे कोई भी शक्ति भयभीत नहीं कर सकती । आज जैन सस्कृति, जैन धर्म और श्रमणा व श्रावको पर चारो तरफ से आक्रमण हो रहे हे, उन्हे स्थान-स्थान पर

प्रताड़ित, भयभीत करने का प्रयास हो रहा है। जैन मन्दिरों को जैन मूर्तियों को विध्वंस किया जा रहा है। उन पर आक्रमण किये जा रहे हैं। जैन साधु-साध्वियों पर कई बार कई स्थानों पर बर्बर आक्रमण हुये और इतना बड़ा साधन सम्पन्न, बुद्धि सम्पन्न जैन समाज एक हीनसत्व पुरुष की तरह यह सब देखता है। बिल्ली जब एक कबूतर पर झपटती है तो दूसरे कबूतर अपनी गर्दन नीची कर लेते हैं। सोचते हैं यह उस पर झपट रही है, हम पर नहीं। हम सुरक्षित हैं। क्या आज ऐसी स्थिति नहीं है ? सम्पूर्ण जैन संस्कृति पर आक्रमण हो रहे हैं। यदि अपनी संस्कृति और अपनी महान दार्शनिक धरोहर की रक्षा करनी है तो जैन समाज को एकता के सूत्र में बंधना ही पडेगा। संगठित हुये बिना वह अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकेगा। अपना अस्तित्व भी सुरक्षित नहीं रख पायेगा।

एकता के पांच सूत्र

मैं विस्तार में नहीं जाकर एकता की पृष्ठभूमि के रूप में एक पॉच सूत्रीय योजना आपके सामने रख रहा हूँ। आप सोचें आपको मैं नहीं कहता अपना सम्प्रदाय छोड दो, आम्नाय छोड दो, अपनी मान्यतायें त्याग दो। अपनी गुरु परम्परा को भुलाने की बात भी नहीं करता हूँ। आप जहॉ हैं, जिस परम्परा में हैं, वहॉ रहें परन्तु शान से रहें। वीरता के साथ रहें, कायर बनकर नहीं शेर बनकर रहिये। कुत्तो की तरह पीछे से टांग मत पकडिये।

निन्दा करना कायरता है। झगडना दुर्बलता है। लांछन लगाना नीचता है बस इनसे बचे रहें। खरबूजे की तरह ऊपर से भले ही एक-एक फांक अलग-अलग दिखे परन्तु भीतर सब एक हैं। बस आप भले ही ऊपर से अपनी-अपनी परम्पराओं से जुड़े रहें, परन्तु भीतर से जैनत्व के साथ, महावीर के नाम पर बने रहें।

एकता के लिए सबसे पहले निम्न पहलुओं पर हमें पहल करनी होगी—

(1) एक-दूसरे की निन्दा, आलोचना, आक्षेप, चरित्र हत्या जैसी घृणित व नीच प्रवृत्तियों पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगे।

(2) तीर्थो, मन्दिरों, धर्म स्थानों व शिक्षा संस्थानों आदि के झगड़े बन्द किये जायें। इनके विवाद निपटाने के लिए साधु वर्ग या त्यागी वर्ग को बीच में न डाले और ना ही जैन संस्था का कोई भी विवाद न्यायालय में जाये। दोनों समाज के प्रतिनिधि मिलकर परस्पर विचार विनिमय से कुछ लें, कुछ दें की नीति के आधार पर उन विवादों का निपटारा किया जाये। अहंकार और स्वार्थ की जगह धर्म की प्रतिष्ठा को महत्त्व दिया जाये। महावीर का नाम आगे रखें।

(3) सभी जैन श्रमण, त्यागी वर्ग परस्पर एक-दूसरी परम्परा के श्रमणों से प्रेम व सद्भावपूर्वक व्यवहार करें। आदर सम्मान दें।

(4) महावीर जयन्ति, विश्व मैत्री दिवस जैसे सर्व सामान्य पर्व दिवसों को समूचा जैन समाज मिलकर एक मंच पर मनाये। सभी परम्परा के श्रमण एक मंच पर विराजमान होकर भगवान महावीर की अहिंसा, विश्व शान्ति का उपदेश सुनाये।

(5) संवत्सरी पर्व, दशलक्षण पर्व, क्षमा

दिवस जैसे धार्मिक व सास्कृतिक पर्व एक ही तिथि को सर्वत्र मनाये जाये ।

इस प्रकार हम एक-दूसरे के निकट आ सकते है । मै विलय का पक्षपाती नहीं हूँ । केवल समन्वय चाहता हूँ । विलय हो नहीं सका । जो सम्भव नहीं उसके विषय मे सोचना भी व्यर्थ ह । समन्वय हो सकता हैं । हमारा दर्शन अनेकान्तवादी है । इसलिए हम परस्पर एक-दूसरे के सहयोगी बनकर एक-दूसरे की उन्नति और प्रगति मे सहायक बन । एक-दूसरे को देखकर प्रसन्न हो । इस पृष्ठ-भूमि पर ही हमे सोचना चाहिए ।

गुणीजनो को देख हृदय मे
मेरे प्रेम उमड आवे ।
बने जहा तक उनकी सेवा करके
यह मन सुख पावे ॥

यदि जैन एकता के लिए यह प्राथमिक आधार भूमि बन सके तो इस सहस्राब्दि की यह उल्लेखनीय ऐतिहासिक घटना सिद्ध होगी । जो भाग्यशाली इसका श्रेय लेगा वह इतिहास का स्मरणीय पृष्ठ बन जायेगा । ☆

सच्चा धर्म मानव को मानव से जोडता है, तोडता नही । वह देश, व्यक्ति और समाज को उठाता है, गिराता नही । धर्म सबको शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करता है, न कि उन्हे कमजोर और अकर्मण्य बनाता है । हम सदियो से दासता के बधन मे जकडे रहे, क्योकि हमने धर्म को छुआछूत रसोई की पवित्रता तथा वाहरी शुद्धता से ही जोडे रखा । हमारा पतन वास्तविक धर्म के अनुसरण करने से नही, बल्कि उसकी अवहेलना करने से हुआ है ।

"धर्म का स्थान मदिर,
मस्जिद, गिरजाघर और
गुरुद्वारा ही नही है,
व्यक्ति का अपना जीवन है ।"

रेड सिग्नल धर्मनिष्ठ पुण्यात्माओं को

मुनि श्री मणिप्रभ विजय जी म.सा. (रत्नपुंज), जयपुर

जब-जब कोई धार्मिक प्रसंग होता है तब-तब साधर्मिक वात्सल्य की परम्परा हमारे जिनशासन में बनी हुई है । यह प्रसंग भले ही मंदिरजी में भगवान की सालगिरह का हो, प्रभु प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, अट्ठाई महोत्सव आदि का हो या फिर घर आंगन में गुरु भगवंत के पगलिये-प्रवचन आदि का हो । हर प्रसंग पर ज्यादातर साधर्मिक भक्ति की भावना हमारे दिल में बनी रहती है । यह प्रसंग यदि सर्दियों में हो तब तो कोई बात नहीं लेकिन गर्मियों में होता है तब बर्फ का उपयोग करना एक आम बात बन गई है । यह बर्फ का उपयोग भूलकर भी नही करना चाहिए चूंकि यह महान दोष का कारण है ।

जैसे अनछाना पानी भी भरपूर जीव विराधना का कारण होने से पीना वर्जित है एवं कई जैन शासन को पाने वाले विवेकी भाग्यशाली छना हुआ या फिर गर्म किया हुआ पानी ही पीते है तो फिर बर्फ तो अप्कायिक जीवों का एक महान पिंड या पहाड बन जाता है तो विशेष-विशेष जीवहिंसा का हेतु होने से उसका उपयोग कैसे कर सकते हैं ।

यह खूब ही ध्यान से सोचने योग्य बात है कि जैनधर्म में बतलाये हुए 22 अभक्ष्यों में से ही एक अभक्ष्य पदार्थ बर्फ है । जो किसी भी हालत में खाने लायक न हो उसे ''अभक्ष्य'' कहते हैं । यह जरूर है कि संसार में कदम-कदम पर हिंसा ही हिंसा है । इसका मतलब यह नहीं कि मनचाहे रूप से जितनी हो उतनी ज्यादा से ज्यादा हिसा किया करो । हमको यह सोचना चाहिए कि कैसे जितना हो सके उतना ज्यादा से ज्यादा हम हिंसा से बचे रहें । जिनकी हिंसा हमारे द्वारा होती है उन जीवों में कभी-कभार हमारा भी तो नंबर अवश्य रहा होगा। तब हम भी जीना चाहते थे न कि मरना । ठीक वैसे ही आज हमारे पूर्व पुण्य के अपूर्व उदय से हमने देव दुर्लभ नरजन्म पाया है । हमारे सामने जो जीव हैं वे भी जीना चाहते है न कि मरना । यही नहीं, ऐसे समय पर उन्हें बचाना यह हमारा भी एक परम पवित्र फर्ज बन जाता है । यदि मुक्ति पद पाना है, यदि 84 के चक्कर में संसार में ही रुलना है तो फिर आपकी मरजी....।

इलेक्ट्रीसिटी एवं पाश्चात्य संस्कृति के बढते प्रभाव ने आज हमारी जीवन शैली को इतना प्रभावित एवं हिंसान्वित कर दिया जिसकी एक कल्पना करना भी मुश्किल हैं । आज के फेन, फोन, फ्रिज, फर्नीचर, फियेट, फेशन आदि ने हमारी अहिंसामय मोक्षलक्षी संस्कृति का शायद सर्वनाश तो नहीं तो सत्यानाश तो जरूर किया हैं ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं । लेकिन टी.वी. सिनेमा आदि ने तो इस सत्यानाश को ओर भी प्राणवान बना दिया ओर घर के घर जला दिये यह कहना अयुक्तियुक्त नहीं होगा । अत्यन्त

अफसोस इस बात का है कि कई लोग अब इस बात को समझने लगे है फिर भी छोड नहीं पा रहे है लेकिन जो छोड सके वे खूब-खूब धन्यवाद के पात्र हे । एक दिन के लिए भी यदि इलेक्ट्रीसिटी देश या दुनिया मे बद हो जाये तो शायद पूरे देश या दुनिया के करीब-करीब सारे के सारे बूचडखाने बद हो जाये । मदिर उपाश्रय आदि धर्मस्थानो मे भी लाइट कनेक्शन लेकर वास्तव मे आज हम बहुत ही भूल कर रहे है । अब तो वैज्ञानिक भी यह मानने मनवाने लगे है कि इन बूचडखानो मे होने वाली हिसा-क्रूरता आदि से ही भूकप आते हे ओर ससारभर मे तबाही मच जाती है । (पढिये "भूकप की वजह" लेखक-डॉ नेमिचन्द्र जैन)

हमारी मूलभूत बात बर्फ की है एव उसी के अनुसधान मे हम फ्रिज पर विचार करते है। टी वी आदि के साथ यह चीज भी आज घर मे घुसकर हमारी धर्मश्रद्धा सस्कृति आदि के सर्वनाश मे अपना अमूल्य योगदान दे रही है। पहले हम यह विचार करते है कि फ्रिज घर मे रखने से हमे क्या-क्या हानि होती है । फ्रिज घर मे रखने से निम्नलिखित हानिया होती है -

(1) जैन धर्म के अनुसार 22 अभक्ष्य पदार्थ जो कि नहीं खाने चाहिये उनमे बर्फ भी है। उसको घर पर ही उत्पन्न करने वाला यह एक कारखाना है जिससे इस अभक्ष्य पदार्थ को खाने की इच्छा सतत बनी रहती है। यदि किसी को यह त्यागने की इच्छा होगी तो भी उसकी वह इच्छा शायद सफल नहीं हो पायेगी चूकि घर मे ही सुविधा है। इस प्रकार यह जीव हिसा का प्रबल हेतु है।

(2) बर्फ सेवन मे तो हिसा है ही साथ ही इसके लिए घर मे इलेक्ट्रीसिटी चाहिये चूकि उसके विना फ्रिज काम नहीं दे सकता है एव इलेक्ट्रीसिटी भी महाहिसा से उत्पन्न होती है। इस दृष्टि से भी महती हिसा प्रत्यक्ष हे ।

(3) व्रतधारी को एकासना आदि मे जैसे सचित्त चीज नहीं कल्पती है उसी तरह से फिज मे रखी हुई चीज को भी सचित्त का सघट्टा (सस्पर्श) होने से नहीं कल्पती है या फिर 48 मिनट के बाद ले सकते है लेकिन इतनी स्थिरता आज के जीव नहीं रख सकेगे तो उनको पच्चक्खाण मे बडा दोष लगेगा ।

(4) बर्फ भक्षण शरीर के लिए भी नुकसान देह है चूकि कुल्फी आदि खाने से टॉन्सिल आदि की सभावना रहती है इस दृष्टि से भी फ्रिज हानिकारक है ।

(5) वैज्ञानिको के अनुसार फ्रिज मे रखी हुई सब्जियॉ-फ्रूटस आदि भी शरीर के लिए हानिकारक है जो कि टी वी के पर्दे पर दिखलाया गया है ।

(6) फ्रिज म रखी हुई चीज जैसे एकासना आदि के व्रतधारी को काम नहीं लगती है उसी तरह से महाव्रतधारी पू साधु-साध्वी जी म को भी काम नहीं लगती है। अत वह चीज घर पर पधारे हुये पूज्य साधु-साध्वीजी म को बहराकर सुपात्रदान का अमूल्य लाभ लेने से हम वचित रहते हे ।

(7) हमारे पूर्वज कहाँ फिज या बर्फ आदि का सेवन करते थे फिर भी वे हमारे से

कितना अच्छा जीवन जीते थे ? जब कि हम फ्रिज का शौक कर करके उसके और बर्फ के गुलाम बन गये फिर भी शरीर में खोखलापन है ।

(8) धर्मशास्त्र की आज्ञा के अनुसार हमको बासी, द्विदल आदि नहीं खाना चाहिए क्योंकि उसमें जीवोत्पत्ति हो जाती है जब कि फ्रिज हमको महाबासी खिलाने में हमारी सबल सहायता कर रहा है ।

(9) पहले हमारे घर में यदि रसोई की कोई भी चीज बढ जाती थी तो किसी को भी देने की (खिलाने की) भावना रहती थी । इस भूत के (फ्रिज के) घर में आने से आज यह भावना भी हमारी दिनोंदिन चौपट होती जा रही है ।

(10) फ्रिज में रखी हुई चीजें नहीं बिगडती या उनमें जीवोत्पत्ति नहीं होती यह कहना सही नहीं है । अमुक समय के बाद उनमें जीवोत्पत्ति (बैक्टीरिया आदि) होने लगते है । स्वाद में भी फर्क पड जाता है यह कइयों का अनुभव है । किसी को यह महसूस हो और किसी को नहीं यह अलग बात है । लेकिन उसका प्राकृतिक स्वरूप तो खत्म हो ही जाता है ।

(11) जो गरीब है उसको भी दूसरों के देखा देखी इस चीज को घर में फैशन के रूप मे भी लाना पडता है एवं इस तरह उसे आर्थिक संकट में स्वैच्छिक वृद्धि करनी पड़ती है । आज भी जिनके घरों में फ्रिज, टी.वी. आदि नहीं है ऐसे भी लोग हैं । क्या वे शान्ति से अपना जीवन-यापन नहीं करते हैं ?

(12) इस तरह से आप देख सकते हैं कि शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक आदि हर दृष्टि से फ्रिज आदि से हमको नुकसान ही नुकसान है अतः विवेकी आत्माओं को इसका अवश्य त्याग करना चाहिये । इसके बिना हमें शुरुआत में थोड़ी सी असुविधा भी महसूस हो सकती हे लेकिन परिणाम स्वरूप हमको लाभ ही लाभ है । इस बात का ख्याल करते हुए हरगिज इसके चंगुल में नहीं फंसना चाहिए ।

वैसे करीब-करीब हर चीज के कम ज्यादा प्रमाण में फायदे और गैरफायदे दोनों ही देखे जाते हैं इस नियमानुसार शायद कुछ फायदा फ्रिज का भी आपको देखने को मिल सकता है मगर बुद्धिमान मनुष्य को यह सोचना चाहिये कि फायदा और गैरफायदा दोनों में किसका प्रतिशत ज्यादा है । यदि गैरफायदे का प्रतिशत ज्यादा है तो उसके कुछ फायदे को महत्त्व नहीं देते हुये उस चीज का त्याग करना ही श्रेयस्कर है । ऊपर बतलाये गये रूप से बर्फ, फ्रिज आदि के गैर फायदे ही ज्यादा है अतः इन चीजों का त्याग ही सर्वोत्तम है समझदारी है ।

समूहभोज (जिमणवार) में बर्फ सेवन के पीछे अगर हमारा मकसद ठंडे जल से ही है तो जल तो बर्फ के उपयोग के बिना भी मिट्टी की कोठी या घडों में रखकर ठंडा किया जा सकता है । वैसे भी मिट्टी के जो गुण है उनके आगे फ्रिज, कूलर आदि क्या महत्त्व रखते हैं ? इन प्राकृतिक चीजों का खर्च भी नहींवत् होता है जबकि हिंसा से भरपूर इलेक्ट्रिक चीजों के पीछे हजारों-लाखों रुपये का अनावश्यक खर्च होता है । ये बातें भी खास ध्यान में लेने लायक हैं ।

जैसे चोर, डाकू आदि होते हैं वे इक्के-

दुक्के नहीं होते है ज्यादातर उनकी पूरी की पूरी टीम होती है तब वे ज्यादा काम कर सकते हैं । उसी तरह से इन इलेक्ट्रिक साधनो की आज भी घर-घर मे पूरी टीम जमी हुई है अत शुरूआत मे भले ही आप फ्रिज जैसे एकाध साधन का त्याग करे लेकिन वास्तव मे तो आपको आगे चलकर इनकी पूरी फौज से पिड छुड़ाना होगा तभी सही छुटकारा पायेगे एव तभी अपने पूर्वजो की तरह दिव्य जीवन जीने का भव्य आनद उठा सकेगे । इन सब की जड है टी वी और उसका भी मूल है इलेक्ट्रिसिटी यह बात हमको निर्विवाद रूप से स्वीकार करना होगा । एक शायर के इलेक्ट्रिसिटी के बार मे कहे हुए निम्नलिखित शब्द अत्यन्त ही मननीय है

वाहर से तो दिखती है चारो ओर लाइट
अदर से तो लगती हे काजल सी काली नाइट
इस चकरावे मे ज्ञात नहीं होता है कि
कौन तो रोग है और कौन है राईट ॥

हालाकि अव धीरे-धीरे प्राकृतिक जीवन की ओर जनमानस आकर्षित हो रहा है । अगर इनमे से दूसरा कुछ भी न हो सके तो भी कम से कम इतना तो अवश्य करे

1 "लोग क्या कहेगे" इस बात की परवाह किये विना धार्मिक प्रसग पर होने वाले जिमणवार मे तो वर्फ सेवन से हर हालत मे ही वचे ।

2 ऐसे प्रसग पर सिर्फ वर्फ का ही नहीं वासी, विदल, कदमूल, रात्रि भोजन आदि हर दोषपात्र चीज के सेवन से वचे । ☆

परमात्मा की पूजा करने से मन प्रफुलित होता है
दु ख तथा आपत्ति विपत्ति शात होती है
और आत्मा अमर बनती है हृदय कमल
के समान खिल उठता है
लब्धि की लहर लहराती है ।

जिसका पाया पवित्र है उसका सर्वस्व पवित्र है
गृह का पाया माता है नेता का पाया सेक्रेटरी है
जीवन का पाया सयम है धधे का पाया प्रामाणिकता है
भक्ति का पाया समर्पण है सघ का पाया एकता व प्रेम है
समाज का पाया सत है धर्म का पाया सत्य है ।

आध्यात्मिक कुञ्जी—धर्म

महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.सा., अजमेर

इंजिन में सबसे महत्त्व की चीज क्या ? जवाब एक ही मिलेगा कोयला-डीजल या विद्युत।

मोटर में सबसे महत्त्व की वस्तु क्या ? जवाब मिलेगा- पेट्रोल।

साईकिल में सबसे महत्त्व की चीज क्या ? जवाब मिलेगा- हवा।

परन्तु जीवन में सबसे महत्त्व की चीज क्या ? इसका जवाब देते मानव घबरा जायेगा, कारण कि इस चीज से वह भिन्न रहता है और वह है धर्म।

तन्दुलवेयालिय पयन्ना सूत्र में धर्म की महिमा बताते हुये कहा है कि—

धम्मो ताणं, धम्मो सरणं धम्मो गइ पइट्ठा य।
धम्मेण सुचरिएण य, गम्मइ अजरामरं ठाणं॥

अर्थात् : धर्म त्राण है, धर्म शरण है, धर्म ही गति है और धर्म ही आधार है। धर्म की सम्यक् आराधना करने से जीव अजर-अमर स्थान को प्राप्त होता है।

आगे इस धर्म का प्रभाव दर्शाते हुये कहा कि—

पीईकरो वण्णकरो, भासकरो, जसकरो रईकरो य।
अभयकर निव्वुइकरो, पारत्त विइज्जओ धम्मो॥

अर्थात् : यह आर्य धर्म इह-परलोक में प्रीति, कीर्ति, रूप तेजस्विता, मिष्टवाणी, यश, रति, अभय एवं आत्मिक सुख का करने वाला होता है।

धर्म का स्थान जैसे दुनिया में सर्वोपरि है वैसे ही हमारे हृदय में और जीवन में सर्वोपरि रहना चाहिए तभी धर्म हमारे को फलिभूत होता है।

अष्टांग निमित्त को जानने वाला एक निमित्तिज्ञ एक राजा की राजसभा में आया। उसकी प्रसिद्धि भविष्यवाणी सच होने से बहुत थी।

राजा ने पूछा—हे निमितज्ञ ! आप अपने अष्टांग निमित्त से जानकर यह बताओ कि इस वर्ष राज्य में सुकाल होगा या दुष्काल ? अच्छी तरह से देख देखाकर निमितज्ञ ने जवाब दिया कि राजन् ! इस वर्ष भयंकर दुष्काल पडेगा। पानी बिल्कुल नहीं बरसेगा।

राजा ने कहा—यदि तुम्हारी बात असत्य हो तो ?

निमितज्ञ ने कहा—राजन् ! यदि मेरी बात असत्य हो तो आप मेरी जीभ निकाल देना।

राजा ने निमितिज्ञ को एक स्थान में उतारा। उसके खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था कर दी गई। और उसके आस-पास गुप्त पहरा बिठा दिया ताकि वह कहीं भाग कर चला न जाये। पूरी निगरानी रखवा दी।

दुष्काल पडे तो प्रजा को तकलीफ न हो इस कारण से अन्न का सचय करने मे आया, परन्तु भवितव्यता कुछ ओर ही थी।

थोडे दिनो के बाद आकाश मे घनघोर बादल छाये और मूसलाधार वर्षा हुई जिससे पुष्कल बहुत सारा अनाज पक गया। आशातीत अनाज की प्राप्ति हो गई।

सभी के मन मे विचार उठा कि कभी भी इस निमितज्ञ की भविष्यवाणी झूठी नहीं होती। अब इसका क्या हाल होगा ?

राजा कुपित हो गया कारण कि निमितज्ञ के कहने से ही मुँह मागे दाम देकर अनाज के भडार भरे थे, अब उनका खूब नुकसान होगा धान भी सड सकता है। राजा ने निश्चय किया कि अब इस निमितज्ञ की जीभ खेच लेनी चाहिये।

इसी बीच एक अतिशय ज्ञानी मुनि भगवत उस नगरी मे पधारे जो तीन काल के भावो को जानते थे।

राजा ने सविनय हाथ जोडकर ज्ञानी भगवत से प्रश्न किया कि हे भगवत ! मेरे एक प्रश्न का समाधान करो। कुछ दिन पहले एक निमितज्ञ ने इस वर्ष भयकर दुष्काल पडेगा, ऐसी भविष्यवाणी की थी जो असत्य सावित हुई। ऐसी घटना कैसे हुई ?

ज्ञानी मुनिराज ने अपने ज्ञान के द्वारा जाना ओर फिर राजा के मन की उलझन को सुलझाते हुए कहा कि बात सही हे। ऐसे योग थे कि जिससे इस वर्ष जरूर दुष्काल पडता, लेकिन ऐसा हुआ कि इस नगरी मे एक महान् पुण्यात्मा का जन्म हुआ है जिसके प्रभाव से दुष्काल सुकाल मे परिवर्तित हो गया।

यह सुनकर वहा पर जितने भी लोग बैठे हुए थे उन सबको बहुत ही आश्चर्य हुआ। राजा ने आगे पूछा कि भगवत ! कृपा करके यह बताइये कि किस भाग्यशाली के घर पर उस पुण्यात्मा का जन्म हुआ है ?

ज्ञानी भगवन्त ने उस पुण्यात्मा के माता-पिता का नाम बताया और कहा कि ये पूर्व भव मे भिखारी था। किसी समय वह साधु समागम मे आया। साधुजी ने उसे धर्म की आराधना करने का उपदेश किया और समझाया कि धर्म के प्रभाव से सुख-शान्ति और समृद्धि मिलती है, स्वर्ग के सुख मिलते ह, मोक्ष का आनन्द प्रकट होता है। इसलिए तू ऐसी प्रतिज्ञा कर कि तुझे आज से जो कुछ प्राप्त होगा उसका चौथा भाग मे दान, पुण्य और धर्म मे खर्च करूगा।

भिक्षुक ने कहा—गुरु महाराज ! मेरे पास मे कुछ नहीं हे, म तो भिक्षा मागकर उदरपूर्ति करता हूँ। कहा से लाऊगा ?

मुनि भगवत ने उसे समझाया कि तुझे भिक्षा मे एक रोटी मिले तो चोथा भाग दूसरे भूखे व्यक्ति को दे देना, यदि चार मिले तो एक रोटी देना।

भिक्षुक ने प्रतिज्ञा अगीकार कर ली ओर दृढता के साथ उस नियम का पालन किया। नागरिको मे उसकी प्रशसा होने लगी कि ये भिखारी बाबा भला है, दयालु है, अपने लाये हुये भोजन मे से भिक्षा मे से यह दूसरो को देता है। जनता उसे अधिक देने लगी। कुछ लोगो ने उसे

धन दिया। उस भिक्षुक ने अब अपना स्वयं का धंधा शुरू किया। दान धर्म के प्रभाव से और प्रतिज्ञा पालन से वह भिक्षुक सुखी हो गया।

सुख-समृद्धि वैभव बढ़ता है तब नियम करना कितनों के लिए मुश्किल हो जाता है। परन्तु भिक्षुक अडिग रहा।

हे राजन् ! वहाँ का आयुष्य पूरा करके दान, धर्म, पुण्य के प्रभाव से इस नगरी में वह सेठ के यहाँ पुत्र के रूप में जन्मा है ! ऐसे महान पुण्यशाली के प्रभाव से इस नगरी पर जो दुष्काल की काली छाया पड़ने वाली थी वह सुकाल के प्रकाश के रूप में परिवर्तित हो गई।

राजा के पुत्र नहीं होने से उस बालक को राजगद्दी का वारिसदार घोषित किया और उस निमितज्ञ का भी सम्मान करके उसे मुक्त किया।

उस बालक के योग्य उम्र का होने पर उसका राज्याभिषेक किया गया। उसने धर्मपूर्वक राज्य का पालन किया जिससे उसके राज्य में कभी दुष्काल नही हुआ।

कितनी ही भीषण नदी की धार हो,
कितनी ही विशाल चाहे पारावार हो।
भय नहीं उसको कुछ भी संसार में
हाथ में जब एक धर्म की पतवार हो॥

ये सभी महिमा धर्म की है। पुण्य की है। धर्म के प्रभाव से और पुण्य के प्रभाव से इहलोक और परलोक दोनों सुधरते हैं। जीवन सुखमय एवं उन्नत बनता है।

ये धर्म महामंगल स्वरूप होने से उसके द्वारा सभी विघ्नों का नाश होता है।

धर्म सूक्ष्म है पर अगर उस पर सही श्रद्धा हो तो वह महान् फलदायी होता है।

चौरासी लाख जीवयोनि में मात्र मनुष्य ही उसकी आराधना कर सकते हैं। देव अचिन्त्य शक्ति वाले होने पर भी अहिंसा संयम और तप का पालन करने में असमर्थ होते हैं अतः देव भी इस धर्म के आराधक को नमस्कार करते हैं।

अतः धर्म की आराधना करने में बिल्कुल भी आलस्य या प्रमाद नही करना चाहिये। धर्म ही इस जगत में सर्वश्रेष्ठ है।

अन्त में—

धर्म कोई बला नहीं, जीवन जीने की सही कला है
धर्म जीवन का त्याग नहीं, अच्छे जीवन का सिलसिला है।
धर्म को अफीम बताने वालों ने, धर्म को समझा ही नहीं
धर्म और कुछ नहीं वस अपने साथ अपना मुकावला है॥

धर्म जीवन को बदलने की एक मधुरतम कला है
आदमी के अन्दरूनी जागरण का एक सिलसिला है।
इन्सान जब जोडता है सबके साथ अपने को
तब ही आगे बढता ये जिन्दगी का काफिला है॥

बुजुर्गों के प्रति व्यवहार में विनय भाव,
गुरुओं के प्रति बहुमान,
आश्रितों के प्रति प्रेम एवं वात्सल्य,
ऐसे जन का जीवन नंदनवन बन जाता है॥

साधर्मिक-भक्ति-कर्त्तव्य

पू सा शुभोदया श्री जी म सा , जोधपुर

कैसी अपार महिमावत भक्ति की अनोखी रीत बताई है ? साधर्मिक भक्ति की । तराजू के एक पलडे मे तप-जप और धार्मिक क्रियाओ को रखे और दूसरे मे धर्म-भावना-श्रद्धा-भक्ति से अत करण पूर्वक की गई केवल एक ही ''साधर्मिक भक्ति को रखे तो वे दोनो पलडे समान रहेगे । पर्वाधिराज पर्यूषण महापर्व के पाच कर्त्तव्यो मे एव श्रावको के वार्षिक ग्यारह कर्त्तव्यो मे ''साधर्मिक भक्ति'' का अत्यन्त महत्त्व बताया है । ऐसी साधर्मिक भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है-लाछी देवी । गुजरात की राजधानी कर्णावती नगरी के शालपति त्रिभुवन सिह की पत्नी लच्छी छीपण अपने दास-दासियो के साथ जिन-दर्शनार्थ निकली थी । उस समय साबरमती नदी के तट पर स्थित उत्तुग शिखर एव ऐतिहासिक स्थापत्य कला युक्त जिनालय मे जिनदर्शन-चैत्यवदन करके राजस्थान निवासी ''ऊदा'' नाम का कोई एक पुण्यात्मा बाहर बैठा था । जिनालय की सीढ़ियो से उतरते वक्त लाछी ने मैले-धेले वस्त्रो मे बैठे हुए ''ऊदा'' नाम के अज्ञात श्रावक को देखा । परदेश से आये हुए कोई स्वधर्मी है, यह सोचकर लाछी देवी ने उससे अत्यन्त मधुर कठ से भक्ति की भावना पूर्वक पूछा, ''भाई ! इस कर्णावतीनगरी मे आप कौनसे पुण्यात्मा के अतिथि है ?''

लाछी देवी के सुमधुर वचनो मे ''ऊदा'' को आत्मीय स्वजन की मधुर वाणी सुनाई दी । ऊदा ने कहा ''बहन ! मै प्रथम बार ही इस क्षेत्र मे आया हूँ । इस कर्णावती नगरी मे मुझ जेसे परदेशी को कौन पहचाने ? आपने मुझसे वार्तालाप किया अत मे आपको मेरे आत्मीय स्वजनवत् मानकर यही कहूँगा कि मै आपका ही अतिथि हूँ ।''

लाछी देवी ने अत्यन्त हर्षोल्लास से कहा ''आपके जैसे साधर्मिक भाई मेरे घर का अतिथि बने यही तो मै अपना सोभाग्य मानती हूँ । पधारिए, आप मेर साधर्मिक, आप अपने परिवार सहित मेरे आगन को पावन कीजिये ।''

मारवाड निवासी 'ऊदा' मेहता अपनी पत्नी सुहादेवी तथा चाहड और बाहड नाम के दोनो पुत्रो को साथ लेकर लाछी देवी के निवास पर गये । लाछी देवी ने अत्यन्त भक्ति-भाव एव स्नेह पूर्वक सपरिवार आये ऊदा को भोजन कराया उनका सुदर आदर-सम्मान किया । ऊदा ने पूछा ''बहन ! मेरे प्रति इतने अधिक स्नेह भाव का कारण क्या है ?'' लाछी देवी ने स्मित पूर्वक कहा, भाई ! आप मेरे स्वधर्मी है, साधर्मिक की सेवा-भक्ति करना सच्चे श्रावक का कर्त्तव्य है । ऊदा के परिवार को रहने के लिए लाछी देवी ने एक अच्छा मकान दिया । निर्धन ऊदा को तो मानो मकान नहीं महल मिला । राजाशाही प्राप्ति जितना उसको हर्ष हुआ । ऊदा का परिवार ऐसे स्थान को प्राप्त कर खूब आनदित, हर्षित हुआ ।

भूखे को भोजन देना और प्यासे को ठडा मीठा जल पिलाना और मधुर वाणी से आदर-

सत्कार करना यह लाछी देवी का स्वभाव था। दुःखी के दुःख को दूर करके कुछ सुख की अनुभूति कराता वह अपने दुःख को दूर करने जैसा मानती थी। ऊदा वहां व्यवसाय करने का प्रयास करने लगा। कुछ दिनों में ऊदा ने घी का व्यापार प्रारंभ किया। घी भी कैसा ? बरफी के टुकड़े के समान और स्वयं जाकर सबके घर पहुँचाने लगे। कदाचित् कारणवशात् किसी को घी पसंद नही आवे तो सहर्ष वह घी ऊदा वापस ले लेता। वह सबको कहता, ''भाई ! आप पहले घी चखना, अगर पसंद आये तो ही पैसा देना।'' कुछ ही समय में कर्णावती नगरी में ऊदा के घी का प्रचार-प्रसार हो गया और जन-जन के मुख से यही सुनाई देता कि ''घी तो ऊदाशा का'' सामूहिक वात्सल्यों में, धार्मिक व सांसारिक प्रसंगों में, पारिवारिक उपयोग आदि में ''ऊदाशा-उदाशा'' का नाम मशहूर हो गया। ऊदा ने लाच्छी देवी का मकान खरीद लिया और पक्के मकान में परिवर्तित करने का विचार बना लिया। जब ऊदा ने पक्के मकान की नींव खुदवाना प्रारंभ किया तो भूमि में से धन से भरा चरु निकला तो लाछी देवी को बुलाकर नतमस्तक हो करबद्ध कहने लगा, ''बहन ! यह आपका धन है, आप ले जायें, आपके मकान में से निकला है अतः इन पर आपका ही अधिकार है।'' लाछी देवी, ''यह नही होगा। घर आपका है, भूमि आपकी है, आपने किराया देकर खरीदा है इसलिए अब आपका अधिकार है, अतः यह धन भी आपका ही है।''

ऊदा सेठ ने कहा, ''मेरे लिए तो यह धन विना अधिकार का है। मैं यह धन बिल्कुल नहीं ले सकता। यह तो आपको ही लेना पड़ेगा।'' लाछी देवी ने तो इस धन को स्पर्श तक करने से साफ इन्कार कर दिया। अन्त में यह विवादी मामला पंचायत में पहुंचा। पंचायत भी क्या करती ? दोनों में से एक भी व्यक्ति धन ग्रहण करने के लिए तैयार ही नहीं था अतः उसका निवारण कठिन था। अन्त में यह विवाद राज-दरबार में पहुँचा। महाराज कर्णदेव भी विचारमग्न हो गये। महारानी मीनलदेवी ने दोनों को आधा-आधा देने का निर्णय किया, परन्तु लाछी देवी और ऊदाशेठ इतना भी बिना हक का कैसे ले सकते थे ? आखिर में ऊदाशेठ ने कहा-''जो धन राज्य के काम का नहीं हो वह देवता को, भगवान को अर्पण किया जाता है। आखिर निर्णयानुसार उस धन का उपयोग कर्णावती नगरी में जिनालय निर्माण में किया और ''उदयन विहार'' के नाम से वह विख्यात हुआ। ऊदाशेठ कर्णावती नगरी के नगरसेठ बने, तत्पश्चात वे राजा सिद्धराज जयसिंह के मंत्री बने और अन्त में स्थंभनपुर (खभांत) के दण्डनायक के पद पर पहुँचे, किन्तु वह आजीवन अपनी बहन लाछी देवी की साधर्मिक भक्ति की सदैव अंतर से वंदना करते रहे।

धन के प्रति सच्ची दृष्टि लाछी देवी, ऊदाशेठ एवं महाराजा कर्णदेव तीनों में थी। धन का सम्बन्ध सच्ची दृष्टि के साथ है। सच्ची दृष्टि से धन को गौरव प्राप्त होता है। धन के प्रति बुरी दृष्टि मनुष्य को हीन एवं अधम बना देती है। भंडार-तिजोरी में से निकलते धन का उपयोग कहां हो रहा है यह सोचना देखना महत्त्वपूर्ण है और कोई धन अधर्म का मूल बनता है। साधर्मिक भक्ति के प्रभाव से प्राप्त हुए धन का मूल धर्म ही बना।

तीर्थोद्धारक सूरिदेव

सा हर्षप्रभा श्री जी म सा , जयपुर

विशाल महासागर के अगाध अपार जल मे सदा अगणित अपरिमित तरगे (बुद्बुद) उठती रहती है उन सबकी न कोई गिनती होती है न कोई सख्या लेकिन पूर्णिमा को जो समुद्र मे ज्वार आता है वह बडा जोरदार होता है । यह समुद्र के दूर सुदूर तक के बहिर्भाग को भी प्रभावित करता है व भिगो देता है । उसका अपना अनूठा महत्त्व होता है ।

इसी तरह से इस ससार महासागर के अदर भी असख्य व्यक्ति जन्म लेते है उनके जन्म का कोई खास महत्त्व नहीं होता । जन्मना-जीना और मरना इतना ही या फिर-आहार-नीहार-विहार (Eat drink and be marry) इतना ही उनके जीवन का उद्देश्य होता है लेकिन कुछ ऐसे भी महापुरुष जन्म लेते है जो आत्मा का ज्ञान-आत्मा की पहचान प्राप्त कर आत्मसाधना की दिशा मे आगे बढते हुये स्वपर कल्याण का कारण बनकर इस ससार मे से जब विदा लेते है वे अमर बन जाते है

तीर्थोद्धारक प्रौढ प्रतापी बाल ब्रह्मचारी जिन शासन स्तभ स्वनाम धन्य सूरिपुरन्दर श्रीमद्विजय नीति सूरीश्वर जी म सा ऐसे ही एक महापुरुष हो गये जो विश्व कल्याण कर श्री जिन शासन के नील गगन मे सूर्य की तरह प्रकाशमान हुये । आपका सक्षिप्त जीवन इस प्रकार है ।

विक्रम सवत् 1980 पौष शुक्ला 11 के शुभ दिन सौराष्ट्र की धन्य धरा पर मच्छु नदी के किनारे धर्मनगरी वाकानेर मे पिताश्री फूलचदभाई के कुलदीपक के रूप मे आपका जन्म हुआ । रत्नकुक्षि मातेश्वरी का शुभ नाम श्रीमति चौथीबाई था । आपका सासारिक शुभ नाम निहालचद भाई था । निहाल के जन्म से पहले मा को एक शुभ मनोरथ हुआ था कि मे पैदल चलकर गिरनारजी महातीर्थ की यात्रा करू । यह भी भविष्य मे पू गुरुदेवश्री की प्रेरणा से होने वाले श्री गिरनारजी महातीर्थ के जीर्णोद्धार का मानो एक महान सकेत था ।

बालचन्द्र की भाति बडा होता हुआ निहाल खुशियो से सबके मन को भर देता था । किसे मालूम था कि आज का यह एक बालक आगे चलकर सारे जगत का आल्हादक एव विशाल श्रमण सघ का पालक बनेगा ? माता-पिता बाल निहाल के बारे मे कुछ अलग ही सपने देख रहे थे जब कि भवितव्यता को कुछ और ही मजूर था ।

माता-पिता निहालकुमार की शादी की विचारणा वाले थे जबकि निहाल का मन दिन-प्रतिदिन वैराग्यभाव की ओर अग्रसर होता हुआ ससार मे नहीं लगता था । प पू गुरुदेव श्री भावविजयजी गणिवर्य के श्री चरणो मे आपने सयम ग्रहण की अपनी हार्दिक तमन्ना एव प्रार्थना

भी की लेकिन माता-पिता की अनुमति के अभाव में वे इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुए एवं माता-पिता की आज्ञा लेकर आने को कहा। इधर इनके मामाजी वकील थे एवं उस जमाने में इस प्रकार छोटी उम्र में किसी को दीक्षा देने में प्रशासन की ओर से खतरा भी हो सकता था। इत्यादि कारणो से निहालचंद की भावना सफल नहीं हो रही थी।

जैसे नदी में पानी का पूर आता है वह नदी के साथ-साथ तटवर्ती पेड आदि की भी सफाई कर देता है उसी तरह से निहालचंद के हृदय में आया हुआ वैराग्य का पूर भी इतना जबरदस्त था कि जिसके आगे उनके मार्ग की भीतरी-बाह्य सारी रुकावटों को मुँह की हार खाना ही पडे। वास्तव में सच्चा वैराग्य जब जागृत हो जाता है तब वह व्यक्ति राग के घर जैसे संसार में एक क्षण भी कैसे रुक सकता है ? भाई निहालचंद की भी संसार में यही स्थिति हुई। किसी भी हालत में जल्दी से जल्दी संसार त्याग करके संयम ग्रहण करने की उन्होंने अपने दिल में ठान ली थी।

आखिर उन्होंने एक रास्ता ढूंढ निकाला। स्वय धर्म संस्कार सम्पन्न आत्मा होने से काफी विधि के जानकार तो थे ही। एक मित्र के साथ उन्होंने साधुवेष लेकर शाम के समय गांव से बाहर जाकर जंगल में अपना गृहस्थ वेष उतारकर मित्र को दे दिया एवं स्वयं साधुवेष धारण करके स्वयं करेमिभंते आदि उच्चरकर मुनि जीवन स्वीकार कर लिया। इस तरह आपने अपने जीवन का एक अद्‌भुत इतिहास बना लिया।

चातुर्मास के तुरंत पहले ही यह प्रसंग हुआ। उसके बाद गुजरात में ऊँझा के समीप मेरवाडा गांव में आपश्री ने प्रथम चातुर्मास किया। आपकी इस तरह की संयम ग्रहण की घटना से लोगों में भी आप के प्रति काफी आश्चर्य व अहोभाव उमड़ आये। वास्तव में आपने भगवान महावीर देव आदि के स्वयं दीक्षा ग्रहण के इतिहास को पुनर्जीवित किया था।

चातुर्मास सुचारुरूप से सम्पन्न करके गुरुदेव भावविजयजी म.सा. के चरणों में जाकर पुनः विधिवत् दीक्षा स्वीकार की एवं अब आप मुनि श्री नीति विजयजी कहलाये।

नूतन दीक्षित मुनिवर्य श्री अपने परमतारक गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में संयमयात्रा में दिन प्रतिदिन आगे बढते गये एवं ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग-विनय-वैयावच्च आदि गुणों को ज्यादा से ज्यादा आत्मसात् करते गये। आपकी सहज वैराग्यभरी वाणी सुनकर कई पुण्यात्माओं ने चारित्र जीवन स्वीकार किया। आपके हाथों से जगह-जगह दीक्षा, बडी दीक्षा, उपधान, उद्यापन प्रतिष्ठा आदि अनेकों शुभ कार्य सम्पन्न हुए। जहां भी आपका पावन पदार्पण होता था वहां शान्ति, प्रेम, धर्म, आनंद आदि का मानो महा साम्राज्य स्थापित हो जाता था। आपकी योग्यता को देखकर वि.सं. 1961 मगसर सुदि पंचमी के शुभदिन सूरत नगर में आपको गणिपद एवं वि.सं. 1962 मगसर वदि ग्यारस के शुभ दिन पालीताणा सिद्धक्षेत्र में आपको पंन्यास पद से विभूषित किया गया।

ज्यों-ज्यों साधक जीवन की ऊँचाइयों को छूता है त्यों-त्यो आत्मा में पात्रता का विकास स्वयंमेव हो जाता है। पात्रता आने पर पद और

प्रतिष्ठा आदि भी बिना बुलाये दोडे आते है। उनके लिए अलग प्रयत्न नहीं करना पडता। पू गुरुदेव श्री के लिए भी यही नियम लागू होता था। वि स 1976 मगसर सुद पचमी के शुभ दिन जैनपुरी अहमदाबाद मे सकल सघ ने मिलकर जिन शासन का जाना माना हुआ अति विशिष्ट पद आचार्यपद'' पर जब आपको आरूढ किया तब श्री जिनशासन देव की जय श्री नीतिसूरीश्वर जी म सा की जय-जय आदि गगनभेदी नारो से दिग्मडल गूँज उठा।

क्रमश आप विशाल मुनि समुदाय के नेता एव जिनशासन के नायक प पू आ दे श्रीमद्विजय नीतिसूरीश्वर जी म सा के रूप मे प्रसिद्ध हुए।

कई सारे जिन मदिरो के जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से हुए। अनेक तीर्थो के जीर्णोद्धार एव साधर्मिको के जीवनोद्धार इत्यादि आपके जीवन के पमुख कार्य थे। तीर्थोद्धार मे गिरनारजी, चित्तौड आदि मुख्यरूप से थे। एक बार आप अपने शिष्यो सहित गिरनार जी की यात्रा को गये। वहा पहुँचकर यात्रा के दौरान वहा के जीर्ण-शीर्ण बने हुए जिनमदिरो की दुर्दशा को देखकर आपकी आत्मा अत्यन्त द्रवित हो गई। किसी भी तरह से इनका जीर्णोद्धार करवाने का आपने दृढ सकल्प किया।

इसके लिए आपने अवसर पर जैन सघ के अग्रणियो को उपदेश दिया। बातचीत के दौरान इस कार्य मे एक बडी बाधा यह सामने आई कि उस समय वहा पर मुस्लिम शासन था और इस कार्य के लिए उसकी इजाजत लेना जरूरी था जो कि बहुत मुश्किल था। इस तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिए अन्य भी कई बडे-बडे आचार्य भगवतो ने खूब प्रयास किये थे लेकिन वहा के नवाब की आज्ञा नहीं मिलने से यह कार्य नहीं हो सका था।

प पू आ दे श्री ने इसके लिए विशिष्ट जप-ध्यान-आराधना की। वैसे भी उनके जीवन मे जपयोग का अपना विशिष्ट स्थान था। रात को करीब 12-1 बजे तक ये जप मे ही लीन रहते थे एव सुबह भी प्राय तीन-चार बजे से वापस जप साधना मे प्रवृत्त हो जाते थे। अत कहते है कि पूज्य श्री के शिष्यगण भी उन्हे सोये हुए नहीं पाते थे। जपयोग के ही एक प्रसग पर रात को करीब बारह-एक बजे एक बार एक दिव्य ध्वनि हुई कि तुम्हारा काम हो जायेगा, ऐसा एक प्रत्यक्षदर्शी विद्वान जो कि उनके शिष्यो को पढाने के लिए जाते थे, उनका कहना हे। उन्होने यह भी कहा कि यह आवाज अत्यन्त मधुर और अमानवीय थी। जब गिरनारजी के जीर्णोद्धार का प्रसग चल रहा था उन्हीं दिनो की यह बात है।

पूज्यश्री के तप-जप-सयम के पभाव से इस कार्य मे आने वाली बाधाए दूर होने लगी। पहले इस कार्य के लिए जेन सघ के अग्रणी कार्यकर्ता दीवान साहब से मिले एव उन्हे बताया कि इस तीर्थ का जीर्णोद्धार नहीं हुआ तो ये सब मदिर खडहर बन जायेगे। यहा पर प्रतिवर्ष आने वाले हजारो लाखो यात्रिक बद हो जायेगे तो तीर्थ को तो नुकसान होगा ही आमदनी बद हो जाने से राज्य को भी बडा नुकसान होगा। अत आप किसी भी तरह से महाराजा को समझा करके इस पवित्र कार्य के लिए इजाजत दिलाइये। दीवान

साहब ने भी इसके लिए पूरा-पूरा सहयोग देने का वादा किया।

कभी मौका देखकर दीवान साहब ने भी उक्त बात महाराज को समझाई एवं तीर्थ के जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया। तीर्थ के जीर्णोद्धार से राज्य को होने वाले लाभ एवं उसके बिना राज्य को होने वाले नुकसान से उन्हें वाकिफ किया। महाराजा को भी दीवानजी की बात बिल्कुल जच गई एवं जीर्णोद्धार के लिए सहर्ष अनुमति प्रदान की।

जीर्णोद्धार के इस महान कार्य के लिए एक महासमिति का गठन किया गया एवं धूम-धडाके से सारी तैयारियां होने लगी। उस समय के अन्दर भी इस कार्य में काफी खर्च हुआ था। जब कि आज तो महंगाई ने आसमान की ऊँचाईयाँ छू ली हैं। देव गुरु धर्म की असीम कृपा से सकल संघ के सहयोग से एक निश्चित अवधि के अन्दर यह कार्य सम्पन्न हुआ और तीर्थ पर छाई हुई नव्यता व भव्यता को देखकर पू. गुरुदेवश्री का मन मयूर खुशियों से झूम उठा। इस भगीरथ कार्य की याद में गुरुभक्तों के द्वारा पूज्य श्री की गुरुमूर्ति भी वहाँ पर विराजमान की गई।

और भी ऐसे कई शुभ प्रसंग आपके पवित्र कर कमलों से हुये हैं। इस प्रकार स्व पर कल्याण को करते हुए शासन प्रभावना की विजय पताका नीलगगन में लहराते हुए विश्व में वीर वाणी का शंखनाद करते हुए पूज्य प्रवर श्री चित्तौडगढ़ के जिनमंदिरो के जीर्णोद्धार के उपलक्ष्य में वहाँ पर प्रतिष्ठा के लिए जब विहार करके जा रहे थे तब रास्ते में ही उदयपुर के पास एकलिंगजी में अचानक स्वास्थ्य बिगड़ गया और आगे के लिए शिष्यों को योग्य सूचनाएं देकर सभी जीवों के साथ क्षमापना आदि अन्तिम आराधना करते हुए स्वयं वीर-वीर जपते हुए परम समाधिपूर्वक देह त्याग किया।

वायुवेग से यह समाचार चारों ओर फैल गया उदयपुर श्रीसंघ ने आकर पूज्यश्री के अंतिम दर्शन किये एवं आधारपुर तीर्थ के अन्दर पूज्य श्री के देह का अग्नि संस्कार किया गया। विशेष रूचि वाले पूज्य श्री के जीवन चरित्र से सारी बातें विस्तार से जान सकते हैं।

पूज्य श्री के पावन चरणों में अनंतशः वंदनावली।

जब शुद्ध-स्वरूप में लीनता सिद्ध होती है तब मन नहीं रहता, चित्त नहीं रहता, विषमता नहीं रहती। रहती है केवल शांति, स्थिरता और समता। स्व-देह में आत्मा के अमूल्य भंडार के दर्शन होते हैं कर्म सम्पूर्ण क्षय होने पर आत्मा के पूर्णानंदमय, विशुद्ध-स्वरूपमय मोक्ष पद की प्राप्ति होती है। वहीं अविचल पद है, वही सिद्ध स्वरूप है, सहज समाधि का वही साक्षात्कार है।

आर्य सस्कृति विनाशक- टी.वी. चैनल

सा मृदुरसा श्री जी म सा , जयपुर
(सा हर्षप्रभा श्री जी म सा की शिष्या)

जहॉ अनन्त आत्माओ ने परमात्म पद प्राप्त किया, कितने ही सत बने, कितनी ही आत्माओ ने सद्गति प्राप्त की, यह वही भारत देश है ! जहा दया-करुणा-प्रेम-अहिसा जैसे सद्गुणो के सुवास से मानव-जीवन महकता था। भारतीय सस्कृति की यशोगाथा देश-विदेश मे गाई जाती थी । आज उसी भारतीय सस्कृति का विनाश होता जा रहा है।

वर्तमान समय मे अपनी सस्कृति अपने आदर्शो को सरेआम कत्ल करने वाला यदि कोई तत्त्व है तो वह है टी वी चेनल। टी वी चेनलो मे काम को उत्पन्न करने वाले, अश्लील दृश्य दिखाये जाते है। क्रोध को पैदा करने वाली भयानक फिल्मे दिखाई जाती है जिसे देखकर मानव गुस्से मे आकर किसी की हत्या कर देता है। छोटी-छोटी बातो पर क्लेश करता है, अभिमान और अहकार करता है। उसमे भी बल्यू फिल्मो द्वारा इतने गदे-अश्लील चित्र दिखाये जाते है जिसे देखकर छोटे-छोटे बच्चे भी काम-वासना के आवेश मे आकर अपने जीवन मे कुकृत्य कर बैठते है।

कुछ ही महिनो पहले बनी यह एक सत्य घटना है। एक परिवार मे पहले दिन रात्रि मे पति-पत्नि ने जो ब्ल्यू फिल्म देखी दूसरे दिन दोपहर मे बच्चे ने उसी ब्ल्यू फिल्म को देखा। देखकर इतना कामावेश म आ गया कि वह अपनी सगी बहन के साथ ही गलत कुकृत्य कर बठा। उसी पल बाहर से आयी हुई माता ने यह दृश्य देखा ! देखकर वह चिल्ला उठी रात को पति घर आये तब सारी बात की। पिता ने बेटे को इतनी बुरी तरह से पीटा कि उसे 3 महीने तक हॉस्पिटल मे रहना पड़ा। थोडा ठीक होने पर पिता ने पुत्र को इतना कामावेश मे आने का कारण पूछा। तब पुत्र ने उनके ही सामने अगुली से निर्देश करते हुये कहा कि पप्पा ! मम्मी ! आप ही दोनो इसके कारण हो। आपने जो 'ब्ल्यू फिल्म' देखी। मुझे भी देखने का कुतुहल जगा। फिल्म देखने से मेरे मे कामावेश आते ही मै ऐसा कुकृत्य कर बैठा। बिचारे माता-पिता क्या बोले ? शरम के मारे उनका बेहाल था।

घर मे यदि भयानक जहरीला साप रखे तो चलेगा लेकिन टी वी (केबल वगैरह के कनेक्शन वाले) तो हरगिज नहीं। अपनी भारतीय सस्कृति के ऊपर यह जबरदस्त आक्रमण है। विदेशो से रिलीज होने वाली चैनलो ने तो विभत्सता की बातो मे हाहाकार मचा दिया है। नई पीढी के करोडो किशोर-किशोरियो की जिदगी को बरबाद कर दिया है।

चाहे बच्चे हो, चाहे युवान् हो, चाहे बूढे हो, सभी को टी वी का ऐसा जबरदस्त शौक लग गया है जिसे कोई छोडना नहीं चाहता।

सामान्यत यह कहना उचित ही है कि

प्रजा भोग लंपट बनती जा रही है । मोक्ष रस-सदाचार पक्ष खत्म होते जा रहे हैं ।

टी.वी. चैनलों के पीछे अरबों मानव घंटे कार्यविहीन बनते हैं । काव्यादि के सृजन बिना के बनते हैं । शारीरिक श्रम रहित बनते हैं । बौद्धिक चिन्तन से दूर होते हैं । बालकों का अध्ययन, खेल-कूद, क्रीडा रस नीरस होता जा रहा है । स्वतंत्र चिंतन शक्ति का ह्रास हो रहा है ।

इससे देश का अर्थतंत्र बिगड रहा है । समाज का गौरव कम होता जा रहा है । धर्म को तो जीवन में से ही निकाल दिया है । टी.वी पर दिखाये जाने वाले दृश्यों से मस्तिष्क में भारीपन रहता है । ज्ञानतंतुओं में तनाव बढता है । जीवन में उठने वाले हजारों प्रश्नों के जवाब न मिलने पर 'डिप्रेशन' की स्थिति की ओर प्रेक्षक जाने लगते है । टी.वी. में से निकलने वाली किरणों से आंख वगैरह केंसर के कारणभूत बनते हैं ।

विदेशी लोगों ने घर-घर में टी.वी. चेनल के द्वारा बिनायुद्ध के महासंहार की नौबत बजा दी है । भारतीय प्रजा कब यह बात समझेगी । कब टी.वी से छुटकारा मिलेगा । अब तो गांव-गांव और घर-घर में टी.वी. का भूत घुस चुका है । भयानक आंधी की गति के समान इसकी गति को रोकने में कोई समर्थ नहीं है ।

5-7 वर्ष पूर्व एक घटना मुंबई (अंधेरी) में हो चुकी है । अंधेरी में आयी हुई मेमण सोसायटी में 300 फ्लेट है । सभी मुस्लिम मेमन, प्रत्येक के घर टी.वी. ।

जब बार-बार टी.वी. पर स्त्रियों के बीभत्स दृश्य दिखाये जाने लगे तब मुस्लिम परिवार के लोग कांप उठे । अपनी संतानें ये सब दृश्य देखें यह उन्हें कुरान विरुद्ध लगा । एक रात परिवार के सभी बडे सदस्य एकमत हुये कि घर में से टी.वी को सदा के लिये बाहर निकाल दें । दूसरे दिन अपने युवा पुत्र-पुत्री को भी यह बात समझाई । सभी के दिमाग में यह बात जंच गई । दूसरे ही दिन सुबह 10 बजे एक साथ 300 टी.वी. बॉक्स को अपनी-अपनी खिडकी में से बाहर फेंक दिये ।

उस दिन उन सभी ने उस बला को घर में से निकालकर शांति की सांस ली ।

टी.वी. के वीभत्स और भयानक दृश्यों से प्रेरणा लेकर सगे भाई-बहन, देवर-भाभी और पिता-पुत्री के भी संबंध होने लगे है । छोटे-छोटे बच्चे दुश्मन बने बच्चों के बडों के पिस्तौल से खून करने लगे हैं । शाला-कॉलेज के युवक-युवतियॉ 'लव' करने लगे हैं फिर भी लोग उनका त्याग नहीं कर सकते ।

यह सब कहां जाकर रुकेगा ? कुछ नही समझ में आता । इस क्षेत्र में विज्ञान ने प्रवेश करके अपनी देह पर अक्षम्य कलंक लगा दिया है । अणुबम्ब से भी अधिक सहारक (संस्कृति नाशक) टी.वी. चैनलें सावित हुई है ।

कहां भारतीय परम्परागत शील पालन के गौरव का मूल्य । मुस्लिम बादशाह ने मेवाड की महारानी पद्मिनी के दर्शन की इच्छा की, राजपूतों ने इन्कार कर दिया ।

जहाँ शालीभद्र की बत्तीस पत्नियाँ रहती थी वहां जाने के लिये भद्रमाता ने मगधपति श्रेणिक को भी इन्कार कर दिया । नम्र भाव से मगधपति

को बताया मेरी बहुएँ पर-पुरुष के दर्शन नहीं करती।

आर्य देश की नारियॉ शील-पालन के लिये सदा तत्पर रहती थीं। मन मे भी विकार न आ जाए, उसका पूर्ण ध्यान रखती थीं। तभी वे देश को महान कामविजेता स्थूलीभद्राचार्य, सुदर्शन शेठ, रामकृष्ण परमहस, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषो की भेट दे सकी।

अरे भारतवासियो ! टी वी से मनोरजन हो या न हो, मनोभजन अवश्य हो रहा है। परिवार मे से सद्गुणो के धन का विनाश अवश्य होता जा रहा है। दया-प्रेम-अहिसा की बजाय काम-क्रोध-लोभ ईर्ष्या जैसे दुर्गुणो का आविर्भाव होता जा रहा है। सयुक्त परिवार खत्म होते जा रह है। भाई-भाई से जुदा होता जा रहा है। अत मे सस्कृति के भजन द्वारा सम्पूर्ण भारतवर्ष का विनाश होता जा रहा हे।

कुछ सोचो ! कुछ समझो ! आपके परिवार मे परस्पर प्रेम-भाव बना रहे। अशाति के वातावरण का सर्जन न हो। सुसस्कार के धन का विनाश न हो। इसके खातिर ही सिने- टी वी का त्याग करो। अपने जीवन मे सुसस्कारो के सुमन को खिलाकर प्रेम-शातिमय जीवन का यापन करो। यही शुभेच्छा। ☆

परिस्थितिया परिस्थितिया होती है। वे न अनुकूल होती है न प्रतिकूल।
अशात मन किसी परिस्थिति को अनुकूल मानता है और किसी को प्रतिकूल।
शात मन न किसी को अनुकूल मानता है और न किसी को प्रतिकूल।
परिस्थितियो से प्रभावित न होना जीवन की पूर्णता है।

☆

अध्यात्म वस्तु नही, विचार नहीं एक वैयक्तिक अनुभूति है।
उसका आदान-प्रदान नही होता है।
जिसका आदान-प्रदान होता है वह अध्यात्म नही,
वस्तु या विचार है।

☆☆

धनवान, रूपवान और बुद्धिमान होना बडी बात नही।
बडी बात है गुणवान होना।
सुदरता की कमी को सद्गुण पूरा कर देते है।

☆☆☆

अँखिया तुम दर्शन की प्यासी...

सा. त्रैलोक्यरसाश्री जी म., जयपुर
(सा हर्षप्रभा श्री जी म सा की शिष्या)

जिनकी आँखों में न जाने कितनी करुणा-कितना प्रेम प्यार भरा है... बस ! एक बार जो उन्हें अपने नयनो से निहार लेता है वह उनके दर्शन को तरस उठता है, तडफ उठता है। आश्चर्य तो यह है कि दर्शन के पश्चात् भी आंखें प्यासी की प्यासी ही रह जाती है जैसे प्रतिपल उनके सामने बैठकर अपलक- अभिमेष नयनो से बस उन्हें निहारा करूँ.....।

पागल मन गा उठता है......
प्यासे है नैन....प्यासी है रैन....।
तुम दर्शन बिन....कहाँ मुझे चैन.....।।

अरे ! देव-मानव सभी के नैत्र जहाँ स्थिर हो जाते हैं तीन भुवन की तमाम तुलनाएं जहाँ फीकी लगती है, ऐसे सुंदर मुखकमल के सामने देवांगनाओं का सौंदर्य भी क्या ?

महामोह के गहन तिमिर को चीरने वाला जिनका वदनकमल चांद जैसा खूबसूरत एवं मोहक है ऐसा चांद। जिसे बदली की ओट या राहु का आवरण भी ढांक ना सके।

जिनके देह की कांति झिलमिल ज्योति सच्चे मणि के तेज किरणों जैसी निखरती हैं। जिनका यह निर्मल पवित्र रूप ऐसा लुभावना प्रतीत होता है मानो घनघोर घटाओं को चीरकर सूरज की सुनहली किरणों का समूह फैल रहा हो।

जिनके नाम स्मरण में ही इतनी शीतलता कि चंदन की शीतलता भी फीकी लगे क्योंकि चंदन को तो घिसने से शीतलता प्राप्त होती है जबकि तेरे नाम स्मरण से, संसार-दाह से संतप्त आत्माओं को शीतलता प्राप्त हो जाती है।

जयपुर से 30 किलोमीटर दूर शिवदासपुरा के पास बरखेडा एक छोटा-सा गांव जहां चारों ओर हरियाली छाई हुई है। जिनालय के पास ही कल-कल बहता हुआ सुरम्य सरोवर का नीर, मानो मधुर संगीत सुना रहा हो। नृत्य करते हुए मोर मानो परमात्मा के दर्शन कर अपने आनन्द को नृत्य द्वारा व्यक्त कर रहे हों। ऐसे नैसर्गिक सौंदर्य से सुशोभित बरखेडा तीर्थ....।

जहां सोलह कलाओं से विकसित पूनम के चांद जैसी 700-800 वर्ष प्राचीन श्वेत-शुभ्र नयनरम्य ऋषभदेव परमात्मा की भव्य प्रतिमा मानो अतिशय महिमाशाली सूर्य के समान समूचे विश्व को प्रकाशित कर रही हो।

जिनके दर्शन मात्र से सारे विघ्न दूर हो जाते है, सर्ववांछित प्राप्त हो जाते हैं ऐसे परम पावनकारी परमात्मा की अद्‌भुत अद्वितीय ऐतिहासिक महिमा ''अन्यत्र स्थान पर भूगर्भ से

निकलने के पश्चात् जब वैलगाडी मे रखकर प्रतिमाजी को ले जा रहे थे तब इसी स्थान पर आकर बैलगाडी रुक गई एव लाख कोशिशो के बावजूद भी वह टस से मस न हुई मानो भगवान ने स्वय ही अपने लिये यह स्थान चुना हो।

जगद्गुरु जेनाचार्य अकबर प्रतिबोधक आचार्य विजय हीरसूरीश्वरजी म सा स 1640 मे सम्राट अकबर के निमत्रण पर इस क्षेत्र मे विचरण करते हुये फतेहपुर सीकरी पधारे थे। उसी समय इस प्राचीन बरखेडा मे स्थित श्री ऋषभदेव स्वामी के श्वेताम्बर जिनालय का निर्माण होना भी बताया जाता है।

जानकर हमारा मन-मयूर दादा के दर्शन पाने को प्यासा बन गया। दिल मे एक ही लगन एक ही चाह बस। बरखेडा दादा से कब मिलन होगा। मधुर मिलन की वह स्वर्णिम घडी कब आयेगी ? जहा चाह वहा राह।

मजिल तो दूर नहीं जब चाह ही राह बन जाये इसीलिये दादा के चरणो मे जाये हम पावन बनने। कष्ट मिटाने शिवसुख पाने।

जीवन मे सुख और दुख, धूप और छाँव की तरह आख-मिचौनी का खेल खेलते है। सुख और दुख एक ही सिक्के के दो पहलू है। कभी सुख कभी दुख चक्रवत घूमते रहते है जो कि भाग्य पर आधारित है और भाग्य आधारित है हमारे शुभ-अशुभ कर्म पर।

पूर्व जन्म के अशुभ कर्म के उदय से अशाता का उदय तो होता है, दुख तो जीवन मे आते है मगर ऐसे दुख के महासागर म भी चेहरे पर आनन्द की रेखाए, चित्त की प्रसन्नता हृदय प्रभु-ध्यान मे मग्न हो जाये आत्मानन्द की मस्ती मे झूमे किसी भाग्यवान को ही प्राप्त होते है।

सयम जीवन के प्रवेश के साथ ही अशाता वेदनीय का प्रबलोदय और कर्माग्नि मे तपते-तपते आखिरकार नौ साल के पश्चात् शत्रुजय तीर्थाधिपति श्री आदीश्वर भ की परम शीतल छाया मे कर्माग्नि से सतप्त आत्मा को शीतल पवन मिला, अशाता के बदले शाता वेदनीय का उदय हुआ। परमात्मा की परमार्थ भाव से की गई भक्ति का प्रत्यक्ष फल प्राप्त हुआ। हृदय मे शुभ भावो का सचार हुआ। जिस लक्ष्य से सयम ग्रहण किया था ज्ञान-ध्यान आराधनामय जीवन जीकर तप-जप के साथ समता रस का पान करते हुये शीघ्र मोक्षगामिनी बनू। अब उस लक्ष्य को पूर्ण कर पाऊँगी। महेच्छा को साकार रूप दे पाऊगी।

इस शुभ भावना से हृदय कमल खिल गया। होठो पर स्मित छा गया मगर शायद भाग्य को यह स्मित यह आनद मजूर नहीं था। चद महिनो मे ही कर्म राजा ने पुन आक्रमण कर दिया। किडनी की समस्या हो गयी। अहमदाबाद, बम्बई, अमेरिका आदि के डॉ के सलाहानुसार सारे उपचार किये आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक उपचार भी करवाये गये। मगर तकलीफ दिन दुगुनी रात चौगुनी गति से बढती जा रही थी। 6 30 मि ग्राम से बढकर 14 00 ग्राम प्रोटीन कम हो रहा था गोचरी मे भी केवल अत्यल्प मात्रा मे हल्का सा भोजन खीचडी आदि। पॉजीशन भी ऐसी कि दो कदम भी चले तो जोरो से श्वास हो जाये। डॉ ने 15 दिन के भीतर ऑपरेशन करवाने को कह दिया। पदल चलने के लिये सख्त मना कर दिया।

चलने पर किडनी फेल भी हो सकती है, की आगाही कर दी। ऑपरेशन के पश्चात् भी ठीक होगा ही कोई तय नहीं। सब चिंता के महासागर में डूब गये। क्या करें ?

ऐसे समय में मैंने (साध्वी त्रैलोक्यरसा श्री) अपना दृढ़ निर्णय दे दिया न मुझे ऑपरेशन करवाना है न ही मैं व्हील चेयर आदि किसी भी प्रकार के साधन का उपयोग करुंगी। भगवान ने जब मुझे संयम जीवन दिया है तो संयम जीवन जीने की शक्ति भी वो ही देगा। जब विश्व के सारे डा. फेल हो जाते हैं तब भी तारा नक्षत्रों के बीच सुशोभित चन्द्र समान सुप्रीम डा. तारक तीर्थंकर परमात्मा शेष रह जाते हैं जिनके नाम स्मरण से असाध्य रोग भी साध्य बन जाते हैं।

अतः साधना हेतु जयपुर निकटवर्ती बरखेडा तीर्थाधिपति श्री आदीनाथ प्रभु की शीतल छाया में चातुर्मास करने की प्रबल भावना हुई। मगर उस वक्त संजोग अनुकूल नही थे। ज्येष्ठ आषाढ महिने की भीषण गर्मी सूर्यास्त के पश्चात् ही जहां (किडनी समस्या के कारण) प्यास लग जाये। ऐसे समय में पूरी रात पानी बिना निकालना एवं प्रातः विहार करना बहुत ही मुश्किल कार्य था। मगर दिल में श्रद्धा आस्था का दीप जल रहा था। गुरुदेवश्री के परम आशीर्वाद एवं बरखेडा दादा की परम कृपा से अवश्य अपनी मंजिल तक पहुंच पायेंगे।

13 मई, 98 को उम्मेदाबाद (जालोर) में गुरुदेवश्री की शुभ निश्रा में हो रही दीक्षा का कार्यक्रम पूर्ण करवाकर 14 मई की शाम को गुरुदेवश्री के शुभाशीर्वाद के साथ बरखेडा के लिए प्रस्थान कर दिया।

'दादा' से मिलने की हमारी दिली तमन्ना को शायद दादा ने भी जान लिया। जैसे ही बरखेडा के लिए मंगल प्रयाण किया एक बहुत बडा चमत्कार हुआ। जहां दो कदम भी मुश्किल से चल पाते थे वहां 11-12 कि मी का विहार शांति से हो गया। पाली आते-आते लगातार विहार के कारण कमजोरी अत्यधिक महसूस हो रही थी। सोचा बडी सीटी है अतः डॉ. को बता दें। जैसे ही डा को बताया, टेस्टींग करवाये। तब पता चला केवल 5 ग्राम ही खून है। पाली संघ के ट्रस्टी आदि सभी ने मिलकर आगे विहार करने के लिए मना कर दिया एवं कह दिया कि बरखेड़ा जयपुर जाना ही चाहते हो तो एम्बूलेंस में जा सकते हो पैदल विहार करके नहीं। तुरन्त संघ वालों ने हॉस्पिटल में दाखल कर दिया। खून के दो बोतल चढवाये। स्वास्थ्य की गिरती हुई हालत को देखकर पाली संघ वालों ने पाली में ही चातुर्मास करवाने का निर्णय कर लिया एवं उम्मेदाबाद (जालौर) गुरुदेव श्री के पास से पाली में ही चातुर्मास करवाने की आज्ञा भी लेकर आ गये। जैसे ही हमें इन सब बातों का पता चला ऐसे लगा मानों मुसीबतों का पहाड हमारे सिर पर गिर गया हो। मन ही मन भगवान से प्रार्थना की हे भगवन ! अब इस मुसीबत को तो तूं ही दूर कर सकता है।

सच्चे दिल से की गई प्रार्थना कभी खाली नहीं जाती। दूसरे दिन श्री संघ के सामने हमने बरखेडा तीर्थ में साधना हेतु चातुर्मास करने की प्रबल भावना बतायी। दादा से मिलने की हमारी दिली तमन्ना एवं दृढ निर्णय को जानकर उन्होंने

भी हमे विहार करने की प्रेम से स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन हमने बरखेडा के लिए पुन प्रस्थान कर दिया।

जयपुर आकर हमने सारे टेस्टींग करवाये। आश्चर्य की बात है जहॉ 14 ग्राम प्रोटीन कम हो रहा था वहा अब केवल 0 7 ग्राम प्रोटीन कम होने की रिपोर्ट आयी। डेढ साल तक डॉ उपचार करवाने पर भी जो समस्या हल नहीं हो रही थी वह समस्या बरखेडा दादा के नाम स्मरण से ही हल होने लग गई। जिनके नाम स्मरण मे इतनी शक्ति है उनके दर्शन पूजन मे कितनी शक्ति होगी दुख-दुर्भाग्य को दूर करने की।

जयपुर आने के पश्चात् तो दादा से मिलने की उत्कठा चाह और अधिक तीव्र हो गई। श्री जेन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर ने भी साधना हेतु बरखडा तीर्थ मे चातुर्मास करने की हमारी भावना को सहर्ष स्वीकार कर लिया। आखिर 3 जुलाई, 98, अषाढ शुक्ला 9 शुक्रवार के शुभ दिन शुभ-मुहूर्त मे तमन्नाओ की तस्वीर पर प्रेम-भक्ति के पुष्प चढाने का सुनहरा अवसर धन्य घडी, धन्य पल आ गया।

जयपुर श्रीसघ के साथ बहुत ही उत्साहपूर्वक, बहनो के मधुर मागलिक गीतो की तरगो के साथ बरखेडा दादा से 'प्रथम मिलन' हुआ। दादा के मिलते ही दिल की कली खिल गई। चित्त के सितार पर परमात्म मिलन परमात्म भक्ति के सुर बहने लगे।

दिल तेरे दर्शन का प्यासा बन गया।
तुम्हे मिलकर तुम्ही मे समा गया॥

जहा दो घड़ी, दो घटे या दो दिन भी प्रभु का शुभ सान्निध्य महामुश्किल से प्राप्त होता है वहा वर्षावास के चार-चार महिने तक प्रभु का शुभ सान्निध्य शुभ समागम प्राप्त हुआ। परमात्मा के लोह-चुबकीय आकर्षण से घटो तक उनके सामने ध्यान मग्न होकर बैठने की क्षमता प्राप्त हुई। तन-मन साधना मे स्थिर होने लगे। परमात्मा की परम कृपा से अनादि काल से आत्मा पर लगे हुये गहन कर्म रूप बादलो का समूह साधना रूप सूर्य के प्रचड ताप से बिखरने लगा। मलिन आत्मा धीरे-धीरे निर्मल बनने लगी। परमात्म-भक्ति की अनुपम सोरभ से दिल महकने लगा। इसी बीच श्री जेन श्वे तपागच्छ सघ, जयपुर की ओर से पर्युपण महापर्व के पश्चात् परमात्म की विशिष्ट भक्ति रूप परमात्मा की रथयात्रा (वरघोडा), श्री ऋषिमडल महापूजन एव स्वामिवात्सल्य का आयोजन रखा। जिसमे करीब 450-500 भक्तजन ने बहुत ही उत्साह-आनद पूर्वक भाग लिया। सा क्षायिकरसाश्री को सिद्धितप करने की प्रबल भावना हुई। भावना के अनुरूप सिद्धितप शुरू कर लिया लेकिन् तीसरी पारी (अट्ठम) मे उसको 105 डिग्री बुखार आ गया। ऐसा महसूस हो रहा था सिद्धितप की तपश्चर्या पूर्ण होगी या नहीं। लेकिन परमात्मा की परम कृपा एव उनके मन की दृढता से सिद्धितप निर्विघ्न पूर्ण हो गया। तप के अनुमोदनार्थ श्री नमस्कार महामत्र पूजन एव साधर्मिक वात्सल्य का लाभ श्रीमान् मोहनलाल जी सरदारमलजी मुबई वाले (साध्वीजी के सासारिक परिवार वाले), श्रीमान् अजयकुमार जी रैदानी जयपुर वाले, श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर वालो ने बहुत ही आनद-उत्साहपूर्वक लिया। इसके सिवाय भी कई छोटे-बडे कार्यक्रम

प्रभु भक्ति के हुये। जवाहर नगर-जयपुर चाकसू, उज्जैन, राजस्थान आदि स्थानों से भी संघ लेकर आये हुये भक्तगण प्रभु भक्ति में भाव विभोर हो जाते थे। परमात्मा के दर्शन-पूजन के द्वारा अपनी आत्मा को पावन बनाते थे।

परमात्मा के पावन चरणों में रहकर चार-चार माह वर्षावास दौरान की गई साधना के दिव्य प्रभाव से दिव्य संकेत मिला। इसी प्रकार आगे भी साधना में तत्पर रहना। 20 अप्रेल, 1999 वैशाख शुक्ला पंचमी के शुभ दिन गोचरी वापरनी चालू हो जायेगी।

बरखेड़ा से 12 किलोमीटर दूर चाकसू गांव बसा हुआ है। वहां के श्री श्वेताम्बर संघ के अग्रणी श्रीमान शीतलप्रसाद जी ओसवाल, श्रीमान भागचन्द जी मिलापजी ओसवाल, श्रीमान विनोद जी ओसवाल आदि श्रीसंघ चाकसू ने चाकसू में रहकर साधना करने की भावपूर्वक विनती की। उनकी अत्याग्रह भरी विनती को स्वीकार कर पांच महीने चाकसू में रहकर साधना की।

आखिर बरखेडा दादा के दिये गये संकेतानुसार पिछले ढाई साल से रोटी का एक ग्रास भी नहीं चलता था। अंतराय कर्म टूटे वैशाख सुद पंचमी 20 अप्रेल, 99 मंगलवार के शुभ दिन-शुभ घडी में गोचरी वापरनी चालू हो गई। 9-9 महीने तक की गई परमात्म भक्ति का प्रत्यक्ष फल प्राप्त हुआ। श्री ज्ञानविमलजी म. ने भक्ति में भाव-विभोर होकर गाया है—**बाह्य- अभ्यंतर इति उपद्रव अरियण दूर निवारे जिणंदा ! वे दिन क्युं न संभारे !**

परमात्मा की परमश्रद्धा से की गई भक्ति से बाह्य आधि-व्याधि-उपाधि एवं अभ्यंतर राग-द्वेष-क्रोध-मान-माया-लोभ आदि उपद्रव दूर हो जाते हैं।

आत्मा परमात्म मिलन में मस्त बनकर स्वयं परमात्मा बन जाती है।

ऐसे महाचमत्कारी परम पावन बरखेडा तीर्थाधिपति श्री आदीश्वर परमात्मा की शीतल छाया में चातुर्मास करवाने का महान लाभ श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर वालों ने लिया। श्रीसंघ के अध्यक्ष श्रीमान् हीराभाई चौधरी, संघमंत्री मोतीलाल जी भडकतिया, संयुक्त संघमंत्री श्री राकेश जी मोहनोत, संयोजक- बरखेडा मंदिर श्री उमरावमल जी पालेचा आदि सभी ट्रस्टीगण एवं सकल श्रीसंघ हमारी साधना निर्विघ्न चलती रहे, किसी भी प्रकार का विघ्न न आए अतः समय-समय पर बरखेडा पधारकर हमारी कुशलता के समाचार लेते रहते थे। जिनशासन के प्रति श्रीसंघ की प्रीति-भक्ति सचमुच अनुमोदनीय है।

परमात्मा की परम कृपा, गुरुदेव के शुभ आशीर्वाद एवं श्रीसंघ के स्नेह-वात्सल्य रूप त्रिवेणी संगम द्वारा परमात्म-साधन रूप परमौषधि से दोनों असाध्य तकलीफें (किडनी समस्या एवं गोचरी न वापर सकना) ठीक हो गई।

सचमुच ! परमात्म भक्ति में ही सर्वविघ्नों को उपशांत करने की प्रबल शक्ति है। आवश्यकता है, हमें परमात्मा के प्रति श्रद्धा-आस्था के दीप को जलाने की।

सभी आत्माएं अपने दिल में परमात्म श्रद्धा का दीप जलाकर अपनी आत्मा का कल्याण करें। इसी शुभेच्छा सह........।

सद्‌गुण की सुगंध—कृतज्ञता

सा प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा , अजमेर
(महत्तरा सा सुमगला श्रीजी म की शिष्या)

बाग महक जाता है एक ही फूल से
हाथी सज जाता है एक ही झूल से ।
पूजा के लिए हजारो उसूल नही
मानव पूज जाता है एक ही उसूल से ॥

यदि अपने जीवन मे जीवन जीने की सुगन्ध प्रसारित करनी हो, फैलानी हो तो धर्म के सामान्य नियमो का पालन दृढता से करना चाहिये। मानवता के गुणो को विकसित करना चाहिये ।

मार्गानुसारी यानि कि मानवता । सर्व प्रथम मानवता को अपनाना । मानवता के सभी गुणो की नींव है कृतज्ञता । किये हुए उपकार को जो जानता है वह कृतज्ञ गिना जाता है । कृतज्ञ मानव कभी भी अपने पर किये गये उपकारो को भूलता नहीं है । उपकारी के उपकार को कभी छुपाना नहीं चाहिये न ही भूलना चाहिये । सज्जन मनुष्य उपकारी के उपकार को कभी भी भूलते नहीं और स्वय की शक्ति के अनुसार सामने वाले व्यक्ति का कैसे किस तरह से उपकार करू उसका चिन्तन करते रहते है और यथाशक्य प्रयत्न करते है । कहा भी है कि—

दो पुरिस धरउ-धरा अहवा दोहिपि धारिया धरणी।
उवयारे अस्समई उवयरिअ जो न कुसइ ॥

अर्थात् परोपकार मे जिसकी बुद्धि है तथा जो कृतज्ञ है यानि किये हुये उपकार को जो भूलते नहीं है ऐसे दो प्रकार के मनुष्य से ही पृथ्वी टिकी हुई है ।

कृतज्ञता और परोपकार वृत्ति वाले प्राणी ही सर्वश्रेष्ठ है । यदि हमे हमारे जीवन को आगे बढाना ह तो कृतज्ञता तथा परोपकार के गुणो को विकसित करना पडेगा । मन मे यही चिन्तन करना कि मेरे ऊपर उपकार करने वाले के प्रति यदि मै सद्‌भाव न रख सकू तो अपकार करने वाले पर उपकार का बल मेरे मे कैसे प्रगट होगा ? यदि मे मेरे पर किसी के द्वारा किये हुए उपकार के गुण को नहीं जानता, नहीं स्वीकारता, बदला चुकाने की भावना नहीं रखता तो मेरे जैसा नीच, अधम और कोई नहीं होगा ।

शेखसादी ने एक जगह लिखा है कि मने मिट्टी के ढेले से पूछा कि अरी मिट्टी ! तू तो मिट्टी है तो फिर तेरे मे इतनी ज्यादा सुगन्ध कहाँ से आयी ?

मिट्टी के ढेले ने प्रत्युत्तर देते हुये कहा—ये सुगन्ध मेरी अपनी नहीं, मुझे तो कितनी ही बार गुलाब के क्यारे में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह सुगन्ध वहां की है।

दूसरों के द्वारा किया गया किंचित मात्र उपकार को भी जानना उसको स्वीकार करना, वाचा द्वारा उसकी प्रशंसा करना और उस उपकार को चुकाने का हर तरह से प्रयत्न करना इसका नाम ही कृतज्ञता है।

अंधेरी रात में चमकता सितारा बन
डूबते हुओं के लिए तूं किनारा बन।
गर इंसा की शक्ल में तूं असली इंसान है
गिरते हुओं के लिए तू सहारा बन॥

बहुत वर्ष पहले की एक रोम देश की घटना है।

किसी एक जंगल में एक देश का तत्त्व चिंतक जा रहा था। दूर से उसने सिंह की करुण चीत्कार सुनी। थोडे समय के बाद फिर दुःख भरी आवाज उस सिंह की सुनाई दी।

तत्त्वचिंतक को लगा कि सिंह को कुछ वेदना हो रही है। उसने दूर से देखा कि सिंह के पंजे में एक तीक्ष्ण कांटा लगा हुआ है। सिंह बार-बार अपने पंजे को पछाडता है उसे भयंकर कांटे की वेदना होती है जैसे-जैसे वेदना होती है वैसे-वैसे वह और ज्यादा चीखता है। कांटा निकलने के वदले पंजे में और गहराई में जा रहा था।

इस तत्त्वचिंतक को दया आई। उसने अपने हृदय में परमात्मा का स्मरण किया। परमात्म स्मरण करता हुआ वह धीरे-धीरे सिंह के पास आया। सिंह की आँखों में आँसू थे। उस सिंह ने अपना पंजा उस महान चिंतक के सामने बढा दिया। तत्त्व चिंतक ने सिंह के पंजे को धीरे से अपने हाथ में लिया और जोर से खींचकर कांटे को निकाल फेंका।

सिंह जैसा सिंह जंगल का राजा होते हुये भी उस तत्त्वचिंतक के सामने उपकार की दृष्टि से देखकर जंगल में चला गया। सिंह भी समझदार प्राणी होता है।

इस बात को हुए बहुत समय गुजर गया। उस जमाने में रोमन सैनिक गुलामों को पकडते और पकडे हुए गुलामों को, कैदियों को भूखे सिंह के सामने छोड देते। सिंह उन निराधारों को चीर-फाडकर खा जाते, वह दृश्य देखकर रोमन लोगों को खुशी होती। ऐसी क्रूर भावों से रोमन प्रजा का विनाश होने लगा और किसी समय का महान रोमन साम्राज्य पतन की खाई में गिर गया।

एक बार वो तत्त्वचिंतक भी रोमन सैनिकों के हाथों पकडा गया। इस टोली के सामने भी एक भूखे शेर को छोडा गया। टोले में सभी लोग चीख रहे थे लेकिन वह तत्त्व चिंतक निर्भयता से मृत्यु की राह देख रहा था।

भूखा सिंह टोली पर कूद पडा लेकिन एक आश्चर्यजनक घटना घटित हुई उसी समय वह सिंह उस तत्त्वचिंतक के पास आकर धीरे से उसके मुख मंडल को देखता है और मुख को देखकर वह उसके हाथ को प्रेम से चाटने लग जाता है।

ये वही सिंह था जिसके पंजे में से तत्त्वचिंतक ने कांटे को बाहर निकाला था।

रोमनो ने अपने जीवन मे ऐसा दृश्य प्रथम बार देखा था। उस दिन सभी कैदियो को जीवन दान देने मे आया।

सिह जैसे पशु मे भी जब कृतज्ञता का गुण है तो फिर मनुष्य यदि कृतज्ञता छोड दे तो वह क्या कहलायेगा ?

यदि दूसरो के उपकार को हम स्वीकारते नहीं है तो आत्मा के परिणाम मे भावो की कोमलता नहीं रहती, निष्ठुरता आ जाती है।

जो दूसरो के उपकार को स्वीकारता नहीं वह कृतघ्न कहलाता है। शास्त्रा मे कहा है कि सभी पापो का प्रायश्चित है परन्तु कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित नहीं है। कृतघ्नता रूपी पाप धोने के लिये अपने मे कृतज्ञता जगानी पडेगी। कृतघ्नता ससार मे भ्रमण कराती है तो कृतज्ञता मोक्ष के मार्ग की ओर ले जाती है।

यदि कृतज्ञता अपने भाव मे होगी तो आभार के शब्दो मे अपन कृतज्ञता को स्वीकार करेगे और कार्य के द्वारा उपकार करके बतायेगे तो सत्कार्य के लिये और सद्विचारो के लिऐ दूसरो को प्रेरणा मिलेगी। परन्तु यदि अपन कृतघ्न बनेगे दूसरो के किये उपकारो को स्वीकार नहीं करेगे तो बहुत से सद्भावो पर आघात कर लेगे और कितने ही सत्कार्य होते अटका देगे।

अंग्रेजी भाषा मे दो शब्दो का प्रयोग ज्यादा होता है। Very Sorry ''माफ करना'' यह क्षमापना का सूचक है। और Thank you ''आपका आभार''। ये कृतज्ञता का सूचक है। सच्चे भाव से बाले हुए ये दोनो वाक्य जीवन मे सुगध फैलाते है।

सभी शास्त्रो का निचोड़ कृतज्ञता गुण है। व्यवहार के सबधो मे स्थूल उपकार का महत्त्व हैं उससे अधिक आध्यात्मिक सूक्ष्म उपकार का महत्त्व ज्यादा है। और इस कारण ही शास्त्र का, धर्म का, सद्गुरुओ का तथा परमात्मा के उपकारो का भावपूर्वक बहुमान करने का होता है।

प्रत्येक सद् विचार के लिये अपने परमात्मा का, जिन्होने सन्मार्ग दिखलाया उनका उपकार मानने का है, जिस सद्गुरु ने शास्त्ररूप बनाया उनका उपकार मानना है, और जिस सत्पुरुष ने सयम द्वारा उसके जीवन मे सयम प्रगट करने का प्रयत्न किया है वे सभी अपने परम उपकारी है।

एक सम्यक् अच्छे विचार जिसके पास से अहम ने प्रथम बार सुना, और जिसके निमित्त से भी सुना उनका उपकार भी कम नहीं है हमारे लिये।

यदि हमने कृतज्ञता गुण के महत्त्व को नहीं समझा तो सम्यग् विचार अपने आचार मे नहीं आने वाले। इसीलिये ज्ञानी भी कहते है कि हे करुणा निधान! आपने मुझे इतना सारा दिया है तो कृपा करके एक चीज और दे दीजिये ''कृतज्ञता भरा हृदय''।

जिस मानव मे कृतज्ञता नहीं वह मानव कैसे किस प्रकार से कहला सकता है ? कृतज्ञता और परोपकार के बिना कोई प्रकार की साधना सजीव नहीं बनती, सफल नहीं बनती।

अत हमारे जीवन उपवन मे कृतज्ञता, परोपकारता के सद्गुण सुमन खिलाकर अपने जीवन उपवन को सुगन्धित और सुवासित बनाने का प्रयत्न करना होगा। ☆

सुख का श्रोत—श्रद्धा

सा. वैराग्यपूर्णा श्री जी म., अजमेर
(महत्तरा साध्वी सुमगला श्री जी म. की शिष्या)

श्रद्धा और विश्वास जीवन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । दुनिया के सभी व्यवहारों में विश्वास के बिना काम नहीं चलता है । विश्वास से ही घर चलता है, विश्वास से ही व्यापार का काम चलता है और विश्वास से ही व्यवहार चलता है ।

रोगी को डॉक्टर पर विश्वास रखना पडता है । यदि श्रद्धा हो तो रोग मिटने की संभावना ज्यादा होती है ।

मुवक्किल को वकील पर विश्वास रखना पडता है इसी के आधार पर सफलता के अवसर ज्यादा रहते हैं ।

विद्यार्थी शिक्षक पर विश्वास रखे तो आगे वढ सकते हैं । व्यापारी लाखों-करोडों की रकम विश्वास के साथ मुनिम को सौंपते हैं । यदि अपनी माता या पत्नि पर विश्वास रखने में नहीं आवे तो माता या पत्नि के द्वारा बनाया गया खाना वह खा भी नहीं सकते ।

विश्वास से ही सभी जगह व्यवहार चलता है तो अपने ज्ञानी भगवन्तों पर अपने सद्गुरुओं पर और अपने धर्म पर कैसा दृढ विश्वास होना चाहिये ।

दुनिया के मानवों पर विश्वास रखने से कितनी वार उल्टा परिणाम आता है कारण कि जगत् स्वार्थी है परन्तु जिसे राग-द्वेष नहीं, स्वार्थ नहीं, लालसा नही, तृष्णा नहीं, लोभ-लालच नहीं केवल परमार्थ दृष्टि से ही जगत के जीवों का उद्धार कैसे हो ? इसी सद्भावना से, कल्याण की कामना से स्वयं तप करके, ज्ञान प्राप्त करके जगत् के जीवों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करते हैं ऐसे उपकारी परमार्थी महात्माओं पर तो कितना अटल विश्वास होना चाहिये ।

धर्म जैसी अमूल्य वस्तु पर यदि दृढ विश्वास श्रद्धा रखने में आये तो वह अवश्य फलदायक होता है ।

दुर्लभ ऐसा निर्मल ज्ञान भी श्रद्धावान को ही प्राप्त होता है । गीता में कहा है—

श्रद्धावान लभते ज्ञानं, तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शांतिम्, अचिरेणाधि गच्छति ॥

अर्थात् : श्रद्धालु आत्मा ज्ञान प्राप्त कर, इन्द्रियों पर काबू रखकर आत्मज्ञान को प्रकट करके मोक्षपद को पाता है ।

शास्त्रों में कहा है—''संशयात्मा विनश्यति'' मूर्ख, अश्रद्धालु मनुष्य विनाश को प्राप्त होता है । एक दृष्टांत आता है—

एक नगर में दो मित्र रहते थे । दोनों जन्म से दरिद्र थे लेकिन एक श्रद्धावान था तो दूसरा सभी वातों में शंका करता था ।

एक बार श्रद्धावान मित्र ने कहा- चलो, हम व्यापार हेतु परदेश चलते है। तो दूसरे मित्र ने कहा—परदेश जाकर ज्यादा दु खी नहीं होगे। यह निश्चय थोडे ही है कि हम वहा जाकर सुखी हो जायेगे।

लेकिन श्रद्धावान ने उसे समझाया। आखिर श्रद्धावान के आग्रह से दोनो धन कमाने के लिये परदेश चल दिये।

मार्ग मे जाते-जाते एक आश्रम के पास ही एक सिद्ध पुरुष अपनी साधना मे बैठे हुये दिखाई दिये।

श्रद्धावान ने दूसरे मित्र से कहा कि मित्र! चलो अपन सिद्ध पुरुष के पास चलते है। सत की सेवा करेगे तो सुखी हो जायेगे।

दूसरा मित्र कहता है- कैसी बात करता है तू भी! सेवा से सुखी होगे उसकी क्या जवाबदारी ? क्या यह पक्का है कि हम सुखी हो जायेगे ? हमारा जीवन सुखमय हो जायेगा ?

श्रद्धावान ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया उसकी कही गई बात पर गौर नहीं किया वह तो सिद्ध पुरुष की सेवा करने मे जुट गया।

श्रद्धावान को सेवा करते देखकर सशयी मित्र भी सेवा करने लगा, किन्तु उसके दिल मे बार-बार यह होता कि ये सिद्ध पुरुष है या नहीं ?

धीरे-धीरे दोनो मित्रो की सेवा से सिद्ध पुरुष प्रसन्न हुआ। उसने मत्रित दो कथा यानि दो झोलिया उन दोनो मित्रो को दी और कहा कि छ महीने तक ये झोली अपने कठ मे रखना। छ महीने के बाद इस झोली के प्रभाव से हमेशा पाच सो सोने की मोहरे प्राप्त होगी।

दोनो मित्र झोली लेकर वहा से रवाना हुए। श्रद्धावान ने श्रद्धा से सोचा कि सत पुरुष के वचन सिद्ध होते है अत उनके वचनो पर विश्वास रखना चाहिये।

लेकिन शका रखने वाले व्यक्ति के मन मे हुआ कि छ महीने के बाद पाच सौ सोने की मोहरे मिलेगी या फिर ताबे के सिक्के मिलेगे या नहीं भी ? वह शका करने लगा।

शकित मित्र झोली के बारे मे भी कहता है कि इस झोले को कठे मे रखो या बगल मे रखो क्या फरक पडता है और बगल मे रखो या पोटली मे रखो क्या फरक पडने वाला है ? खास तो उसे झोली गले मे डालते हुए शर्म आती थी इस कारण वो झोली की मजाक उडाया करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसने सिद्ध पुरुष की दी हुई झोली को फैक दी।

श्रद्धावान मित्र को सिद्ध पुरुष पर पूरी आस्था थी। उसने उस झोली को अपने गले मे बराबर छ महीने तक रखी। अत सिद्ध पुरुष के वचनानुसार उसे नित्य प्रति नियमित रूप से पाच सौ सोने की मोहरे प्राप्त होने लगी। कुछ ही समय मे वो धनाढ्य सेठ बन गया।

जब शकालु मित्र को पता चला कि सिद्ध पुरुष की झोली के बल पर उसका मित्र धनाढ्य बन गया तब उसको अफसोस का पार नहीं रहा।

"श्रद्धा विवेक उत्पन्न करती है"

जिसको जीवन का निर्माण करना है, जीवन की सुगध फैलानी है उसको सर्वप्रथम श्रद्धा

की जरूरत है।

श्रद्धाहीन की क्रिया राख पर लिंपने जैसी हैं, अंक बिना शून्य की स्थिति के समान हैं और आकाश में चित्रकारी की कल्पना के समान हैं।

अज्ञानी के पीछे चलना ये अंध श्रद्धा है, लेकिन ज्ञानी के पीछे चलना वो सच्ची श्रद्धा है।

आज कितने ही लोग श्रद्धा-विश्वास का एकदम खंडन करते हैं। धर्म का प्राण श्रद्धा है, विश्वास है। अंध श्रद्धा नहीं, वैसे ही संदेह भी नहीं।

इस जगत में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे श्रद्धा के माध्यम से ही आगे बढ़े हैं। यदि जीवन को आगे बढाना है, उच्च और उपकारक बनाना है तो उपकारी महापुरुषों के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिये।

सच्ची श्रद्धा से विवेक उत्पन्न होता है। जिसमें सच्ची श्रद्धा है उस व्यक्ति को अच्छे-खराब की परीक्षा जल्दी हो जाती है।

''श्रद्धा सभी सुखों का मूल है।''

यदि जीवन में सुगंध प्रकट करनी हो तो अपने अनन्त शक्तिशाली आत्मा के अस्तित्व में श्रद्धा रखनी चाहिये। अनन्त समर्थ का स्वामी अपनी आत्मा है और इसी सत्य से श्रद्धा रखनी चाहिये। श्रद्धा आत्मा की अनंत शक्तियों को प्रगट करने का मार्ग है, प्रक्रिया है।

इस श्रद्धा के द्वारा जैसे सोचेंगे वैसे बन सकेंगे। यदि स्वयं को कमजोर महसूस करेंगे तो कमजोर ही होंगे और यदि स्वयं को शक्तिशाली समझेंगे तो अवश्य ही वैसे होंगे।

वास्तव में अपन अनंतज्ञान, अनंतसुख, अनंतगुण के स्वामी हैं सब कुछ प्राप्त करने योग्य गुण अपने में हैं। यदि अनंत गुण प्रकट करने हो तो अनंतगुण में श्रद्धा रखो।

अंत में—

श्रद्धा सभी सुखों का मूल है,
श्रद्धा बिना सभी धूल हैं,
अरोग्य श्रद्धा से मिलता है,
उद्योग श्रद्धा से फलता है ॥

श्रद्धा से उन्नति की गति,
अति वेग से बढ़ती जाती है,
उन्नति तत्क्षण अटकती,
जहाँ श्रद्धा का वर्तुल है ॥

श्रद्धा से दुर्लभ नहीं कुछ,
भव सिन्धु का ये पुल है,
श्रद्धा सुसाध्य को जो माने,
श्रद्धा ये मानव जीवन का अमृत है ॥

इसी मंगल भावना के साथ। ☆

रात में शोने के पहले शोचिए,
यदि आपने एक छोटा शा भी उपकार नहीं किया है
तो आपको शोने का अधिकार तो है
परन्तु शुबह उठने का अधिकार नहीं ॥

दुखं पापात्–सुख धर्मात्

सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म सा , खोड
(प पू महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा की प्रशिष्या)

रागो य दोसोऽविय, कम्मवीय, कम्म च मोहप्य भव वयन्ति,
कम्म च जाइ मरणस्स मूल, दुक्ख च जाइ मरण वयन्ति ॥

अनन्त करूणानिधि चरम तीर्थकर परम परमात्मा महावीर ने अपनी देशना मे, अधर्म के अधकार से मुक्त होने के लिए और धर्म के सुखमय प्रकाश को प्राप्त करने के लिए कहा था —

' दुख पापात्-सुख धर्मात्''

हे भव्य प्राणियो !

दुख का मूल कारण पाप ह और सुख का मूल कारण धर्म है । अत दुख से मुक्त होने के लिए पाप वृत्ति का त्याग करना होगा और परम सुख का मूल कारण धर्म है, इस पर अपमतापूर्वक आचरण करना होगा ।

सुख-दुख की प्राप्ति का मूल कारण कर्म है और कर्म बन्धन का मूल कारण राग ओर द्वेष है ।

राग ओर द्वेष कर्म बीज है । कर्म से ही मोह उत्पन्न होता है और जन्म-मरण के दुख की परम्परा बढती है ।

इस ससार मे सबसे भयकर दुख जन्म-मरण है जो हमारी आत्मा को असह्य पीडा से पीड़ित करता है ।

इस असह्य दारुण दुख से मुक्त होने के लिए जिनेश्वर प्रभु ने कहा ''दुख पापात् सुख धर्मात्'' हे भव्यप्राणी । तुम्हे चौरासी लाख जीवायोनियो मे परिभ्रमण करने के बाद सबसे उत्तम, सर्वश्रेष्ठ मानव योनि मे उत्पन्न होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है ।

''दुल्लहा खलु माणुस्स भवे'' दुर्लभ मनुष्य भव की प्राप्ति के बाद परम दुर्लभ जिनेश्वर प्ररूपित धर्म की प्राप्ति हुई ।

जिसके लिए तीर्थकर परमात्मा ने अपनी मधुर देशना मे कहा कि किसी दरिद्र व्यक्ति को रत्न चिन्तामणि प्राप्त हो जाये तो वह तमाम बाह्य दरिद्रता से मुक्त होकर स्वर्गीय सुखो की जिन्दगी के सुख को प्राप्त करता हुआ आनन्दमय जीवन जीता हे ।

परतु जिन धर्म रूपी चिन्तामणि रत्न तो अनन्त-अनन्त योनियो के महान दुखो की दरिद्रता से पीडित बनी आत्मा को मात्र बाह्य शारीरिक मनोरजित जैसे स्वर्गीय सुख ही नहीं बल्कि इससे भी आगे बढकर आत्मा का परम सुख का आनन्द देने वाला मोक्ष सुख तक भी देता है ।

ऐसा देव दुर्लभ मानव जीव व अचिन्त्य

सुख की प्राप्ति कराने वाले चिन्तामणि रत्न तुल्य जिन धर्म को पाने के बाद यदि पापवृत्ति का त्याग नहीं किया और परम सुख को देने वाला जिन धर्म का आचरण नहीं किया तो हमारी आत्मा जन्म-मरण के दारुण दुखों से कैसे मुक्त होगी ?

संत कबीरदास ने कहा कि—

''कस्तूरी कुंडल वसे, मृग ढूंढे वन मांहि,
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहि ।''

मृग की भ्रांति भूल कर रहे हैं। मृग कस्तूरी की सुगंध में पागल बनकर उसकी प्राप्ति के लिए वन-वन में भटकता है, परन्तु कस्तूरी तो उसकी नाभि में ही रहती है । उसे बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं। वैसे ही सुख तो अपनी आत्मा के भीतर ही है, बाहर नही होता। सुख के प्रकाश पुँज को प्राप्त करने के लिए इस मन पर लगे पापवृत्ति के कलुषित अन्धकार को हटाना पड़ेगा। मन की कलुषित पापवृत्ति को त्यागे बिना परम सुख दुर्लभ है।

एक गांव में दो भाई रहते थे। एक का नाम छगन दूसरे का नाम मगन था। दोनों भाइयों में घनिष्ठ प्रेम था। जब वे युवावस्था को प्राप्त हुए तो माता-पिता की मृत्यु हो गई । घर की सारी जिम्मेदारी दोनों भाइयों पर आ गई। दोनों भाइयों ने भविष्य का विचार कर निश्चय किया कि हम दोनों भाई परदेश जाकर व्यापार करेंगे जिससे हम अपने कुटुम्ब का पालन पोषण अच्छी तरह कर सकेंगे।

दोनों भाई धन कमाने की इच्छा से परदेश के लिए घर से निकले। पुराने समय में आज की तरह वाहनों की सुविधा नहीं थी, व्यक्ति पैदल भ्रमण करता था।

दोनों भाई चलते-चलते एक जंगल में पहुँचे। उस जंगल की पगडंडी पर संत महात्मा दौडते हुए आ रहे थे। महात्मा ने सामने आते हुए दोनों युवान से कहा, भाई ! आप इस रास्ते को छोड दीजिये क्योंकि इस रास्ते में आगे एक लाल कपडे वाली डाकन है । छगन-मगन दोनों भाई महात्मा की बात का उपहास करते हुये युवानी की मस्ती में आगे ही आगे बढते रहे। आगे रास्ते में पडी लाल रंग के कपडे की थैली को दूर से देखा समीप जाकर दोनों भाईयों ने उस थैली को उठाकर देखा तो उसमें एक हजार स्वर्ण मुद्राएं भरी हुई थी।

छगन-मगन दोनों बडे खुश हुये, बहुत अच्छा हुआ भगवान ने हमारी इच्छा पूरी कर दी। अब तो हमारे पास पर्याप्त धन हो गया है हमे परदेश जाने की आवश्यकता ही नहीं है । दोनों भाई पुनः गांव की ओर लौटते हुए एक गांव के बाहर पहुँचते हैं। जंगल में पास सरोवर के किनारे एक वटवृक्ष की शीतल छाया में आराम करते हुये छगन ने कहा भाई- अब कडी भूख लगी है पास में गांव है हलवाई की दुकान से बढ़िया मिठाई लेकर आ जा । दोनों भाईयों के बीच में स्नेह सरिता भी बह रही है वात्सल्य का सागर हिलौरें ले रहा है।

परन्तु दुखं पापात् ! परन्तु पापवृत्ति का सेवन दुख का कारण कैसे बन जाती है।

मिठाई लेने जाते समय मगन के मन में कलुषित पापवृत्ति ने प्रवेश किया। अरे हम दो भाई है जो हमे एक हजार सुवर्ण मुद्राएं मिली है उसका

बटवारा होगा, आधा हिस्सा छगन के पास रहेगा। भगवान ने बिना मेहनत जो धन दिया है, उसका बटवारा क्यो करे। मै जो मिठाई लेकर जा रहा हूँ उसमे विष मिलाकर छगन को खिला दू तो लोगो के बीच मेरी इज्जत भी खराब नहीं होगी और धन भी सारा मेरे हिस्से मे रह जायेगा।

इधर वृक्ष छाया-तले बेठे छगन की मति मे मलिनता आई कि मेरे पास तेज धार वाली छुरी है, आखिर कौन दुनिया मे किसका होता है। बिना मेहनत से मिले धन को आधा बाटकर देना यह भी मेरी मूर्खता है, क्यो नहीं इस तेज छुरी की धार से मगन के सिर को धड से अलग कर दूँ। जगल मे कौन देखने वाला है।

दोनो के विचारो मे पापवृत्ति जमकर अन्धकार व्याप्त हो गया। इधर मगन ने अपना काम किया तो उधर छगन ने भी अपनी तैयारी कर ली। मगन हसता-हसता झूमता हुआ दो मिठाई के पैकेट बनाकर लाया और छगन को कहा भाई मे बहुत थक गया हूँ थोडी देर विश्राम करूगा। छगन ने सोचा ये मोका भी मेरे लिए ठीक है। जैसे ही मगन वृक्ष की घटादार छाया मे सोया उसे गहरी नींद आ गई। छगन ने अपनी कलुषित मनोवृत्ति के अनुसार तेज धार वाली छुरी से अपने भाई मगन के सिर को धड से अलग कर दिया। खून के फव्वारा के साथ छगन के मन मे मस्ती की तरग उठ रही थी। मै पूरी हजार स्वर्ण मुद्रा का मालिक बन गया। मस्ती की जिदगी जिऊगा। खुशी मे झूमता हुआ, रसदार मिठाई के पैकेट को खोलकर खा रहा है। उसे क्या पता कि मै जो पापवृत्ति का सेवन कर रहा हूँ यही मेरी आत्मा के दुख का मूल कारण बनेगा। मिठाई खाने के दस मिनट मे सारा विष छगन के शरीर मे व्याप्त हो गया, वह भी मूर्च्छित हो जमीन पर गिर पड़ा, सदा की चिरनिद्रा मे सो गया।

अनादि अनत काल से दुखी बनी आत्मा को सुखी बनाने वाला मूल कारण ही धर्म है।

इतिहास के पन्नो मे हमे यही पढने को मिलता है कि पापवृत्ति के त्याग बिना और धर्म को धारण किये बिना कोई भी आत्मा परम सुख को प्राप्त नहीं कर सकती। देवलोक के दिव्य सुखो की प्राप्ति के बाद भी सम्यग दृष्टि देव की यही कामना रहती हे कि मुझे मनुष्य जीवन मिले और जैन धर्म मिले। जिससे मे दुख के मूल कारण से मुक्त होकर परम सुख से अपनी आत्मा को सुखी बना सकू। अत

ससारम्भि असारे, नत्थी सुहें वाहि वेयणा पउरे।
जाणतो इह जीवो, न कुणइ जिन दोसिय धम्म।

सचमुच मे यह ससार असार है, इसमे लेशमान भी सुख नहीं है। ये बाह्य सपत्ति, सत्ता और सतति के सुख क्षणिक है आधि, व्याधि और उपाधि से भरे हुये है। त्याग के योग्य है। सच्चा व शाश्वत सुख देने वाला एकमात्र जिनेश्वर प्ररूपित धर्म हे। उसे अपने जीवन मे पूर्वकालीन महापुरुषो के जीवन आलबन से अवश्य जीवन मे आत्मसात् करते हुये हम अपनी आत्मा को परम सुखमय बनाने का प्रयास करे।

यही शुभेच्छा। ☆

भक्ति के वश भगवान

सा. पूर्णप्रज्ञा श्री जी म.सा., व्यावर
(महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.सा की प्रशिष्या)

जिस प्रकार मूल्यवान रत्नादि तिजोरी में बंद रहते हैं उसी प्रकार से भक्ति अधिकांश अन्तरात्मा में छिपी रहती है । कबीर दास जी कपडा बुनते हुये, रैदास जूते बनाते हुये और नामदेव छपाई का काम करते हुये अपनी कम आवश्यकताओं की, साधारण कार्यो से पेट पूर्ति करते हुए भी प्रतिपल अपने भगवान से ऐसी लौ लगाए रहते थे कि जरूरत पडने पर या कष्ट के समय भगवान को स्वयं उनके वशीभूत होकर आना पडता था ।

महाभारत में कहा भी है—

''भक्त्या तुष्यति केवलम् ।''

भगवान् केवल अनन्य और सरल भक्ति से ही संतुष्ट होते हैं ।

राजस्थान के एक छोटे से गांव में एक जाट दंपत्ति रहते थे । जाट ने अपने घर पर ही कृष्ण भगवान की मूर्ति एक आले में विराजमान कर रखी थी । प्रतिदिन वह भोजन करने के पहले भगवान् को भोग लगाकर ही स्वयं भोजन करता था । किसी आवश्यक कार्य से उस जाट को काफी दिनों के लिए दूर गांव जाने का कार्यक्रम बना । अपनी पत्नी कर्मा से जाते-जाते कहा कि तू रोजाना भगवान को भोग लगाकर भोजन करना । कर्मा ने प्रसन्नतापूर्वक हामी भर ली । जाट चला गया ।

अगले दिन कर्मा जाटनी ने बाजरी का खीचडा और कढ़ी बनाई दो बर्तनों में लाकर भगवान की मूर्ति के आगे रख दी और पंखा झलती हुई भगवान अभी खाना खायें प्रतीक्षा करने लगी। पहली बार ही जीवन में भोग लगाने का अवसर मिला था । प्रतिदिन जाट ही भोग लगाते थे ।

जब प्रभु ने नहीं खाया तो सोचा कि आज इन्हें भूख नहीं होगी । कोई बात नहीं कल खाएंगे । कर्मा ने भी खाना नहीं खाया । प्रभु ने नहीं खाया तो वह भी कैसे खाये । उसे यह पता नही था कि जाट के लगाए भोग को भगवान् कैसे खाते थे । वह भोली तो बाहर काम में लगी रहती थी । भोगविधि ज्ञात नहीं थी ।

दो-चार दिन तक कर्मा जाटनी रोज मक्की-बाजरी के सोगरे घाट खीचडा भगवान के सामने लाकर रखती रही और न खाने पर उन्हें मनाती रही । खाओ प्रभुजी । भोले भाव से पुकारती, ओ मेरे देव ? भूखे रहोगे तो बीमार पड जाओगे मेरा जाट पति आपका पुजारी आकर उलटा मुझे डॉटेगा कि मेरे भगवान् को दुबला कर दिया । मेरे प्रभु को थका दिया । मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगी । मेरे देव आप भोजन कर लो इस भोली पर महर बरसा दो ।

प्रभु फिर भी भोजन नहीं करते तब गुस्से में आकर कहने लग जाती- वाह रे वा भगवान्, तुम

तो बडे जबर्दस्त हो । लगता है जाट ने तुम्हे बाजार से मावा मिठाई लड्डू, पेडे ला लाकर खिलाया है इसलिये बडे चट्टू हो गये हो तभी यह खीचडा तुम्हे नहीं भाता, पर कब तक नहीं खाओगे मै भी देखती हूँ। मेरे पास तो यही भोजन है ओर भूखे मरोगे तब तो खाओगे न यही खाना ।

कर्मा के प्रलाप को देखकर भी भगवान् की मूर्ति उसी प्रकार मुस्कराती रहती । कर्मा जाटनी खाना उठाकर ले जाती, गरीबो को या गाय-भैसो को खिला देती । स्वय अन्न का एक भी मुँह मे नही डालती । उसने सकल्प कर लिया था भगवान जब तक नहीं खाये मै कैसे खाऊँ । कई दिन उपवास करने के कारण बहुत कमजोर हो गई उसकी उसे चिन्ता नहीं । वह तो भगवान् के फिक्र के मारे मरी जा रही थी क्या करुँ इतने दिनो से मेरे प्रभु, दीनानाथ भूखे है, इन्हे कैसे खिलाऊँ ? इतने दिन प्रभु के भूखे रहने से उसे उन पर बडी दया आने लगी, चिन्ता होती और प्रभु के बीमार हो जाने की सम्भावना से दु खी होकर खाट पर पडी आँसू बहाती । लेकिन भोग रोज सामने रखती रही । अचानक उसे याद आया भगवान मेरी उपस्थिति मे मेरे सामने शर्म के कारण ही रोटी नहीं खाते होगे । मै औरत हूँ न मेरी लज्जा करते है अत यह ध्यान आते ही उसे एक उपाय सूझा और अपने अत्यन्त दुर्बल व शक्तिहीन शरीर को जैसे-तैसे घसीटकर चूल्हे के पास ले गई । कई दिनो के उपवास चल रहे थे । फिर भी खुशी व उल्लासपूर्वक खीचडा बनाकर भगवान के सामने लाकर रखा और साथ ही उसन अपनी ओढनी फाडकर उसका आले के आगे पर्दा लगाकर बडे प्रेम से मीठे शब्दो से बोली—

ओ मेरे कृपालु देव, ओ मेरे भगवान, मैं बडी मूर्ख हूँ, जाटनी जो ठहरी । इतने दिन से सोच ही नहीं सकी कि इतने बड़े भगवान एक औरत के सामने कैसे भोजन करेगे । प्रभु अब मैने पर्दा लगा दिया है, शरम की कोई बात नहीं, इसलिए अब प्रभु जल्दी-जल्दी खा लेना । इतने दिन के भूखे, तुम जरुर खा लेना । अच्छा देखो, अब भूखे मत रहना । यह कहकर भोली कर्मा बडे सतोषपूर्वक घर के एक कोने म जाकर बैठ गई । उसकी आँखो से प्रेमाश्रु बह रहे थे और जबान से भक्ति भरे स्वर निकल रहे थे ।

थोडो आरोगो नी मदन गोपाल
करमा बाई रो खीचडो चडलो ।

प्रभू जी थारो प्रेम पुजारी गयो दिसावर माय
म्हने सौप ग्यो थारी पूजा, क्यूँ नी जीमो आप ।
करमा बाई रो खीचड लो ।

करमा इस प्रकार से गाती हुई सोचने लगी कि अब तो प्रभु ने आरोग लिया होगा । धीरे-धीरे उठी और जाकर प्रभु के सामने का पर्दा धीरे से हटाकर झाकने लगी तो देखती है बर्तन खाली है । भगवान ने भोजन कर लिया है । वह खुशी से बावली हो गई आनन्द के आसूँ बहाते हुये बार-बार झुक-झुककर प्रणाम करती बरतन उठा लेती है । बरतन मे लगी जूठन का प्रसाद माथे से लगाकर करीब महीने भर की भूखी करमा ने अपने व्रत को पूरा किया। प्रतिदिन अब भोजन बनाकर पर्दा लगाकर भगवान के आगे रख देती भगवान के भोजन के बाद स्वय भी कुछ खाती है ।

एक दिन अपना कार्य पूर्ण कर जाट घर आकर कृशकाय पत्नी को और भगवान के सामने

लगे पर्दे को देखा तो हैरान रह गया। यह सब रंग ढंग उसके समझ में नहीं आया तो पूछ बैठा क्या तू बीमार हो गई थी। और यह गन्दी ओढनी भगवान के आगे क्यों ढांक रखी है। भगवान को भोग तो बराबर लगाया या नहीं ? करमा हंस पडी और नाचती हुई कहने लगी। बीमार पडते मेरे दुश्मन। मुझे कुछ नहीं हुआ पर तुम्हारे भगवान ने तो बडी आफत खडी कर दी थी। रोज गरम-गरम सोगरा और खीचडा बनाकर उनको परोसती मगर खाते ही नहीं थे। इतने नखरे करते कि पूछो ही मत। तुमने माल खिला-खिलाकर उनकी आदत बिगाड रखी थी। रूखा-सूखा उनके गले से कहां उतरता। मगर मैं भी पक्की रही और पर्दा लगा लगूकर आखिर खिलाकर ही छोडा। अब तो दो चार दिन से सीधे, जो रखकर आती हूँ वो ही चुपचाप खा लेते हैं। देखो, अब तुम फिर उनको खाऊ मत बना देना।

पत्नी की बातें सुनकर आश्चर्यचकित होकर खडा हो गया। अरी भागवान तू क्या बोल रही है, तू तो बावली हो गई है। क्या भगवान कभी खाना खाते हैं ?

जाटनी उसी वक्त कहती और नहीं तो क्या ? कब तक भूखे रहते भगवान ? चलो अभी बताऊँ। जाट डरता-डरता पत्नी के साथ गया। कर्मा ने परदा उठाया तो उसने देखा कि खीचडे का कढी-रोटी के सभी बरतन खाली पडे थे। भगवान ज्यो के त्यों मुस्करा रहे थे। जाट ने अपना सिर घुन लिया और कर्मा के भाग्य से ईर्ष्या करता हुआ बोल उठा। ओ मेरे भगवान ? मै बरसों से भोग लगाकर भी जो नहीं पा सका वह मेरी सीधी-साधी भोली कर्मा ने चंद दिनों में पा लिया। तुम्हारी लीला अपरम्पार है। प्रभु सच्चे पारखी हो तुम मेरे ऊपर दया करो। सच बात है भगवान भावों के भूखें, भक्ति के भूखे हैं। सच्चे दिल से कर्मा ने भोजन करवाया। भगवान को भी करमा की भोली भक्ति के वशीभूत होकर खीचडा खाने को आना पडा। निस्वार्थ भाव की भक्ति भगवान को भी बुला लेती है। करमा जाटनी की भक्ति भगवान को भी बुला लेती है करमा जाटनी की भक्ति को सामने रख हम भी अपने आत्म भवन में भगवान को बसाने का सद्प्रयास करें। इसी शुभ भावना के साथ। ☆

यह शरीर शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति का साधन है। इससे मानव-भव में त्याग वैराग्य ज्ञानाभ्यास आदि की वृद्धि हो सकती है। इसके द्वारा आत्मगुणों की प्राप्ति होती है अतः इसकी रक्षा करना आवश्यक है। मुझे शरीर से शत्रुता नहीं है, परन्तु जब वह अनेक उपाय करने पर भी नष्ट होने की तैयारी में हो तब शरीर के प्रति स्नेह छोड़कर आत्मगुणों की रक्षा में तत्पर बनना चाहिये।

जिनवाणी-अमृतपानी

साध्वी श्री वैराग्यपूर्णा श्री जी म सा
(महत्तरा सा श्री जी म सा की प्रशिष्या)

धम्मारामे चरभिकरयु, धिइम धम्म सार ही ।
धम्मारामे रया दते, वभचेर समाहिए ॥

धर्म ही जीवन सार तत्त्व है । जिनेश्वर परमात्मा ने दो प्रकार के धर्म की महिमा अपने मुखकमल से बताई, श्रमण धर्म और श्रावक धर्म । इन दोनो प्रकार के धर्म की महिमा गरिमा का श्रवण कर अशत या पूर्णत जीवन मे उतारने वाला मानव ही शाश्वत सुख की प्राप्ति की ओर अपने आपको अग्रसर कर सकता है ।

इस दुर्लभ मानव देह मे, महादुर्लभ जिनवाणी श्रवण के सयोग को प्राप्त करके यदि इसे जीवन मे नही उतारा तो मानव जीवन की सफलता ही असभव है ।

जिनवाणी के अमृत का जिस किसी ने भी श्रद्धा से पान किया है वे आत्माए अवश्य ही कर्मो के दारुण दुखो से मुक्त हुई है ।

भयकर विष ज्वालो का फूँकार कर प्राणियो का सहार करने वाला क्रूर चण्ड कौशिक विषधर भी जिनवाणी की अमृत बूद "बुझ-बुझ चण्ड कौशिक" का पान कर क्रोध की अग्न ज्वालो का उपशम कर समाधि की गहरी निद्रा को धारण कर सद्गति मे पहुच जाता है ।

जिनवाणी के शब्द रूपी अमृतकणो को जिसने जीवन के साथ नीर क्षीर की तरह मिलाकर एकमेक कर दिया है उसकी आत्मा अवश्यमेव निर्मल-पवित्र परमात्म स्वरूप बन गई है ।

राजगृह नगर के धन्यश्रेष्ठि की एक दासी थी चिलाती । धन्यश्रेष्ठि के पाच पुत्रो पर एक पुत्री थी "सुषमा" । चिलाती दासी सेठ और सेठानी की प्रिय दासी थी । उसका जीवन सेठ-सेठानी की काया के तले पल रहा था । दासी चिलाती के एक पुत्र था जिसका नाम मा के नाम से ही चलता था उसे चिलाती पुत्र कहते थे । चिलाती पुत्र का सेठ की पुत्री के साथ अति प्यार था । बाल्यावस्था मे ही दोनो हास-परिहास, मनोरजन करते हुये स्नेह सरिता मे बहते जा रहे थे । चिलाती पुत्र अेकान्त दिल से सुषमा को चाहता था तो सुषमा भी अपने दिल से प्यार करती थी । इस तरह बढती हुई प्रेम की गति को देखकर धन्य सेठ ने चिलाती पुत्र को मार-पीट कर घर से बाहर निकाल दिया । सेठ के इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर इसका बदला लेने की सोची । वह राजगृह से निकलकर सिह गुहा नाम की चोर पल्ली मे पहुच गया । कुछ ही दिनो मे चिलाती पुत्र एक क्रूर दस्यु बन गया । उनके साहस शौर्य से प्रभावित होकर पल्लिपति ने उत्तराधिकारी के रूप मे चिलातीपुत्र को पल्ली का स्वामी बना दिया । अब उसे अपना प्रतिशोध लेने का अवसर

मिला। सुषमा के रूप के प्रति चिलातीपुत्र कब से आसक्त था। उसने अपने सहयोगियों से मंत्रणा करके योजना बनाई और एक दिन अचानक धन्य श्रेष्ठि के घर पर हमला बोल दिया गया।

चोरों ने धन के खूब गट्ठर बांधे। किन्तु चिलाती पुत्र को धन की उतनी लालसा नहीं थी जितनी सुषमा की थी, उसने सुषमा को अपने कब्जे में ले लिया। अन्य चोर सेठ के घर की मनचाही तबाही करते रहे पर किसी की भी हिम्मत नहीं कि क्रूर दस्यु दल का मुकाबला करे। चोरो के चले जाने के बाद जब सेठ को अपनी लाडली पुत्री के अपहरण का पता चला तो सेठ ने अपने पांचों पुत्र व अनेक सिपाहियों के साथ चोरों का पीछा किया। धन की उन्हें कोई फ्रिक नहीं थी, उतनी फिक्र अपनी प्राण प्यारी पुत्री सुषमा को ले जाने की थी। सेठ द्रुत गति से चोरों का पीछा करने लगा। चोरों ने देखा सेठ अनेक नगर रक्षक के साथ अनेक सशस्त्र राज पुरुषों को लिए हमारा पीछा कर रहा है। चोरों ने पीछा करने वालों को अपने निकट देख धन की गठरियों को इधर-उधर फेंकना प्रारम्भ किया। लेकिन सेठ ने तो पीठ पर सुषमा को उठाये भाग रहे चिलाती पुत्र का पीछा किया, पीछे उनके पांच पुत्र हैं, सेठ का विकराल रूप बना हुआ है। दौडते-दौडते चिलाती पुत्र के पांव थकने लगे, सोचने लगा सुषमा के भार को लेकर भागना मुश्किल है। मैं अब सेठ के हाथों पकडा जाऊंगा। उसने झट से तलवार का एक झटका मार सुषमा के सिर-धड को अलग कर दिया। खून से लथपथ धड को छोडकर सुषमा के सिर को लिये वालों से गले में लटकाकर मुख को निहारता हुआ वेतहाशा भागता जाता है। धन्य सेठ खून से लथपथ सुषमा के धड को जमीन पर पडा देखकर वहीं हताश हो गये और सिर पीटकर रोने लगे। धन्यश्रेष्ठि पांच पुत्र आदि नगरजन करुणक्रन्दन करते हुये सुषमा के धड को लेकर घर आये।

इधर चिलातीपुत्र भयभीत मनःस्थिति से सुषमा का कटा हुआ सिर लेकर बहुत दूर निकल गया। कटे सिर से खून टपक रहा था। चिलातीपुत्र का समुचा शरीर रक्त रञ्जित हो गया। उसने जंगल में इधर उधर भटकते सघन वृक्ष की छाया तले एक मुनि को ध्यान में खड़े देखा तो मुनि के पास जाकर बोला- अरे, मुनि ठीक-ठीक बताओ यहां क्या कर रहे हो ? तुम्हारा धर्म कर्म क्या है ? नहीं तो इस नारी की तरह तलवार के एक झटके से तुम्हारे सिर को धड से अलग कर दूंगा।

मुनि ने अपने ज्ञान के माध्यम से उसके विकराल भयंकर क्रूर जीवन के पीछे भी धर्म जिज्ञासा की एक हल्की सी सौम्य रेखा उभरती देखी। परमज्ञानी मुनि ने शांति के साथ जिनवाणी रूपी त्रिपदों का संक्षेप में उपदेश दिया—उपशम, विवेक, संवर। और उनके देखते ही देखते वे पक्षी की तरह आकाश में उड गये। चिलाती पुत्र आश्चर्य मूढ सा बना कुछ समय तक आकाश की ओर देखता रहा। फिर सोचा 'मुनि ने यह क्या धर्म बताया। उपशम यानि क्या ? शब्द के रहस्य को खोल रहा है उपशम अर्थात् क्रोध की शांति। मन की शीतलता। मेरे मन में तो कब से भयंकर क्रोध की अग्नि जल रही है। एक निरपराध कुमारी के खून से सनी तलवार मेरे क्रोध का प्रचंड रूप लिए कितनी भयानक लग रही है। हाथ में खून की प्यासी तलवार है तो उपशम कैसा ?'' वह उपशम

के विचार मे गहरा उतरा ओर झट से उसने तलवार फेक दी। मुनि ने दूसरा धर्म सूत्र का पद बताया है विवेक। बडा गम्भीर अर्थ है इसका। कृत्य, अकृत्य का विवेक। भलाई बुराई का ज्ञान। विवेक का द्वार खुले बिना धर्म हृदय मे प्रवेश ही नहीं कर सकता। मुझ मे कहॉ है विवेक। नग्न क्रूरता का प्रतीक यही स्त्री का रक्त रजित मुड तो हाथ मे लिए खडा हूँ। छि-छि कैसा विवेक। उसने हाथ का एक झटका दिया और सुषमा का वह मुड दूर जा गिरा।

आख मूदे वह विचारो की गहराई मे अधिकाधिक उतरता जा रहा था। विचार के ज्योर्तिमय स्फुलिग नया प्रकाश देने लगे। अब सवर पर उसका चिन्तन टिका। ओह सवर। कितना महान वाक्य कहा हे मुनि ने ! म स्वेच्छाचारी, असयत। कहा हे सवर का विचार ? सवर अर्थात् सयम। मन का सयम, वचन का सयम, कर्म का सयम, यही तो सवर की साधना है। अपने आपको धर्म मे उतार दू, तभी तो धर्म उतरेगा हृदय मे। वह विचार करता करता आत्मलीन हो गया। मन की मोह तन्द्रा टूट गई। उसने प्रतिज्ञा की। जब तक स्त्री हत्या का पाप मेरी आत्म स्मृति को दबा रहा है तब तक मे यहा पर ही कायोत्सर्ग करके खडा रहूँगा। न खाना है, न पीना है, न हिलना-डुलना, आख भी नहीं खोलना, पलक भी नहीं झपकाना, कठोर सकल्प ने आत्म शक्ति को जागृत कर दिया। क्रूर कर्मा चिलाती पुत्र जिनवाणी के त्रिपदो को अन्तर हृदय मे अटूट श्रद्धा के साथ आत्मसात कर सयत जीवन धारी बनकर असह्य उपसर्गो को समता पूर्वक सहता हुआ प्रशात मन मे धर्म की लौ को जगा रहा था। वह धर्म की पवित्र लौ से, आत्मा के ऊपर छाये हुये पाप कर्मो के अधकार को दूर कर सद्‌गति को प्राप्त करते हुए भविष्य मे जन्म मरण से शीघ्रतया मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करेगा।

तडफती जिन्दगी को ठुकराने वाले वहुत मिलेगे
सिसकती जिदगी को आशा का सबल देकर,
दुखी जीवन को जिनवाणी से सहलाने वाले,
धर्म गुरु के सिवाय कौन मिलेगे।

सच बात है दुख से दुखी बनी हुई, जन्म-मरण की भयकर वेदना से पीडित हुई आत्मा को जिनवाणी रूपी ओषधी से स्वस्थ बनाने वाले हमारे धर्म गुरु हे। जिनवाणी रूपी अमूल्य रत्न को गुरु द्वारा प्राप्त करके उसे अपने जीवन मे जिस किसी ने भी धारण कर लिया है, वह आत्मा अबाध हो गई, धन्य-धन्य बन गई है। ऐसी अमूल्य कामकुम्भ, कामधेनु ओर कल्पवृक्ष के समान करुणानिधि, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तीर्थकर परमात्मा के द्वारा प्राप्त भवरोग निवारिणी जिनवाणी को सभी भव्यात्मा आत्मसात कर परमपद की प्राप्ति का प्रयास करे। ये पुण्य से प्राप्त कामकुम्भ, कामधेनु और कल्पवृक्ष तो मात्र इह लोकिक, बाह्य व्याधि और उपाधि से मुक्त कर सकते ह लेकिन जिनवाणी रूपी कामकुम्भ, कामधेनु ओर कल्पवृक्ष जो हमे प्रबल पुण्य से प्राप्त हो रहा है, वह ता इहलोकिक परलौकिक और पारलौकिक परम सुखो को प्राप्त कराने वाला है।

भवरोग निवारिणी जिनवाणी को सभी भव्यात्मा आत्मसात कर परमपद की प्राप्ति का प्रयास करे। यही मगल भावना। ☆

सद्‌गति का द्योतक : सद्‌बुद्धि

साध्वी श्री पूर्णकला श्री जी म.सा.
(महत्तरा सा सुमगला श्री जी की प्रशिष्या)

वर्तमान स्थिति में जीने वाले मानव मन की धारणा को लेकर ज्ञानी पुरुषों का कथन व अनुभव है कि पुण्य का उदय धन सम्पत्ति से नहीं, सद्‌बुद्धि है और पाप का उदय गरीबी नहीं, परन्तु दुर्बुद्धि है।

हंस और बगुला दोनों एक ही सरोवर मे अपना जीवनयापन करते हैं, दोनों के रंग रूप भी समान हैं, लेकिन दोनों की प्रकृति में अन्तर। सब कुछ समान होने के बाद भी प्रकृति का कितना अन्तर है। एक उस सरोवर में से मोती का चारा चुगता है तो दूसरा कीडे-मकोडों का।

इस संसार रूपी सरोवर में जन्म लेकर मानव सम्पत्ति से अमीर गरीब जरूर बन सकता है, लेकिन धर्मी व पापी तो अपनी बुद्धि से ही वनता है। पुण्य का उदय संपति सत्ता या संतति नही सद्‌बुद्धि होती है। जिसके पास संपति नहीं हो लेकिन सद्‌बुद्धि हो तो वही सच्चा पुण्यवान माना जाता है।

आज इस दुनिया में धन सम्पत्ति से अनेकों करोडों पति, अरबोंपति बन गये हैं और वन रहे हैं लेकिन जिन्होंने अपनी संपत्ति का सद्‌बुद्धि से सुकृत में सद्‌व्यय कर इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से अपना नाम लिखवाकर सद्‌गति व सिद्धगति की ओर आत्मा को अग्रसर किया है वे आत्मा पुण्यवान वनी है।

परन्तु वे आत्मा पुण्यवान नहीं है जिन्होंने करोडोंपति, अरबोंपति बनने का सौभाग्य तो प्राप्त कर लिया है लेकिन प्राप्त सम्पत्ति का एकमात्र दुर्बुद्धि से भोगवृत्ति में ही सदा उपभोग किया है, उन्होंने अपने नाम पर कालीमां पोत कर दुर्गति की ओर ही अपनी आत्मा को धकेला है।

सस्कृत श्लोक में कहा है—

पुण्यस्य फलमिछन्ति, पुण्यं नेच्छति मानव;
पापस्य फलं नेच्छन्ति, पाप कुर्वान्ति सादरः।

आज के मानव को पुण्य का फल भोगना तो बहुत अच्छा लगता है, परन्तु पुण्य के काम करने में उसकी रूचि नहीं है। दूसरी तरफ पापों के अशुभ फल को भोगना कठिन है, परन्तु पाप कार्यो को दिन-रात करने में रूचिपूर्वक लगा रहता है। ये तो इस प्रकार की कहावत होती है— नीम के बीज को बोकर आम के मधुर फल की इच्छा करना। सचमुच में भाग्यवान तो बना भरतचक्रवर्ती था। चक्रवर्ती के पास कितनी कितनी रिद्धि-सिद्धि होती है यह जानकर आपको आश्चर्य होगा। एक चक्रवर्ती के पास 96 करोड पैदल लश्कर होता है, 64 हजार रानियां होती है, एक-एक रानी के साथ दो-दो दासियां होती है। उसकी रसोई में प्रतिदिन चार करोड मन अनाज पकता है, दस लाख मन नमक लगता है, तीन करोड गायें रोज दूध देती है उसके पास चौदह रत्न होते हैं, जो आटोमेटिक

कार्य करते है जिनके आगे आजकल के वैज्ञानिक साधनो की भी कोई शक्ति नहीं । नवविधियो का स्वामी होता है, जिन रत्नो की रक्षा दो हजार देवता करते है दो हजार अगरक्षक होते है, 32,000 देशो का मालिक होता है और 32000 मुकट बध राजा सेवक होते हे, 84 लाख घोडे, तीन करोड गाये, 84 लाख रथ, 32000 मर्तक, 14000 हजार मत्री, 16000 रत्नो के भडार, 20000 स्वर्ण रजत के भडार, 370 रसोइये, 99 करोड दास-दासी, तीन करोड शस्त्रागार, तीन करोड वैद्य, 8000 हजार पडित और 64 हजार 42 मजिल के महल इससे भी कहीं अधिक चक्रवर्ती की रिद्धि-सिद्धि होती है इतिहास कहता है कि इस प्रकार के 12 चक्रवर्ती होते है और उनमे से दस चक्रवर्ती रिद्धि-सिद्धि का त्याग करके दीक्षा अगीकार कर अक्षय शाश्वत सुख के भोक्ता बने है।

महाराजा भरत भी चक्रवर्ती थे । इतनी ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी होते हुये भी अनासक्त भाव मे रहते थे, भोगी के रूप योगी जीवन जीते थे। धर्म के प्रति रूचि एव प्रीति रखते थे। उन्होने धर्म का प्रतिबोध देने वाले पडित रखे थे। उन्होने उन सब पडितो को कह रखा था कि कभी भी मेरे जीवन मे दुर्बुद्धि का प्रवेश हो जाय और मै राज्य के विजय भोगो मे आसक्त हो जाऊ तो तुम मुझे सावधान करना ।

ऐसे भरत महाराज एक बार अपने राज सिहासन पर विराजमान थे कि एक ही साथ तीन बधाइया आती है । वनपालक ने आकर कहा महाराज की जय हो विजय हो । महाराज चक्रवर्तीपद की प्राप्ति के लिए देव प्रतिष्ठित चक्ररत्न आपको प्राप्त हो रहा है आप पधारे और चक्ररत्न की पूजा करे । इतने मे उद्यानपालक आकर महाराज भरत की जय हो, विजय हो, महाराज। आपको बधाई है महाराज । पुरिमताल उद्यान म आपके पिताश्री मुनि को केवलज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति हुई है अत आप केवलज्ञान महोत्सव मनाने के लिये पधारे । तो इधर अन्त पुर से एक दासी खुशी से झूमती आकर कहा महाराज की जय हो, महाराज की विजय हो । महाराज ! आपको खूब-खूब बधाई है, अन्त पुर मे पट्टरानी जी ने पुत्ररत्न को जन्म दिया है । महाराज। पुत्र जन्मोत्सव मनाने पधारे । एक ही समय मे तीन शुभ समाचार आ जाने पर महाराजा भरत सोच मे पड़ गये कि मै पहले कौनसा महोत्सव मनाऊँ ! चक्ररत्न का, पुत्ररत्न का या केवलज्ञान का ? मान लो-यह स्थिति आज के मानव के साथ बने तो वह क्या करे। सबसे पहले सपति सन्तान उसके बाद सन्त । लेकिन भरत महाराजा की बुद्धि सद्बुद्धि थी, इसी कारण उनके कदम चक्ररत्न और सतान के महोत्सव को मनाने की ओर प्रवृत्त नहीं हुये । परन्तु पिता मुनि को केवलज्ञान, केवलदर्शन की प्राप्ति हुई हे । उस केवलज्ञान महोत्सव को मनाने के लिए पहले तैयार हुये । क्योकि पुण्यकर्म को सद्व्यय करने की सुबुद्धि भरत महाराजा के पास थी। इसी कारण चिन्तन किया, अरे मेरे भाग्य मे लिखा हुआ है चक्रवर्ती बनना तो ये चक्ररत्न कहीं जाने वाला नहीं है, पुत्र का जन्मोत्सव तो बाद मे भी मना लूगा लेकिन ये पुण्यपल केवलज्ञान महोत्सव मनाने का अवसर निकल गया तो मुझे दुबारा मिलने वाला नहीं है। अत मुझे सबसे पहले

मुनि पिताश्री को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है उस महोत्सव में जाना है । भरतचक्रवर्ती के पास चक्रवर्ती का प्रबल पुण्य भी प्राप्त था तो पुण्यकर्म के सही उपयोग की सदबुद्धि भी उसके पास थी।

ऐसे व्यक्तियों के कथानकों से इतिहास भरा है, जो महान सम्पत्ति शाली थे और जो सुबुद्धि के बल पर धन का, तन का और समय का सदुपयोग कर दुनियां में अमर हो गए। जगडुशाह के पास कोई कम सम्पत्ति नहीं थी, परन्तु जब भारत पर दुष्काल के बादल घिरने लगे तो उसने अपनी तिजोरियां व अनाज के भंडार खोलकर देशवासियों के लिए लुटा दिये । आज का मानव महा आरम्भ के साधनों को एकत्रित करके हर्षित होता हुआ कहता है कि मै धनवान हूँ मेरे पास बंगला है, चार पांच कारें खडी है, मेरे पांच छः कारखाने चल रहे हैं, मै कितनी चतुराई व होशियारी वाला हूँ कि मैं आये ग्राहक को अपना बना लेता हूँ। इस प्रकार के अभिमान से अकड-अकड़कर चलता है। लेकिन प्रभु महावीर की वाणी कहती है ये तुम्हारा अभिमान का अजगर ही तुम्हें निगल रहा है। तुम्हारी दुर्बुद्धि ही दुर्गति का द्वार बन रही है।

इसी दुर्बुद्धि ने रावण को दुर्गति में भेजा और लंका का ध्वंस करवाया था। तो सुबुद्धि के कारण ही संत बनकर के अभय कुमार ने सिद्धत्व को प्राप्त किया था। एक विद्यार्थी ने सुप्रसिद्ध एक महान चित्रकार से पूछा- महाशय, आप रंग किस चीज से मिलाते हैं आपके रंग बडे ही सुन्दर होते हैं। चित्रकार ने सहज भाव से उत्तर दिया-बुद्धि से मिलाता हूँ।

वस्तुतः जीवन-क्षेत्र में प्रत्येक काम करने से पहले मनुष्य को बुद्धि की अपेक्षा है। बुद्धि ही कृति में सुन्दरता लाती है।

अतः मानव इस दुनिया का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसे अपने अनुकूल प्रतिकूल संयोग में भी सुबुद्धि से ससम्मानित होकर जीना चाहिये। मानव जीवन की यही सच्ची सफलता और सार्थकता है।

**तलवार की कीमत म्यान से नहीं, धार से होती है।
कपडे की कीमत रंग से नहीं, तार से होती है,
कहीं भी देखो, महत्त्व मूल का होता है, पत्तों का नहीं,
आदमी की कीमत संपत्ति से नहीं सुबुद्धि से होती है।**

☆

पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है—भलीभांति निवास करना। भावात्मक अर्थ है— दैहिक अनुभूति से मुक्त बनकर वैदेहिक (आत्मिक) अनुभूति में भली भांति अवस्थित होना या उसके लिए सक्रिय बनना। मुमुक्षु के लिए सब दिन पर्युषण के होते हैं। अमुमुक्षु के लिए एक क्षण भी पर्युषण का नही होता।

गुरु आरती-सरलार्थ सहित

सा पूर्ण नन्दिता श्री जी म सा , अजमेर
(महत्तरा साध्वी सुमगला श्री जी म की प्रशिष्या)

ओम् जय-जय गुरुदेवा, दादा जय-जय गुरुदेवा
पुण्य नु पोषण होवे, पापनु शोषण होवे
करिए गुरु सेवा ॥ 1 ॥ ओम् जय

वीर जिनेश्वर गणधर, गुरु गौतम स्वामी (दादा)
सुरनर सूरिवर ध्यावे (2) दु खहर सुखधामी ॥ 2 ॥ ओम् जय

सूर्य किरण आलम्बन लेकर, अष्टापद फरसे (दादा)
जग चिन्तामणि रचना (2) अगूठे अमृत बरसे ॥ 3 ॥ ओम् जय

जगत्गुरु विजय हीर सूरीश्वर, जिन शासन राजा (दादा)
सहुगच्छ कीरती गावे (2) तपगच्छ सरताजा ॥ 4 ॥ ओम् जय

जिनधर्म मर्म समझाकर सद्‌गुरु अकबर प्रतिबोधे (दादा)
तीरथ पट्टा पाकर (2) जीवहिसा अवरोधे ॥ 5 ॥ ओम् जय

न्यायभोनिधि विजयानद सूरी, नवयुग निर्माता (दादा)
ग्रन्थ पूजाए स्तवन अनेको (2) निरखी मन हरषाता ॥ 6 ॥ ओम् जय

जिन पूजा आगम अनुसारी, सबको समझाई (दादा)
सवेग धर्म की विजय वैजयन्ती (2) जग मे लहराई ॥ 7 ॥ ओम् जय

नित-नित नियमित आरती, सद्‌गुरु की कीजे (दादा)
बिन मागे सब पावे, (2) धन सुत यश लीजे ॥ 8 ॥ ओम् जय

क्रमश

सरलार्थ—

गाथा—1

प्रणवाक्षर संयुक्त सदाजयी गुरु भगवन्तों की निष्काम भाव से सेवा करो जिससे पुण्य का पोषण एवं पाप कर्मो का शोषण होता है।

गाथा—2

वीर जिन के आद्य गणधर श्री गौतम स्वामी तमाम दुःखों के हर्ता एवं सुख समृद्धि के दायक हैं जिनका ध्यान सुर, नर एवं सभी आचार्य भगवंत करते हैं।

गाथा—3

भगवान महावीर की आज्ञा से गौतम स्वामी का अष्टापद जाना, सूर्य किरणें पकड़ तीर्थ पर चढना, जगचिंतामणि चैत्यवंदन की रचना एवं वापस आते समय अंगूठा रखकर 1500 तापसों को खीर का पारणा एवं प्रतिबोध देना आदि सम्पूर्ण घटनाक्रम इस गाथा के द्वारा हमारे मानस विवर में सजीव हो उठता है।

गाथा—4-5

तपागच्छाधिराज जगद्गुरु हीर सूरीश्वर जी महाराज का सभी गच्छानुयायी यशोगान करते हैं। जिन धर्म का मूल अर्थात् अहिंसा, दया धर्म का उपदेश देकर जिन्होंने मुगल सम्राट अकबर को प्रतिबोधित कर वर्ष में छः माह आमारी प्रवर्तन की घोषणा के साथ शत्रुंजय आदि तीर्थो का अधिकार श्वेताम्बर संघ के अधीन किया।

गाथा—6-7

नवयुग निर्माता न्यायाम्भोनिधि विजयानंद सूरि (आत्माराम जी) महा. ने अनेकों ग्रन्थ, स्तवन, पूजाओं की रचना कर शासन की महत्ती सेवा की। जिन पूजा को आगमानुसारी सिद्धकर लाखों लोगों को शुद्ध मार्ग का अनुयायी बनाया। इस प्रकार संवेगमत की विजय ध्वजा जगत् में अमेरिका तक लहराई।

गाथा—8-9

मंगल आशीष देकर वरदाई अर्थात् जगत् में जो भी श्रेष्ठ प्राप्तव्य है सहज रूप प्रदान करने वाले सद्गुरुओ की पूजा, स्तवना, आरती रूप भक्ति हृदय के उल्लासपूर्वक नित्यप्रति नियमित करने से धनलाभ, धर्मलाभ की वृद्धि होती है, दुःख दोह का समूल नाश होता है। बिन मांगे समस्त आवश्यकताओं तथा कामनाओं यथा- धन, पुत्र, कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है।

अपने हृदय को शासन का हृदय बनाकर प्रत्येक व्यक्ति को उपरोक्त महापुरुषों के प्रति अहोभाव से भरकर यह विचारणा चाहिए कि मैं तमाम गुरुदेवों की आरती कर रहा हूँ। गाथा नं. 2 से 7 के द्वारा गुरुत्रयी (1) गौतम स्वामी (2) हीर सूरी जी (3) विजयानंद सूरीजी की स्तुति होती है। गाथा नं. 8 व 9 में गुरुपद की स्तुति है जिससे हमें अतीत, अनागत, वर्तमान के सभी गुरुओं की आरती का महालाभ मिलता है।

गुरु हमारे पथ प्रदर्शक हैं इनकी भक्ति से अज्ञान का नाश होकर विनयगुण प्रकट होता है। हमारा स्वर कैसा भी हो राग कैसा भी हो लेकिन भाव यदि समर्पण के है तो भवरोग मिटते देर नहीं लगती। बड़ी पूजा एवं भक्ति जागरण नित्य नहीं हो पाते परन्तु उनकी आरती नित्य नियमित रूप से संभव है। प.पू. गुरुवर्य्या महत्तरा साध्वी सुमंगला श्री जी म. की सद्प्रेरणा से इसकी रचना की गई है। अधिकाधिक लाभ लेकर हम भक्तिमार्ग मुक्ति मार्ग में अग्रसर होवें यही भावना.....

अहिंसा की अखण्ड ज्योति:

भगवान अरिष्टनेमि

सुश्री सरोज कोचर
व्याख्याता श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर

जैन सस्कृति और धर्म का आज जो सुविकसित एव परिष्कृत स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है उसमे तीर्थंकरो की समृद्ध परम्परा का मौलिक योगदान रहा है। इस श्रृखला के आदि उन्नायक भगवान ऋषभदेव एव अतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी थे। सभी तीर्थंकरो के द्वारा मौलिक आदर्शो, सिद्धान्तो सर्वजन हिताय की भावना के साथ विराट् अनुकरणीय मानव जीवन और व्यवहार का प्रतिपादन किया गया है। विराट् भूमिका का निर्वाह करने वाले उन्हीं तीर्थंकरो के सिद्धान्त कालान्तर मे युग की अपेक्षा के अनुरूप परिवर्धित, विकसित, पुष्ट होते गये। उसी तीर्थंकर परम्परा मे करुणावतार, पर दु ख निवारक, विश्वबन्धुत्व की उज्ज्वल उदात्तता के धारक 22वे तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) हुए।

अहिसा की अखण्ड ज्योति जागृत करने वाले भगवान अरिष्टनेमि का वेद, पुराण, उपनिषद् इतिहासकरो की दृष्टि मे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। ऋग्वेद मे अरिष्टनेमि शब्द का चार बार प्रयोग हुआ है। यह अरिष्टनेमि शब्द सम्भवतया भगवान अरिष्टनेमि के लिये प्रयुक्त हुआ है। यजुर्वेद एव सामवेद मे भगवान अरिष्टनेमि के लिए तार्क्ष्य अरिष्टनेमि शब्द का प्रयोग हुआ है। यजुर्वेद मे अरिष्टनेमि का उल्लेख करते हुए इस प्रकार का वर्णन है कि "अध्यात्म यज्ञ को प्रकट करने वाले, ससार के भव्य जीवो को सब पकार से उपदेश देने वाले और जिनके उपदेश से जीवो की आत्मा बलवान होती है उन सर्वज्ञ नेमिनाथ के लिए आहुति प्रदान करता हूँ। छान्दग्योपनिषद् मे अरिष्टनेमि के नाम के स्थान पर घोर आगिरस ऋषि शब्द का प्रयोग हुआ है। इन घोर आगिरस ऋषि ने श्रीकृष्ण को आत्मयज्ञ की शिक्षा प्रदान की थी। सम्भवतया घोर आगिरस भगवान नेमिनाथ का ही नाम था। यह श्रमणो के आचार एव तप की उग्रता को बताने का द्योतक है। महाभारत मे भी तार्क्ष्य शब्द का नाम आया है जो कि भगवान अरिष्टनेमि का दूसरा नाम प्रतीत होता है। पुराणो मे भी अरिष्टनेमि के उल्लेख के साथ स्तुति की गई है।

प्रसिद्ध है कि आपका जन्म यादव कुल के प्रतापी सम्राट महाराज समुद्रविजय की पत्नी रानी शिवा देवी की कुक्षि से श्रावण शुक्ला पचमी को हुआ। गर्भावस्था मे माता ने स्वप्न मे अरिष्ट

रत्नमय चक्र-नेमि देखा था अतः पुत्र का नाम 'अरिष्टनेमि' रखा गया। बलराम एवं श्रीकृष्ण इन्हीं अरिष्टनेमि के चचेरे भाई थे। अरिष्टनेमि निवृत्तिपरायण थे तो श्रीकृष्ण प्रवृत्ति परायण।

अवधिज्ञान के धारक कुमार अरिष्टनेमि जहां बालकोचित लीलाधारी थे वहीं पर उनके प्रत्येक कार्य में मति सम्पन्नता एवं अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन होता था। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भविष्य में यह बालक शक्तिशाली एवं अलौकिक होगा। एक बार राजमहल में अरिष्टनेमि खेल रहे थे। खेल ही खेल में वे मोतियों की मुट्ठियां भर कर आंगन में उछालने लगे। माता शिवा देवी अनुचित कार्य करने पर जैसे ही अपने पुत्र को रोकने के लिए सन्नद्ध होती है वह देखती है जहां-जहां मोती गिरे वहां मुक्ता राशि से युक्त सुन्दर वृक्ष उग आये। आश्चर्यचकित माता पुत्र से कहती है और मोती बो दो। तब कुमार ने कहा समय पर बोये हुए ही मोती फलदायी होते हैं।

इसी प्रकार अद्वितीय शक्तिशाली कुमार एक बार श्रीकृष्ण के शस्त्रागार में जाते हैं। वहां रखे श्रीकृष्ण के कांतिपूर्ण सुदर्शन चक्र को देखकर उन्हें ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण ही इस चक्र को उठा सकते हैं अन्य कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता। यह सुनते ही कुमार अरिष्टनेमि ने उस चक्र को अंगुलि पर उठाकर चक्रित किया। आयुधशाला के कर्मचारियों ने घबराकर कहा आप रुक जाये भयंकर अनर्थ हो जायेगा। यह सुनकर कुमार ने चक्र रख दिया। तत्पश्चात् आयुधशाला मे घूमकर अन्य वस्तुओं को देखने लगे तभी उनकी दृष्टि पांचजन्य शंख पर जाती है। उन्होंने उसे फूंका। फूंकने पर दिव्यशंखध्वनि से द्वारिकापुरी गुंजायमान हो गई। श्रीकृष्ण शीघ्रता से आयुधशाला में आते हैं और हतप्रभ आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि कुमार नेमि उनके धनुष शारंग को टंकार रहे थे। इस प्रकार कुमार नेमि के जीवन के अनेकों प्रसंग हैं जिनसे दिव्यता, शक्तिसम्पन्नता एवं विशिष्ट प्रतिभा का परिचय होता है।

युवावस्था आने पर माता-पिता पारिवारिक सम्बन्धियों ने अरिष्टनेमि के समक्ष अनेक बार विवाह का प्रस्ताव रखा पर अरिष्टनेमि द्वारा नकारात्मक प्रत्युत्तर पाकर वे निराश हो जाते हैं। अन्ततोगत्वा श्रीकृष्ण की रानियों के अनेक प्रयत्नों के साथ उनकी दीन प्रार्थना को सुनकर कुमार किंचित मुस्कुरा पडे थे। अतः रानियों ने यह समाचार प्रसारित कर दिया कि कुमार ने विवाह की स्वीकृति प्रदान कर दी है।

अवसर पाकर राजा उग्रसेन की पुत्री राजीमती के साथ कुमार का विवाह तय होने पर यथासमय वर अरिष्टनेमि का अनुपम श्रृंगार कर वस्त्राभूषण से सजाकर उन्हें विशिष्ट रथ पर बारात के लिए आरुढ़ किया गया। समुद्रविजय सहित समस्त दशार्ह, श्रीकृष्ण, बलराम और समस्त यदुवंशी उल्लसित मन के साथ अपार वैभव एवं शक्ति का परिचय दे रहे थे। बारात की शोभा शब्दातीत थी। स्वयं देवताओं में भी इस शोभा का दर्शन करने की तीव्र उत्कंठा थी। हर्षोल्लासपूर्वक बारात गन्तव्य स्थल की ओर अग्रसर हो रही थी। अनुपम, अनिंद्य सुन्दरी राजीमती अपने वर के दर्शनार्थ अत्यन्त व्याकुल हो रही थी। इधर उसके

मन मे आभ्यन्तिरक उल्लास था उधर एकाएक दाहिनी भुजा एव दाहिनी आख के फडकने से वह इस अपशकुन से चिन्ता सागर मे निमग्न हो गयी। भावी अनिष्ट की कल्पना से कापने पर सखिया उसे धैर्य बधाते हुए उसकी आशका को मिथ्या बताती है।

शनै शनै उत्साहपूर्वक बारात उग्रसेन के राजभवन के पास पहुचती है। विवाह का समय निकट आता है पर कहा भी गया है—भविताव्याना द्वाराणि सर्वत्र भवन्ति" अर्थात् होनहार के द्वार सर्वत्र होते है कुमार अरिष्टनेमि के भाग्य का लेख तो कुछ ओर ही था। अत राजभवन के समीप एकत्रित किये गये पशु-पक्षियो के करुण-क्रन्दन को सुनकर कुमार का हृदय द्रवित हो जाता है। पूरे समाचार को जानने पर उन्हे ज्ञात होता है कि विवाह के उपलक्ष्य मे जो विशाल भोज दिया जायेगा उसमे इन्हीं पशु-पक्षियो का मास प्रयुक्त होगा। इससे कुमार के मन मे करुणा का भाव अत्यधिक प्रबल हुआ अत वधूगृह मे बारात के भोजन के लिए बधे हुए, मरणासन्न निरीह पशुओ का चीत्कार सुनकर उन्हे आत्मग्लानि होती है और वे वहीं पर दया से द्रवीभूत होकर रथ को लौटाते है।

रागी की सगत को छोडी,
राग भरा जग छोड दिया।
बाल ब्रह्मचारी नेमि ने,
ससार का बधन तोड दिया।
शादी करने जब आये तब,
चारो तरफ थी खुशियाली,
पशुओ की पुकार सुनी
तब उसी मुख पर की लाली,
ज्ञानी भाव मे डूबकर सोचे शादी मे
कत्ल होने वाली दिल मे छूट दया की धारा,
तोरन से रथ मोड लिया।

कुमार नेमिनाथ के रथ को लौटता देखकर सब विचलित होते है। उनको रोकने का प्रयत्न करते है पर वे नहीं मानते, लौट जाते है। इधर राजकुमारी राजीमती यह समाचार सुनकर रोती है मूर्च्छित हो जाती है। अरिष्टनेमि को मन से अपना पति मानने के कारण सबके समझाने पर भी वह अन्य किसी पुरुष की कल्पना पति के रूप मे नहीं करती है। सबके समझाने पर भी वह अन्य पुरुष को पति के रूप मे पाप के समान समझकर सासारिक भोगो को तिलाजलि दे देती है।

भावी हिंसा से उद्विग्न अरिष्टनेमि विवाह को अधर मे छोड़कर राजमहल मे निवास नहीं करते है अपितु परमार्थ सिद्धि की साधना मे लीन होते है। मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होने वाले अरिष्टनेमि को दीक्षा ग्रहण करते ही मन पर्यवज्ञान की प्राप्ति होती है। तत्पश्चात् केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। यह शुभ समाचार प्रियतम के वियोग मे अवर्णनीय कष्टमय समय को व्यतीत करने वाली राजीमती को ज्ञात होता है तो इस शुभ सवाद से जहा वह हर्ष विह्वल होती है वहीं पर सासारिक सुखो का त्याग कर स्वय भी दीक्षा ग्रहण करती है।

इस प्रकार पशुओ के करुण क्रन्दन से, करुणा भाव से ओत-प्रोत होकर सासारिक जीवन से मुख मोडकर अरिष्टनेमि तो अपने आयु, नाम,

गोत्र और वेदनीय कर्मों का नाश कर निर्वाण पद प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो गये। पर भगवान अरिष्टनेमि के युग का गहनतापूर्वक अध्ययन, मनन चिन्तन किया जाये तो यह स्पष्ट होता है कि उस युग के क्षत्रियों में मांसभक्षण की पैशाचिक प्रवृत्ति अत्यधिक थी। पर इस क्रूर प्रवृत्ति से विरत करने हेतु अरिष्टनेमि ने जो पद्धति अपनाई वह अलौकिक थी। विवाह किये बिना लौटने के त्याग ने एक बार सभी को झकझोर दिया। आत्मालोचन के लिये विवश एक महान राजकुमार का दूल्हा बनकर जाना और विवाह किये बिना लौटने के त्याग ने पूरे समाज को झकझोर दिया, आत्मालोचन के लिए विवश कर दिया। अहिंसा के दृढ संस्कारों ने हिंसक प्रवृत्ति के लोगों की आंखें खोल दी अपने दायित्व और कर्त्तव्य का भान कराया। अहिंसा की संकीर्ण परिधि को विशालता प्रदान की। उनके इस त्याग ने अनेकानेक व्यक्तियों को निवृत्ति प्रधान बनाकर आत्म विकास के सोपान पर आरूढ किया।

आज भौतिकता की चकाचौंध के युग में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। सर्वत्र अशांति, अवसाद एवं तनाव के काले बादल मंडरा रहे हैं। हमारा खान-पान, आचार, विचार सब दूषित होते जा रहे हैं। क्षमा और करुणा की फुहार के स्थान पर हिंसा एवं द्वेष की फुहार बरस रही है। खाओ और खाने दो, पीओ और पीने दो के नारे बुलन्दगी के साथ कर्णपथ पर आते हुए सुनाई दे रहे हैं। भोग परक संस्कृति होने के कारण विवेक समाप्त हो रहा है। विवेक का दीपक बुझ जाने से आचरण अन्धा होता जा रहा है। मांस भक्षण, रात्रि भोजन, मदिरापान, जुआ खेलना आदि को फैशन या आधुनिकता का जामा पहनाया जा रहा है। हिंसा प्रधान प्रवृत्तियों के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों को अनुकूल एवं श्रेष्ठ बनाने हेतु आवश्यकता है अहिंसा के अजस्र स्रोत प्रभु नेमिनाथ के दिव्य जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर जीवन पथ पर आगे बढने की। हमें भी अहिंसक प्रवृत्तियों से मुक्त सरिता की उस धारा को तीव्र करना है जो हिंसक जीवन की सम्पूर्ण मलिनता को स्वच्छ कर दे। क्योंकि अहिंसा से क्रूरता, निर्दयता, निर्ममता, आदि वृत्तियां समाप्त होती है वहीं पर इससे विवेक शक्ति, संकल्प शक्ति आदि सम्पूर्ण बौद्धिक शक्तियों का विकास होता है। जिससे हम भी पैशाचिक प्रवृत्ति का त्याग कर मानव से महामानव बनने के क्रम में अग्रसर होते हुए अशुभ से शुभ, शुभ से शुद्ध के आरोहण के क्रम में अग्रसर होवें।

यही शुभेच्छा। ☆

> आत्मा शान्त सुधारस का कुण्ड है, ज्ञानादि गुणरत्नों की खान है, अनन्त समृद्धि का घर और शिवमंदिर का सोपान है। आत्मा ही परम देव है, परम गुरु है।

गुरु एवं गुरु प्रतिमा पूजन

श्री आशीष जैन, जयपुर

स्वतत्र भारत शासन तीन अगो मे विभक्त है —

1 विधायिका (ससद)- कानून बनाना

2 कार्यपालिका (सरकार)- कानून के मुताबिक शासन सचालन

3 न्यायपालिका (अदालत)- कानून भग का दण्डादि निर्धारण ।

ठीक इसी प्रकार जयवन्ता जिनशासन के भी तीन अग है -

1 देव (ससद)- सिद्धान्त की प्ररुपणा

2 गुरु (सरकार)- जिनाज्ञानुरुप शासन सचालन

3 धर्म (अदालत)- मार्गानुसार कृत्याकृत्य का बोध ।

भारत शासन एव जिनशासन के यह तीनो ही अग बराबर है फिर भी व्यवहार मे सरकार का महत्त्व एव भूमिका सर्वाधिक है इसी प्रकार जिन शासन मे भी विहरमान तीर्थकर या तीर्थकर के विरहकाल मे गुरु भगवन्तो का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है । इक्कीस हजार वर्ष तक निर्बाध रूप से प्रवाहमान जिनशासन की सुदीर्घ परम्परा गुरु भगवन्तो द्वारा ही चलेगी, जिसके नायक पच परमेष्ठि मे मध्यपद धारक सूरि भगवन्त होगे । शास्त्रकारो ने 'तित्थयर समो सूरी' (सबोध सित्तरी) का जयघोष कर उनकी महत्ता एव सत्ता मे सशय को तनिक भी अवकाश नहीं दिया है।

स्वय केवली भगवन्तो ने अपने आचरण से गुरु महत्ता का मौन उपदेश दिया है । चडरुद्राचार्य के शिष्य मुनि केवलज्ञान के उपरान्त भी गुरु को यह नहीं कहते कि 'मै तो केवली हो चुका हूँ, आप नीचे उतरिए' इसी तरह चन्दना-मृगावती आदि के प्रसग गुरु महत्ता प्रतिपादित करते है। अनेक प्राचीन अर्वाचीन गुरु मदिर, गुरुमूर्तिया, पादुकाए स्तवन, गहुँली आरती इसके जीवन्त प्रमाण है ।

जड़-चेतन, ससार मोक्ष का भेद बताकर वीतरागत्व को समझाने वाले सद्गुरु हमारे सिरछत्र है । इनकी कृपाछाया मे धर्माराधना के साथ हम निश्चित होकर सासारिक दायित्व निभा रहे है । जो कठिन कार्य देव-देवियो की दीर्घसमय तक की गई साधना, भक्ति, मनौती से नहीं होता वह गुरु आशीष से सहज एव शीघ्र सिद्ध हो जाता है ।

मिथ्या सुख की लालसा, दिशाबोध की कमी के कारण वर्तमान मे हमारा आकर्षण देव-देवियो के प्रति उत्तरोत्तर अधिक हो रहा है। उनके पूजन, हवन, स्तवन, आरती आदि मे जिस दीवानगी का प्रदर्शन करते है वह शासन स्तम्भ गुरुदेवो की पुण्य तिथी आदि अवसरो पर महज औपचारिकता के लिए भी दिखाई नहीं देती ।

गुरु बने बिना अनत आत्माए मोक्ष गई है,

किन्तु गुरु बिना एक भी आत्मा न तो मोक्ष गई है न ही जाएगी। अनन्य उपकारी गुरुदेवों की महत्ता शास्त्र, श्रद्धा, तर्क एवं इतिहास सम्मत होने पर भी कई महानुभाव गुरुभक्ति जैसे बडी पूजन आदि में संकोच करते हैं। समवर्ती किसी परम्परा में तीर्थकर से गुरुपूजन की अधिकता उनकी विमुखता का कारण है। किसी प्रवृत्ति में यदि त्रुटि हो तो उसे उपेक्षित या त्याग देना उचित नही है। धान में यदि कंकर हो तो उसे फैंका नहीं बल्कि साफ किया जाता है। अतः दोष को दूर कर, भावी विकृति की आशंका का भय छोडकर गुरुपूजन आदि में उल्लासपूर्वक भाग लेना चाहिए। यह सर्वथा निर्विवाद है कि वीतराग देव का स्थान सर्वोच्च है लेकिन गुरु ही तो हमारे आसन्न उपकारी हैं। आज यदि अविछिन्न गुरु परम्परा न होती तो जिनशासन भी हमारे पास न होता।

जिनशासन में कहीं व्यक्ति पूजा नही अपितु गुणपूजा है। गुण का कोई पृथक अस्तित्व नहीं है। निराकार गुण गुणी में साकार होता है अतः गुण पूजा हेतु गुणी का आलम्बन अनिवार्य है। गुरु प्रतिमाएं एवं उनका पूजन गुरुपद गुण पूजन ही है। व्यवहारिक रूप से जिनकी प्रतिमा विराजित होती है उनको ही लक्ष्य कर स्तुति, स्तवन पूजनादि होता है लेकिन तत्वज्ञ श्रावक के लिए वह गुरुपद अर्थात तीनों काल की अपेक्षा से समस्त गुरुदेवों का पूजन है।

तुच्छ कामनाओं हेतु की गई भक्ति आत्मा के लिए श्रेयस्कर नहीं है। प्रभु गुरु भक्ति से लौकिक एवं लोकोत्तर दोनों फल मिलते हैं, लेकिन हमारी भक्ति सम्यक् एवं निष्काम होनी चाहिए।

शास्त्रों में गुरु देरी, स्तूप आदि का उल्लेख प्रभु श्री ऋषभदेव के समय का मिलता है। जंबूद्वीप पन्नति, आवश्यक निर्युक्ति, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र टीका, हेमचन्द्राचार्य कृत आदीश्वर चरित्र, आचार दिनकर आदि अनेकानेक ग्रंथों में गुरु देरी आदि एवं उनके स्थापना मंत्रादि का उल्लेख है। विशेष ज्ञातव्य है कि हेमचंद्राचार्य की प्रतिमा उनके जीवनकाल में ही भराई गई थी।

मथुरा नगरी में आचार्यो के 527 स्तूपों का उल्लेख मिलता है। वर्तमान में भी सुधर्मा स्वामी से अद्यावधि तक आचार्यो की प्रतिमाएं, चरण पालीताणा (केसरिया जी मंदिर) एवं गिरनार पर्वत पर हैं। वल्लभीपुर में श्री देवर्द्धिगणि आदि 500 आचार्यो की मूर्तियां हैं। प्रत्येक तीर्थनगर में प्रायः गुरुप्रतिमा-पादुका होती है जिनकी प्रतिदिन अष्टप्रकारी पूजा, आरती आदि द्रव्यपूजन भावपूजन कर लाखों श्रावक स्वयं को धन्य मानते हैं।

गुरु प्रतिमा पूजन सभी गच्छों समुदायों में मान्य एवं न्यूनाधिक रूप से प्रचलित है। तपागच्छ में गुरु प्रतिमा एवं उनका पूजन दीर्घकाल से ही होता रहा है। सवाई हीरला श्री विजय सेन सूरि महाराजा ने स्पष्ट कहा है कि जिनपूजा के पश्चात मंदिर में विराजित गुरु पादुका-प्रतिमा को चंदन पुष्पादिक से पूजन करनी चाहिए। (सेन प्रश्न)

शास्त्रोल्लेख, ऐतिहासिक प्रमाणों तथा तपागच्छपति के निर्देश के उपरान्त इस विषय में किञ्चित मात्र संदेह शेष नही रहता। प्रभुपूजा के बाद उसी श्रद्धाभाव से गुरुप्रतिमा की उत्तम द्रव्य से अष्टप्रकारी पूजन करना चाहिए।

पुरानी प्रवृत्तियों को वेग देना नई प्रवृत्ति

का सूत्रपात होना प्रगतिशील समाज की पहचान है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार रीति-पद्धति मे परिवर्तन एव परिवर्धन स्वाभाविक है। वर्तमान प्रणाली की प्रभु पूजाआ के आधार पर गुरुपूजाए भी बनी हे। सोलहवीं से अट्ठारहवीं शती तक तथा पश्चात भी उपा सकलचद्र, विजय लक्ष्मी सूरि, प वीर विजय, रूपविजय, विजयानद सूरी, वल्लभसूरि जी आदि ने स्वरचित पूजाओ मे परमात्मा के जीवन विमर्श एव शास्त्रो के गूढ तत्वा का निरुपण कर, भावपूजा को सगीत का पुट देकर द्रव्यपूजा का भी समावेश किया जो बेहद लोकपिय हुआ। इसी से प्रेरित गुरु पूजाओ यथा गोतम स्वामी महापूजा, एकादश गणधर पूजा, सूरित्रय पूजा, हीर पूजा, विजयानद सूरी पृजा इत्यादि मे गुरुदेवो का जीवन परिचय, शासन सेवा का पद्यमय वर्णन होता हे जिसे गाकर भक्तगण भावविभोर हो जाते है। लगभग 400 वर्ष पूर्व हीर सूरि जी के पौत्र शिष्य मुनि ऋद्धि विजय विरचित हीरसूरि जी की लघु पृजा तपागच्छ मे गुरु प्रतिमाओ के समक्ष अष्टप्रकारी पूजा (अग एव अग्र) का ज्वलन्त प्रमाण है।

प्रभावक पूर्वाचार्यो का गुणगान पूजन जीवन मे उत्साह, उमग, जोश का सचार करता है। जो समाज अपना इतिहास याद रखता है पूर्वजो से नित्य प्रेरणा लेता है वही अपना विकास, गरिमा की सुरक्षा एव वृद्धि कर सकता है। इसी हेतु पूर्वाचार्यों को आदर भक्तिपूर्वक 'दादा' नाम से सम्बोधित कर दिग्गज विद्वानो ने स्तवनादि की रचना की है। कुरचाल शारदा उपा यशोविजय जी रचित हीरसूरि स्तवन मे देखिए-

दौलतदायक श्री गुरु मेरा, दादा हुँ चरण नो दास।
श्री गुरु ना विरुद हे भारी, धरिस ही मन आस॥

कतिपय लोग दादा शब्द किसी समुदाय विशेष का समझते है किन्तु उपरोक्त एव अन्य कई उदाहरणो से स्पष्ट है कि दादा शब्द तपागच्छ मे सदियो पूर्व से आज तक गुरु महिमा का द्योतक है, प्रचलित है। उपा यशोविजय जी के साथ-साथ पूज्य ज्ञानविमल सूरी, फतेन्द्र वि, दयारुचि वि, चेत वि आदि (सभी प्राय समकालीन) वल्लभसूरी, दर्शन वि (त्रिपुरी) आदि मुनिवरो, ऋषभदास (आज देव अरिहत नमू), डागा ऋषभदास आदि श्रावको, महाश्राविका चम्पा (षट्मासी तप) ने गुरुपूजाए, स्तवन, रास आदि की रचना कर निज कवित्व को सार्थक किया है। जब तक शासन रहेगा यह क्रम जारी रहेगा।

हमारी विडम्बना है कि हमे अपने पूर्वाचार्यो के शासनहित दिए बलिदानो, कार्यो की पूर्ण जानकारी नहीं, जानने की जिज्ञासा भी नहीं है। इस कारण हम उन्हे उतना सम्मान नहीं दे रहे या हृदय मे बसे सहज सम्मान को यथोचित रूप से व्यवहार मे नहीं ला पाते। इस स्थिति से व्यथित अजैन कुल मे जन्मे 'मै सिद्धाचल की भक्ति रचा' आदि भावपूर्ण स्तवनो के कर्ता प्रो राम कुमार राव ने जैन समाज को हित शिक्षा देते हुए कहा है कि

हे जैनियो! कुर्बान हो गुरुवर के नाम पर।
कुछ नाज होना चाहिए तुम्हे उनके काम पर॥
गुरुभक्त होना सीखलो तुम सिख कौम से।
हस कर कटा दो शीश तुम उनके पैगाम पर॥

☆

अनमोल वचन

संग्रहकत्री–श्रीमती शान्ती देवी लोढा

1. सुवर्ण पर्वत अथवा रजत पर्वत कैलाश से क्या लाभ जहां पर स्थित वृक्ष वैसे के वैसे रह जाते हैं। धन्य तो मलयागिरि है जिसके आश्रय में कंकोल, नीम और कुटज जैसे कडवे वृक्ष भी चन्दन के समान सुगन्धित हो जाते हैं।
2. नम्रता महान् व्यक्ति की पहली पहचान है।
3. आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं।
4. दान का मतलब ''फैंकना'' नहीं बल्कि ''बोना'' है।
5. क्रोध, लोभ, भय और हास्य में भी पापकारी बोली न बोलो।
6. किसी के गुणों की प्रशंसा करने में समय नष्ट न करो बल्कि उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो।
7. ठंडा जल, चन्दन का रस अथवा ठंडी छाया मनुष्य के लिए उतने शक्तिदायक नहीं जितनी मीठी वाणी।
8. यदि आप गलतियों को रोकने के लिए दरवाजे बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा।
9. जैसे नदी बह जाती है और लौट कर नहीं आती उसी प्रकार रात और दिन मनुष्य की आयु लेकर चले जाते हैं।
10. गलती करने वाला व्यक्ति उतना दोषी नहीं होता जितना कि अपनी गलती को छिपाने वाला।
11. क्रोध का निवास मस्तक में, मान का निवास जीभ में, माया का निवास हृदय में और लोभ का निवास रोम-रोम में होता है।
12. अधिक अनुभव, अधिक मुसीबतें सहन करना और अधिक अध्ययन यही विद्वता के स्तम्भ हैं।
13. संकल्प के मजबूत हाथों में पतवार होने पर नौका नदी ही नहीं सागर भी पार कर सकती है।
14. जव तक आशा है भोगों की योग हाथ ना आवे, मूर्ख दौडता दक्षिण मुखकर, कहां हिमालय पावे।
15. ज्ञान की महिमा निराली, ज्ञान अनुपम दीप है, ज्ञान लोचन के विना नर अन्ध, तत्त्व प्रतीक है।
16. ये पुत्र, मित्र, कलत्र सारे स्वार्थ के जग में सगे, स्वार्थ यदि इनका न हो तो दूर जाते हैं भगे।
17. वाहर के शत्रु को जीते सो वह शूर नहीं है। अन्दर के क्रोधादि जीते सच्चा वीर वही है।

''लम्बी यात्राओं पर एक चिन्तन''

श्री धनरूपमल नागौरी

ससार मे हम कब आये। हमारी सासारिक लम्बी यात्राए कब से चालू हुई इस विषय मे हम सर्वथा मौन है। जानकारी के अभाव मे हम भवभ्रमण निरतर बढाये जा रहे है, परिणामत जीवन का लक्ष्य हमसे बहुत दूर चला जा रहा है। आखिर क्या होगा हमारी इस आत्मा का ? इसका विचार कभी आया ही नहीं। कहने को तो ससार खारा है, कडवा है, और दुखदायी है लेकिन हमने इसमे सुख मान रखा है, जो केवल मिथ्या है और निराभ्रम है। शास्त्रकारो ने इसका गहन चिन्तन, मनन और दोहन करके बताया है कि जीव की प्रथमावस्था निगोद की थी। जहा अनन्तानन्त जीव भरे पडे है, उनका एक श्वासोच्छवास मे साढे सत्रह वार जनम मरण होता रहता है। बहुत दयनीय स्थिति मे जीव वहा रहता है। अपार दुख है वहा ? लेकिन जीव वहा इतना सब कुछ सहन करके भी एकाएक वहा से निकल नहीं पाता। तो प्रश्न होता है कि वहा से ये जीव कब और कैसे निकलता है ? और क्रमश पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय आदि मे ऐकेन्द्रिय के रूप मे अनन्तकाल तक भटकता रहता है। ऐकेन्द्रिय जीव को केवल एक मात्र स्पर्शेन्द्रिय ही होती है जबकि इन्द्रिया पाच होती है, स्पर्श, रसना, और चक्षु आदि। जैसे जैसे जीव शुभ कार्यों के करते हुए गति करता हुआ पुण्य बढाता जाता है, तदनुरूप वह बेन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और फिर पचेन्द्रिय प्राप्त करता है। तब तक अनन्तकाल बीत जाता है। पचेन्द्रिय प्राप्त करने पर आवश्यक नहीं कि वह मनुष्य ही हो मनुष्य होने का नम्बर तो अन्त मे आता है जब पुण्य राशि का सचय खूब अधिक मात्रा मे हो जाता है। इससे पहले तो वह तिर्यंच और नरकादि गतियो मे कई बार हो आता है। किन्तु यात्रा का अत नहीं होता है। गिरना, पडना, चढना, उतरना लगा रहता है। इस अन्तराल मे वह शुभ व अशुभ क्रियाये निरन्तर करता रहता है। ऐसा करते करते जब उसे सुदेव, सुगुरु, और सुधर्म का सहारा मिल जाता है तब उसे कल्याण का रास्ता मिलता है। कल्याण का रास्ता मिलने पर अगर वह मिथ्या भ्रम मे पडकर नहीं चूकता है तब तो अच्छे मार्ग पर आरूढ होता जाता है। उसे अपनी यात्रा करते हुए बहुत सावधानी रखनी पडती है। दूसरे शब्दो मे कहे तो उसे चौदह गुण श्रेणियो पर चढना पडता है। ये मिथ्यात्व आदि श्रेणियॉ बडी विकट होती है। इन पर कदम-कदम पर बहुत फिसलन होती है और फिसलने मे देर नहीं लगती जो एक बार दृढ सकल्प पूर्वक आराधना करते करते चढ जाता है उसका तो ससार से निस्तार हो जाता है और जो थोडा सा भी आलस्य प्रमाद आदि आत्मा के तेरह काठियो के चक्कर मे पडकर चूक जाता है वह फिर उसी ससार चक्र मे घिरकर अपने लक्ष्य से बहुत दूर चला जाता है। इसलिये आज आवश्यकता है हमे अपनी भवयात्रा मे अत्यन्त

(शेष भाग पृष्ठ स 72 पर देखे।)

अभी मोक्ष क्यों नहीं ?

श्री राजमल सिंघी, जयपुर

इस अवसर्पिणी काल में हुए प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान के अनेक स्तवनों में से एक अत्यन्त प्रसिद्ध स्तवन संवत् 1972 में ओसियां तीर्थ में मारवाड़ के सुप्रसिद्ध मुनिराज श्री ज्ञान सुन्दर जी ने अपने उपनाम ''गयवर'' के नाम से रचा जिसकी प्रथम पंक्ति है ''बोल बोल आदेसर बाबा कांई थांरी मरजी रे'' इस स्तवन की दसवीं गाथा में उन्होने दर्शाया है कि ''मुक्ति का दरवाजा खोल्या मरुदेवी माता रे, साल अनंता रह्या उघाडा, जंबू जड गया ताला रे'' इस गाथा के अंतिम शब्द ''जंबू जड गया ताला रे'' का विवेचन करें और सोचें कि क्या सचमुच जंबू स्वामी ने मोक्ष का दरवाजा बद कर दिया ताकि कोई मोक्ष में नहीं जा सके, तो हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि जम्बू स्वामी तो अत्यन्त करुणावान थे और चाहते थे कि संसार के सभी जीव मोक्ष प्राप्त करें। अतः वे ऐसा कभी नही कर सकते थे कि मोक्ष का दरवाजा बंद कर दें ताकि कोई मोक्ष में नहीं जा सके। यह तो कवि की निरी कल्पना है और कहने का ढंग ही है। फिर, इस काल में मोक्ष में न जा पाने की बात तो केवल भरत क्षेत्र पर ही लागू होती है, क्योंकि अभी भी महाविदेह क्षेत्र से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

सही मायने में सोचा जाय तो हम इस समय भरतक्षेत्र से मोक्ष प्राप्ति इसलिए नही कर सकते कि हम कोई आराधना पूर्णतया सम्यग् रूप से नहीं कर पा रहे है और न हमारा दैनिक जीवन ही ऐसा है कि हम मोक्ष प्राप्त कर सके। हम धार्मिक आराधना सब प्रकार से करते हैं नवकार मंत्र का जाप करते है, पूजा-पाठ करते है, विविध प्रकार की पूजाए करते है, सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्छक्खाण इत्यादि छः आवश्यक करते है, गुरुभगवंतों के व्याख्यान सुनते है, तीर्थयात्रा करते एवं करवाते है, मंदिर बनवाते हैं, प्रतिष्ठाएं करवाते है, तपश्चर्या करते है, महोत्सव मनाते है, उपधान करते है, हम में से कुछ दीक्षा भी लेते है। इस प्रकार हम मोक्ष प्राप्ति के सभी साधन अपनाते हैं, तो फिर मोक्ष क्यों नहीं प्राप्त करते। सोचने पर ऐसा लगता है कि कही न कहीं कोई न कोई खामी अवश्य है, तभी तो मोक्ष प्राप्ति नहीं हो रही है।

सर्व प्रथम हम अपनी दैनिक जीवन प्रणाली पर ध्यान दें। कोई जमाना था जब अपने पूर्वज मल-मूत्र त्यागने के लिए जंगल में जाया करते थे, जहां मल-मूत्र परठा जाता था, जो सूख जाता था जिससे जीवों की उत्पत्ति एवं उनका हनन नहीं होता था, किन्तु आज तो घर-घर में गटर हो गए हैं जिनमें मल-मूत्र करने से अनन्त जीवों की उत्पत्ति एवं संहार होता है और हम जीवों की हत्या का पाप मोल लेते हैं। क्या हिंसक कभी मोक्ष जा सकते हैं ? हमारा खान-पान देखिए। हम में से अधिकांश अभक्ष्य भक्षण करते है कई तो मॉस, मदिरा, मधु एवं मक्खन तक का सेवन करते है, बासी डबलरोटी अंडा मिश्रित आइसक्रीम, इत्यादि खाते हैं। इन सब कार्यो से हिंसा होती है।

भोजन की प्रणाली पर निगाह डालिए। खडे-खडे, घूमते-घूमते बाते करते-करते हम भोजन करते है, और इस प्रकार अनेक जीवो की हत्या का पाप मोल लेते है। स्वामी वात्सल्य के समय तक मे ऐसा होता है। रात्रि भोजन तो आम बात हो गई है। यहा तक कि एक ओर तो लोग अट्ठाईयॉ, मासक्षमण इत्यादि करते है और वे ही लोग उसके पश्चात रात्रि भोजन करते ह । एलोपेथिक एव होम्योपेथिक दवाईयो मे अभक्ष्य वस्तुए होती हे। घरो मे बाग-बगीचे, दूब, फल-फूल आदि लगाकर भी हम हिसा करते ह। गरमी और ठड से बचने के लिए हम ए सी , कूलर इत्यादि का उपयोग करते है। खाद्य पदार्थो को रेफ्रीजरेटर मे रखते है, गरम पानी करने के लिए रसोई एव स्नानगृह मे गीजर लगाते है, खाद्य-सामग्री बनाने के लिए गैस के चूल्हे का उपयोग करते है, मकान की सफाई के लिए मशीन का उपयोग करते है, नहाने-धोने के लिए अनाप-शनाप पानी का उपयोग करते है एव ऐसे साबुन, क्रीम, शेम्पू, सेट इत्यादि का उपयोग करते है जो हिसक प्रकार से बनाए जाते हे। खेती-बाडी करते एव कराते हें एव फेक्टरिया लगाकर, कोयलो का निर्माण इत्यादि करके जीव हिसा करते है। इस प्रकार हमारा जीवन हिसक पापमय हो गया है, तो फिर मोक्ष प्राप्ति कैसे हो। आज अपना समय पास करने के लिए लोग टी वी सिनेमा नाटक देखने मे व्यस्त रहते है, जिनमे अधिकतर अश्लीलता होती है, जिससे अब्रह्म का सेवन होता है। ऐसा करने पर मोक्ष प्राप्ति कैसे हो। इसी प्रकार लोग, क्लबो मे जाने, जुआ खेलने ताश खेलने इत्यादि मे समय बिताते हे और पाप बधन करते है, तो ऐसे मे मोक्ष प्राप्ति कैसे हो ?

यह सच कहा गया है कि जैन धर्म सब धर्मो मे प्रधान एव सर्वोच्च है प्रधान सर्व धर्माणा। जिसको सम्यक रूप से पालन करने पर मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। जैन धर्म अपनाने के लिए दो तरीके बताए गए हे (1) श्रावक धर्म अगीकार करने के लिए श्रावक के बारह व्रत अगीकार करना (2) साधु धर्म अपनाने के लिए दीक्षा लेना। इन दो तरीको मे से कोई एक तरीका अपनाए बिना कोई भी जैन नहीं बन सकता, चाहे वह परम्परा से जैन कुल मे जन्मा हो तो फिर हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी कैसे बन सकते है ? अरे, जैन धर्म अगीकार करना तो दूर, हममे मार्गानुसारी के 32 गुण भी नहीं है और न हममे गृहस्थ के विशेष 21 गुण ही हैं तो फिर हम मोक्षगामी कैसे बने ?

अब हम अपने धार्मिक अनुष्ठानो की ओर निगाह डाले। हम नमस्कार महामत्र का जाप तो खूब करते है, किन्तु यह सम्यक प्रकार से नहीं कर पा रहे हे ओर केवल मात्र फटा-फट माला फेर लेते है, किन्तु माला फेरते हुए पच परमेष्ठियो के 108 गुणो को याद नहीं कर पाते हे और न यह सोचते है कि हम इन गुणो को अपनाए और न हमारी ऐसी भावना ही होती हे कि हम अरिहत भगवन्तो द्वारा दिए गए उपदेशो का पालन करे और उनकी आज्ञा का पालन करे। ''आणाए धम्म'' आज्ञा-पालन ही धर्म है। आज्ञा पालन ही सच्ची प्रभु की सेवा हे। ऐसा न कर पाने के कारण हम मोक्ष कैसे प्राप्त करे ?

तीर्थकर भगवन्तो की पूजा दो प्रकार से की जाती है एक द्रव्य पूजा ओर दूसरी भाव पूजा। द्रव्य पूजा करते समय पाप से बचने के लिए भरसक प्रयत्न नहीं किए जाते जैसे अभिषेक करते समय अनाप-शनाप जल का उपयोग किया जाता

है जिससे अपकाय के जीवों का हनन होता है केसर से पूजा की जाती है जबकि यह निश्चय नहीं कि यह केसर शुद्ध है कि नहीं, फल-पूजा की जाती है जबकि यह ज्ञात नहीं कि कहीं ये अशुद्ध हाथों से स्पर्शित तो नहीं है ये फूल तोडकर तो नहीं लाए गए हैं फूल-मालाएं छेद कर तो नही बनाई गई हैं। मंदिर में जो दीपक जलाए जाते हैं, उनमें किसी जीव का हनन तो नही हो रहा है। यदि हम पूजा करने की क्रिया में हिंसा का पाप मोल लेते हैं तो हम मोक्ष कैसे प्राप्त कर सकते हैं। वंदीत्तु सूत्र में स्पष्ट आता है कि पुफ्फेअ फलेअ, गंध मल्लेअ, भोगे, उपभोगे, गुण वय निंदे। केवल निंदा करने से क्या होता है पूजा में इनका उपयोग भी तो नहीं करना चाहिए। भाव पूजा में चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति की जाती है, किन्तु इनमें तीर्थकरों के गुणों का ही गायन किया जाना चाहिए या तीर्थ की महिमा ही गानी चाहिए, अन्य बातें नही। कहा भी है कि ''जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग'' ध्येय यही होना चाहिए कि हममें तीर्थकर भगवन्तों के गुण आवें तभी मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। कई सज्झाइयों इत्यादि को ही स्तवन के रूप में गाया जाता है, जो उचित नहीं।

विविध प्रकार की पूजाएं भणाते समय मनों मिठाई, फल, फूल, पान इत्यादि का उपयोग किया जाता है और अनाप-शनाप पानी से पक्षाल किया जाता है। ये मिठाई, फल इत्यादि जो भी भगवान के सामने रखे जाते हैं उनका भक्षण पापमय है।

हम सामायिक प्रतिक्रमण इत्यादि छः आवश्यक भी करते हैं किन्तु हमारा मन कहीं का कहीं भटकता रहता है। इसका मूल कारण यह है कि हम इनमें आई हुई गाथाओं का अर्थ नहीं जानते जिससे हमको ज्ञात ही नहीं होता कि हम कौनसी गाथा किस हेतु से बोलते हैं, किस बात का पश्चाताप करते हैं और यह ध्यान भी नहीं रखते कि जिस बात का पश्चाताप किया वह पाप अपने जीवन में तो हम कहीं नहीं कर रहे हैं। केवल मात्र औपचारिक रूप से पश्चाताप करने से कोई लाभ नही तो फिर हम पापों का क्षय कैसे करें और मोक्ष कैसे प्राप्त करें ?

देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा के समय हवन किए जाते हैं, जिससे जीवों का हनन होता है। ऐसा किए जाने से हम मोक्ष प्राप्ति की आशा कैसे रख सकते हैं ?

गुरु भगवन्तों के व्याख्यान भी हम बडी दिलचस्पी से सुनते हैं किन्तु सुनने के बाद इतना ही कहकर संतोष कर लेते हैं कि महाराज व्याख्यान बहुत अच्छा देते हैं। उनके द्वारा दिए हुए उपदेशों का पालन करने की ओर हमारा ध्यान जाता ही नहीं और इनके उपदेशों के अनुसार हम अपना जीवन ढालते ही नहीं तो फिर मोक्ष कैसे प्राप्त करें। हम तीर्थ यात्रा भी खूब करते हैं एवं करवाते हैं। कुछ व्यक्ति तो इसको पर्यटन के रूप में ही लेते हैं और तीर्थ यात्रा के बाद कुछ न कुछ त्याग भी नहीं करते और उसके बाद हम अपना जीवन धर्ममय नहीं बनाते। कई व्यक्ति संघ निकालते है प्रतिष्ठा करवाते हैं मंदिर बनवाते हैं महोत्सव कराते हैं उपधान करवाते व करते हैं और इन सब कार्यो में खूब धन भी खर्च करते हैं और ऐसा धन व्यय करने के बाद भी वे लोग धर्ममय जीवन नहीं जीते, विशेपतः रात्रि भोजन एवं अभक्ष्य भक्षण का त्याग नहीं करते तो फिर ऐसे

सुकार्यों का सुफल कैसे प्राप्त हो ? मोक्ष कैसे प्राप्त हो ? सच पूछा जाय तो अब दिखावा, होडा-होड, आडम्बर ज्यादा हो गया और सही रूप की धार्मिकता नहीं रही। जैन धर्म मे त्याग का अधिक महत्त्व है मौज-शोक का नहीं। मदिरो की प्रतिष्ठा के दिन की याद मे स्वामी वात्सल्य किया जाता है जबकि उस दिन तपस्या की जानी चाहिए। असली स्वामी वात्सल्य तो हमारे जरूरतमन्द सहधर्मी की मदद करना है आर्थिक सहायता देना है न कि उसको एव साथ ही साथ सपन्नो को भी जिमाना। प्रभावना का अर्थ धर्म की प्रभावना है, धर्म का प्रभाव लोगो पर पडे और वह धर्माचरण करने की वृत्ति वाला बने ऐसे कार्य करना है न कि रुपये दो रुपये या लड्डू मिठाई वितरण करना। ऐसा लगता है कि स्वामी वात्सल्य एव प्रभावना का आयोजन (व्याख्यान के बाद) केवल मात्र लोगो की भीड इकट्ठा करने के लिए होता है। जब हममे सही रूप मे धार्मिकता नहीं है तो हम मोक्ष की आशा कैसे करे।

अब हम जरा अपनी निगाह साधुओ के कतिपय कार्य कलापो पर डाले। कहीं-कहीं देखा गया है कि साधुओ को श्रावक उपासरे मे भोजन लाकर बोहराते है जबकि साधुओ के लिए ऐसा भोजन स्वीकार करना धर्ममय नहीं है। कोई-कोई साधु तो विहार क समय अपने साथ ठेला रखते ह जिसमे रखी हुई सामग्री से रसोइया भोजन बनाकर उनको खिलाता है। कोई-कोई तो कहकर अपने लिए अमुक खाद्य वस्तु बनवाते ह। परिग्रह तो इतना हो गया कि पूछो नहीं बात। विहार के समय ओढन बिछाने पुस्तके इत्यादि इतनी अधिक रखी जाती है कि इनके लिए वाहनो का उपयोग करना पडता है, जबकि साधु को केवल इतना सामान ही रखना चाहिए (और वो भी कम से कम) कि वे स्वय उठा सके। इन सब कार्यो से हिसा, परिग्रह आदि का दोष लगता है तो फिर मोक्ष कैसे प्राप्त हो। रत्नाकर पच्चीसी मे कहा गया हे कि धर्म ना उपदेश, रजन लोक ने करवा कर्या। धर्मोपदेश के समय कभी-कभी बाते भी कर दी जाती है। प्रतिष्ठा के समय बिजली द्वारा चलाये जाने वाले बडे-बडे खिलोनो (मनुष्य एव जानवर के रूप मे) के प्रदर्शन से लोक रजन भी किया जाता हे। कहीं-कहीं मदिरो मे पुजारी ही पूजा करते हे इस प्रकार मोक्ष प्राप्ति केसे हो ?

तो फिर क्या करे ? माजूदा वातावरण एव हालात मे हमको जय वियराय सूत्र का (अर्थ ध्यान मे रखते हुए) उच्चारण कर प्रार्थना करनी चाहिए उसका मनन, पालन करना चाहिए और सदा इच्छा रखनी चाहिए कि हम प्रत्येक भव मे जेन धर्म की प्राप्ति करे उसका पालन करे ओर अगले भव मे हम महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सीमधर स्वामी भगवत की निश्रा मे शुद्ध साधु धर्म पालन कर मोक्ष की प्राप्ति करे। हमको धर्म के चार भेदो- दान, शील, तप, भाव द्वारा जैन धर्म का पालन करना चाहिए, ना तत्वो की ओर पूर्ण आस्था रखकर सम्यक्त्व की प्राप्ति करनी चाहिए सुदेव सद्गुरु, सुधर्म का आलम्बन करना चाहिए, अठारह पापो से दूर रहना चाहिए, तीर्थंकर भगवतो की आज्ञाओ का पालन करना चाहिए। हो सके तो दीक्षा लेना चाहिए वरना श्रावक के बारह व्रत तो अवश्य अगीकार करना चाहिए ओर साथ ही प्रत्येक कार्य विवेक बुद्धि से करना चाहिए। ये कतिपय मुख्य साधन है जिनके द्वारा हम मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सकते है। ✰

मानवता के प्रति चुनौती उठाने के लिए सक्रिय बनकर प्रेरक बनें

श्री हसमुख शाह, मैनेजिंग ट्रस्टी,
प्राणी रक्षा ट्रस्ट, अहमदाबाद

(1) सादगी, संतोष और संयम अपना के अहिंसापोषक जीवन प्रणाली द्वारा निष्ठा-सात्त्विकता- खुमारी लायें ।

(2) अपने विस्तार के प्राणिओं के प्रति हो रही क्रूरता/हत्या की जानकारियां प्राप्त करके इनके निवारण के लिये सक्रिय कार्यकर्ताओं/संस्थाओं/ट्रस्टों तक पहुँचाकर उनके निवारण में सहयोग दाताओं/परिचितों के साथ चर्चा परामर्श करते रहकर इनकी रोकथाम के उपाय ढूंढते रहें और इन उपायों को अजमाते रहें ।

(3) गर्भपात-सरकस और प्राणी संग्रहालयों को प्रोत्साहन न दें - उनके बहिष्कार के लिये प्रयास करें ।

(4) हत्या/क्रूरता पोषक व्यवसायों के लिये पूंजी-निवेश न करें, ऐसी प्रवृत्तियों को निरूत्साहित करें ।

(5) चुनावों में क्रूरता/हत्या पोषक तत्वों शासन में नीति-निर्धारण में प्रवेश न पायें ऐसी यथासंभव सर्तकता रखें ।

(6) पालतू-प्राणियों के प्रति क्रूरता या उनकी हत्या न हो ऐसी सतर्कता रखकर उनसे लाभ अवश्य लें ।

(7) जो वन्य (जंगली) जीव मानव पर आधारित नहीं हैं उनकी प्राकृतिक जीवन प्रणाली में विक्षेप न डालें - उनसे कोई लाभ लेने की आदत न रखें ।

(8) कई सौंदर्य-प्रसाधनों और प्रायः पश्चात्य - प्रणाली की चिकित्सा (एलोपथी) की औषधियो के अनुसंधानों - निर्माण - परीक्षण में खरगोश, बंदर, आदि के प्रति घोर क्रूरता या उनकी हत्या होती है, इसलिये यथासंभव आयुर्वेदीय प्रणाली की औषधियों द्वारा ही चिकित्सा करें ।

(9) कागज रास्ते पर या पस्ती में डालने के पूर्व स्टील की टांचणियां आदि अलग करें, प्लास्टिक रास्ते में न डालें - ताकि गाय आदि खा न जायें और परेशान न हों ।

(10) फटाकें न फोडें, ताकि सूक्ष्म जीव-जंतुओं कूचल न जायें - ऐसी सतर्कता रख पायें ।

(11) गरम ठंडे पाणी का मिश्रण न करें ।

(12) बिछाई गई दरी/हरी वनस्पति पर चलने का कोई कार्यक्रम न बनायें - ताकि सूक्ष्म जीव-जंतु कुचल न जायें - ऐसी सतर्कता रख पायें ।

(13) फानस-प्रवाही को खुले न रखें -

ताकि जीव-जतुओ अदर गिरके मर न जाये ।

(14) सूक्ष्म-जतुओ-मच्छर, वादे, मक्खी आदि क उपद्रव दूर करने के लिये उनको मारने के बजाय उनकी उत्पत्ति ही न हो ऐसी सतर्कता रखने के लिये जयणा व्यवहार (वर्तन मे), शाति जीवन मे - नामक पुस्तक लेखक श्री जयेन्द्र भाई र शाह, बी एस सी , बी एड नियामक श्री जबूद्वीप विज्ञान अनुसधान केन्द्र, तलेटी रोड, पालीताणा (जिला भावनगर, गुजरात) से प्राप्त करके पढे और तदनुसार उपाय करे ।

(15) निर्दोष/सात्त्विक/आहार-निम्नत सतर्कता रखके - लेकर अहिसामय बने क्याकि जैसा आहार ऐसे विचार और जैसे विचार ऐसे व्यवहार

(अ) मास - मच्छी, अडे, मधु, मक्खन, कदमूल, अनतकाय पदार्थो, बर्फ आदि, अनछाना पानी, द्विदल कच्चे (दहीं-दुग्धमे दाले)

(आ) आटा-मिष्ठान्न मे कार्तिक सुद 14 से फाल्गुन सुद 14 तक 30 दिन के पश्चात्, फाल्गुन सुद 15 स अषाढ सुद 14 तक 20 दिन पश्चात् और अषाढ सुद 15 से कार्तिक सुद 14 तक 15 दिन के पश्चात् सूक्ष्म जीव-जतुओ की उत्पत्ति होती है, इसलिये उनके प्रयोग न करे ।

(इ) सूखा मेवा, धनिया, भाजीपाला, तिल, फूल-गोभी, पत्ते-गोभी मे फाल्गुन सुद 15 से कार्तिक सुद 14 तक

(ई) आर्द्रा नक्षत्र के पश्चात् आम मे, असख्य छोटे-बड़े जीवो की हत्या होती है सूर्यास्त के पश्चात् आहार-सामग्री मास के बराबर होती है एसा भारतीय शास्त्रा मे बताया गया है इसलिये उपरोक्त सभी पदार्थो का त्याग करे । कपडे से छानके ही पानी काम मे ले ।

(16) प्राकृतिकता से उत्पन्न पालतू प्राणियो का पालन-पोषण ठीक ढग से हो ऐसे प्रयास अवश्य करे, किन्तु उनकी कृत्रिम उत्पत्ति बढाकर प्राणिओ के पालन का उत्तरदायित्व न बढाये ।

(17) यत्रो के बजाय यथासभव पालतू प्राणियो के प्रति क्रूरता/हत्या न हो ऐसी सर्तकता रखे और पशुपालको को पर्याप्त लाभ मिले ऐसी सतर्कता रखे ताकि पशुपालन सरल बने । ✰

मै कुछ नही चाहता और चाहता हूँ तो यही कि कुछ न चाहूँ ।
जो मेरा है वह मेरे से बिछुडने वाला नही ।
जो मेरा नही वह मेरा होने वाला नही ।
फिर क्या चाहना और क्या न चाहना ?
चाहते-चाहते सचमुच अब थक गया ।
अब चाहने को सदा के लिए मेरा इस्तीफा है ।
मै अपने मे रहूगा और चाहने की खटपट से बचूगा ।

नमस्कार महामन्त्र का माहात्म्य

श्री रतनचन्द कोचर

नमस्कार महामंत्र का अर्थ परमेष्ठि। परमेष्ठि नमस्कार मंत्र धर्म का मूल है मात्र मूल ही नहीं, धर्म वृक्ष भी यही है अर्थात् संसार से मुक्त होने का उपाय है परमेष्ठि-नमस्कार मंत्र। विषम-कषायों से मुक्त होने का उपाय है- नमस्कार महामंत्र।

जंगल में हिंसक जीव जन्तु निवास करते हैं यदि व्यक्ति शस्त्रधारी है, स्व रक्षण की विधि और मार्ग को जानता है तो वह आसानी से उस जंगल को पार कर लेता है। इसी प्रकार यदि जीवन में नमस्कार महामंत्र का आलम्बन लिया जाय तो अल्प समय में ही पांचों विषयों (शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श) और चार कषायों पर विजय प्राप्त कर सकता है।

कर्णेन्द्रिय : अरिहन्त परमात्मा :

प्रथम विषय है शब्द। इस शब्द विषय में कर्णेन्द्रिय कारण भूत है। रेडियो, टी.वी., सिनेमा के गीत-संगीत आदि का श्रवण कामोत्तेजक है अथवा सांसारिक पदार्थों के प्रति राग-भाव का पोषण होता है।

कर्णेन्द्रिय को वश में करने के लिए अरिहन्त वाणी का श्रवण है।

अरिहन्त के वचनों को मन में तन्मय बनाने वाली आत्मा शब्द विषय पर विजय प्राप्त करता है।

चक्षुरिन्द्रिय : सिद्ध भगवन्त :

इसका विषय रूप है। यदि कोई वस्तु सुन्दर/रूपवान होगी तो अवश्य राग भाव पैदा होगा। खराब होगी तो द्वेष भाव पैदा होगा।

चक्षुरिन्द्रिय पर विजय प्राप्त करने के लिए सिद्ध भगवन्तो का सहारा लेना चाहिये। सिद्ध भगवन्तो का रूप शाश्वत है।

घ्राणेन्द्रिय : आचार्य भगवन्त :

घ्राणेन्द्रिय का विषय है गंध।

गुलाब, चमेली आदि पुष्पों की गंध से राग-भाव पैदा होता है। इससे संसार की अभिवृद्धि होती है। पुष्प की गन्ध में आसक्त होकर भ्रमर घ्राणेन्द्रिय की आसक्ति के कारण अपने प्राण खो देता है।

अतः इस पर विजय प्राप्त करने के लिए आचार्य भगवन्त की आराधना करनी चाहिये। आचार्य भगवन्त के आचार और शील की सुगन्ध के प्रति हृदय में राग भाव पैदा हो जावे तो पौद्‌गलिक गन्ध की आसक्ति अपने आप गायब हो जाती है।

रसनेन्द्रिय : उपाध्याय भगवन्त :

यह सबसे बलवान इन्द्रिय रसनेन्द्रिय है। इस पर विजय प्राप्त करना दुष्कर है। रस की लोलुपता के कारण मछली के प्राणों का अपहरण होता है। उपाध्याय भगवन्त विनय गुण के भंडार है। पठन-पाठन में तीव्र रस होता है।

स्पर्शनेन्द्रिय : साधु भगवन्त :

पॉचवी इन्द्रिय का विषय है : स्पर्श। कामिनी अथवा पौद्‌गलिक पदार्थों के सुकोमल स्पर्श से जीवन में राग भाव पैदा होता है और अन्त में आत्मा की दुर्गति होती है।

साधु पच महाव्रत और पचसमिति के पालक, उग्र तप और कठोर सयम के साधक साधु भगवन्तो के चरण-स्पर्श भक्ति वैय्यावच्च से स्पर्शनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त कर सकते है ।

नमस्कार महामत्र की महिमा

नमस्कार महामत्र की महर्षियो ने सबसे अधिक महिमा गाई है । यह चोदह पूर्व का सार है । चौदह पूर्वी भी अन्त समय तक नमस्कार महामत्र का स्मरण करते है । नवकार मत्र सारभूत है, उसी प्रकार नमस्कार महामत्र को गिनने वाला भी सारभूत बनता है। नमस्कार महामत्र से रहित जीव पाप से पुष्ट और पुण्य से दुर्बल बनता है । नमस्कार महामत्र मे मोक्ष के प्रणेता मोक्ष सुख के भोक्ता और मोक्ष मार्ग के साधक इन तीनो का सुमेल हो जाने से यह महामत्र मोक्षमार्ग को पूर्णता प्रदान करता है ।

जिस पकार शरीर की रक्षा के लिए वस्त्र चाहिए धन की रक्षा के लिए तिजोरी चाहिए उसी प्रकार मन की रक्षा के लिए नमस्कार महामत्र की साधना अनिवार्य है ।

मन रूपी आगन म नमस्कार महामत्र रूपी कल्पवृक्ष को उगाने की आवश्यकता है । इस कल्पवृक्ष के मूल रूप मे अरिहन्त भगवन्त, फल रूप मे सिद्ध भगवन्त फूल रूप मे आचार्य भगवन्त, पर्ण रूप मे उपाध्याय भगवन्त और शाखा रूप मे साधु भगवन्त है। महामत्र का आराधक/ध्याता स्वय पच परमेष्ठिमय बनता है ओर परमेष्ठी पद की प्राप्ति के बाद आत्मा को इस ससार का कोई भय नही रहता है ।

जिसके मन मे है नवकार,
उसका क्या करे यह ससार ।

महामत्र का प्रभाव

(1) तीनो लोक के विवेकी सुर, असुर, विद्याधर तथा मनुष्य सोते, जागते, बैठते, उठते चलते-फिरते श्री नमस्कार महामत्र को याद करते हैं ।

पिछले वर्ष मै दादा गुरुदेव के मेले पर अजमेर सघ के साथ बस मे गया । वापस आते समय बस रास्ते मे खराब हो गई । रात्रि बारह बजे का समय था । जगल मे बस खराब होने क कारण पूरी बस मे खामोशी छा गई । बस नहीं चल रही थी । मैने सभी महिलाओ बच्चो एव पुरुषो को नमस्कार महामत्र का पॉच मिनिट जाप करने के लिए कहा । पाच मिनिट का जाप समाप्त होते होते बस अपने आप धीरे-धीरे चलने लग गई तथा बगरू के पास उसे मैकेनिक से ठीक कराकर रात्रि 1 30 बजे सकुशल जयपुर पहुँचे ।

(2) नमस्कार महामत्र सत्य की गठडी है, रत्न की पेटी हे ओर सब इष्टो का समागम है ।

(3) नमस्कार महामत्र पाप रूपी पवत को भेदने के लिए वज्र के समान है दु ख रूपी बादलो के लिए प्रचण्ड पवन के समान है, मोह रूपी दावानल को शात करने के लिए आषाढी बादलो के सामन है, अज्ञान रूपी अधकार को दूर करने के लिए सूर्य के समान है ।

(4) शारीरिक तथा मानसिक दु खो से और राग-द्वेपादि के सतापो से तप्त चारो गति के भव्य जीवा क लिए श्री नमस्कार महामत्र सहायक और परमार्थ बन्धु के समान हे ।

(5) यदि हम एकाग्र चित्त से हाथ की अगुलियो के आवर्त द्वारा श्री नमस्कार महामत्र का जाप करे तो उसे भूत, प्रेत, पिशाच आदि परशान करने मे कभी समर्थ नही होते । यह मरे स्वय की अनुभवजन्य स्थिति हे । महामत्र पर अटूट श्रद्धा रखने से मनुष्य असाध्य से असाध्य रोगो पर मुक्ति प्राप्त कर सकता है । ✩

विचारों का प्रदूषण

श्रीमती अंजना जैन

भगवान महावीर को आज अढाई हजार वर्षों से अधिक समय बीत गया है फिर भी जैन धर्म आज अनवरत रूप से चला आ रहा है । जैन परम्परा में आत्मा के स्वभाव को धर्म कहा गया है। आज धर्म का मर्म और उसकी आचार निष्ठा दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है । इस निष्ठा ने वाद को जन्म दे दिया है । निष्ठा एक सकारात्मक पहलू है परन्तु वाद समस्त बुराइयों की जड़ है । इसे विज्ञान की भाषा में विचारों का प्रदूषण कह सकते हैं ।

धर्म हो या समाज या परिवार यह निष्ठा और वाद देखा गया है । धर्म में गच्छवाद एवं गच्छ निष्ठा, समाज में हो या परिवार में इसका रूप प्रतिरूप हमें इसमें रहने वाले सदस्यों में देखने को मिलता है ।

एक परिवार जो आगे जाकर समाज ही वनता है उसमें एक नवविवाहिता वधू जब घर में पैर रखती है तब निष्ठा रहती है । कुछ दिनों या महिनों बाद वह वाद बन जाती है । इसका कारण है उस परिवार के सदस्य । होता यह है कि अधिकांश नवविवाहिताएं अपने पति की मां में अपनी मां की छवि, ननद और देवरों में अपने भाई-वहनों की छवि तलाशती हैं, यदि उनमें उसे वह प्यार ममता मिल जाती है तब तो वह निष्ठा ही रहती है और यदि उसे अपने आप ही एहसास करवा देती है कि नहीं जिसे वह मां, भाई-बहिन समझ रही है उन्हें तो वह छोड आई है तब वहां वाद जन्म लेने लगता है ।

ऐसी परिस्थिति से बचना श्रेयस्कर होता है । सास को जरा उदार और यथार्थवादी दृष्टि अपनानी चाहिये कि वास्तव में बहू का उसके बेटे पर हक है । उसकी स्वाभाविक उमंगों का सास को आदर करना चाहिये । ननद और देवरों को भी अपनी भाभी को अपने स्नेह से उन कल्पनाओं को साकार करने का प्रयास करना चाहिये जिससे रिश्तों में संतुलन बना रहे । नव-वधू के लिए पति का संबंध सर्वाधिक रोमांचक और घनिष्ठ होता है । अतः इस रिश्ते की बुनियाद परस्पर विश्वास, प्रेम और अपनेपन के साथ रखनी चाहिये । पति का दायित्व है कि वह अपनी नव-वधू की विशेष परिस्थितियों को देखते हुए उसे एक नई जमीन पर स्थापित होने में पूर्ण रूप से सक्रिय व भावनात्मक सहयोग प्रदान करे । पति को केवल अपने परिवार के ही बारे में प्रेम नहीं वल्कि अपनी नव-वधू को भी परिवार का ही सदस्य मानना चाहिये ।

वर्तमान समय में यह देखने में आया है कि मॉ अपने वेटे के हक को वहू को नहीं देना चाहती है और पति भी अपनी मां को ही सर्वोपरि मानता हैं । वहू का कार्य तो मात्र केवल एक पौधे की तरह

(शेष पृष्ठ सं. 67 पर देखें ।)

विनय जीवन का सर्वोत्तम गुण

कु शानु जैन

विनय जैसा कि नाम से ही विदित है वि अर्थात् विवेकपूर्वक और नय अर्थात् झुकना। विवेकपूर्वक झुकना ही विनय हे।

जिस प्रकार जीवन मे—

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है
विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है
उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है
साहस न हो तो हथियार व्यर्थ हे
होश न हो तो जोश व्यर्थ है

उसी प्रकार—

विनय न हो तो विद्या व्यर्थ है।

विनय शब्द की उत्पत्ति विद्या से हुई हे क्योकि 'विद्या ददाति विनय' और कहा भी गया है कि विद्याविहीन मनुष्य पशु क समान है।

आत्मा अमूर्त, अरूपी है अत इसकी सज्जा भी अरूपी वस्तुओ से है। रूपी वस्तुओ से तो केवल शरीर को ही सजाया जा सकता है परन्तु आत्मा की शोभा तो आत्मगुणो को धारण करने मे है और आत्मगुणो मे प्रमुख गुण है विनय। जिस प्रकार कई मोती मिलकर एक माला को निरूपित्त करते हे। यदि उन सबम पिरोया हुआ सूत्र अर्थात् धागा टूट जाए तो मणिए एक-एक करके बिखर जायेगे ठीक उसी प्रकार यदि मनुष्य मे विनय नहीं हागा तो अन्य गुण जैसे- क्षमा, दया, विवेक, परोपकार आदि की मूल्यवत्ता समाप्त हो जायेगी।

अपने से बडो को प्रणाम करना, गुरुजनो का आदर करना आपस मे प्रेम से रहना, स्वय की लघुता स्वीकार करना ये सब विनय के प्रतीक हैं।

विनय का सबसे अच्छा उदाहरण हमे नवकार मत्र मे मिलता है। इसकी प्रथम 5 पक्तियो मे नमो शब्द पहले आया है जो कि विनय का प्रतिपादक है तथा भगवान के गुणगान भी बाद मे किये गये है। अत हम कह सकते है कि विनय धर्म का मूल है।

जिस प्रकार जगल मे घुसने के लिए पगडडी, नदी मे उतरने के लिए घाट तथा नगर म प्रवेश करने के लिए दरवाजे होते है उसी प्रकार ज्ञान, दर्शन, चारित्र की योग्यता, पात्रता लाने के लिए विनय प्रथम घाट हे पात्र है और दरवाजा है।

विनय सभी गुणो का भूषण है जेस आकाश का भूषण सूर्य है, वाणी का भूषण सत्य है, मन का भूषण मित्रता है, वैभव का भूषण दान है इसी तरह सभी गुणो का भूषण विनय है।

एक बच्चा जो शिक्षक के कक्षा मे आने पर खडा होकर नमस्कार करता हे, आदर करता है परन्तु अपने मन मे वह सोचता है कि यह मास्टर मुझे पीटता है, इसका या तो स्थानान्तरण हो जाए या इसे प्रधानाध्यापक बुला ले। इसे हम विनय नहीं कह सकते। क्योकि विनय का अर्थ मात्र काया से नमस्कृत करना ही नहीं है।

विनय अर्थात् काया से झुकना वचन से मधुर बोलना और मन मे सम्मान की भावना हाना है। विनय का प्रत्यक्ष उदाहरण भगवान राम मे

देखने को मिलता है। दशरथ के प्रिय पुत्र राम को जब माता कैकेयी ने बहकावे में आकर वनवास जाने का आदेश दिया तो बिना किसी प्रश्न के किंचित मात्र भी विचार न करके उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा- माते। बस इतनी सी बात, आपकी आज्ञा शिरोधार्य।

और उधर रावण जो शक्ति और बुद्धि दोनों में ही राम से श्रेष्ठ था परन्तु अहंकार के कारण उसकी बुद्धि और शक्ति दोनों ही नष्ट हो गये। अतः विनय के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा अहंकार है। जब तक अहंकार दूर नहीं करेंगे तब तक विनय का समावेश नहीं हो सकता। अर्थात् वास्तव में जो जीवन में ज्ञान-दर्शन-चारित्र के गुणों को विशेष रूप से खींचकर लाये, वह विनय है। विनय का सर्वोत्कृष्ट रूप है- मन, वचन, काया तीनों से विनय करना। आगमों में विनय को मोक्षद्वारं कहकर सबसे महत्त्वपूर्ण गुण बताया गया है। जिस प्रकार—

वृक्षों की शोभा फल-फूलों से होती है।
सरिता की शोभा प्रवाह से होती है॥
चिंतन के साथ सोचो भाग्यवानों।
जीवन की शोभा विनय को अपनाने से होती है॥

जिस प्रकार सड़े कान वाली कुतिया सभी जगह से तिरस्कृत होती है उसे कहीं आदर नहीं मिलता क्योंकि उससे रोग और गंदगी फैलाने का डर रहता है, उसी प्रकार अविनीत व्यक्ति अनुशासनहीनता, दुष्चरित्रता एवं आचार-विचार में गंदगी फैलाने के भय से सर्वत्र तिरस्कार पाता है एवं निरादर का पात्र बन जाता है।

इसलिए हमें विनय को अपनाना चाहिए और अहंकार को छोड देना चाहिये। जिस प्रकार सूर्य की एक किरण सारे अंधकार का नाश कर देती है ठीक उसी प्रकार विनय गुण आने से आत्मा के शत्रु क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष इत्यादि अवगुण स्वतः ही दूर होते चले जाते हैं और आत्मा परमात्म तत्व की ओर अग्रसर होती है। जो झुकता है, वही पाता है इसलिए-

''मीठे बोलो, नम चलो, सबसे करो स्नेह।
कितने दिन का जीवन है, कितने दिन की देह।''

☆

(पृष्ठ सं 66 का शेष भाग)

छाया और फल देना ही है जबकि उस पौधे को बीज से पौधा बनने तक कितना ध्यान रखना पड़ता है। उसके पश्चात् ही आप उसे फलता हुआ देख सकते है और कुछ पाने की आशा कर सकते है। यदि आपने उसे जमीन पर जमने ही नही दिया तो आशा करना भी व्यर्थ है।

एक पौधे की तरह बहू को भी अपने प्यार, स्नेह, ममता और अपनेपन से उसे इस घर में जमने में मदद कीजिये। उसके पश्चात् आप उसके फल के मिठास का अनुभव कर सकते है। आप उसकी निष्ठा को और अपनी निष्ठा को बनायें रख सकते हैं वह वाद का रूप ही नही बनेगा। आपका परिवार और समाज खुशहाल रहेगा। धैर्य से आपको मनचाही चीज प्राप्त हो सकती है। यदि आपका मन निर्मल है, दूसरो का भला सोचते है, परोपकार करने में विश्वास करते है और करते भी है, दूसरे के दुख को अपना दुख समझ कर दूर करने का प्रयास करते हैं तब आप अपना सौन्दर्य देखिये कितना निखार लाता है। धर्म करिए अर्थात विचारों का प्रदूषण रोकिये। यही आपको और आपके परिवार को एक ऐसे स्थान पर ले जायेगी जिसकी आप आशा भी नही कर सकते। ☆

वर्तमान को आवश्यकता है- महावीर की

श्री विनित सान्ड

''भगवान महावीर अपने आचरण व व्यवहार के बलबूते से तीर्थंकर कहलाए । हालाकि महावीर ने अपने जीवन मे कोई प्रवचन नही दिया, लेकिन मौन और उद्धत व्यवहार से जिस तरह की दार्शनिकता परिलक्षित हुई है उससे समूचे मानव जगत को एक नई दिशा मिली है ।''

प्रत्येक द्रव्य मे विभिन्न प्रकार के परिणमन हुआ करते है क्योकि उनमे ऐसी अनत शक्तिया विद्यमान होती है । उन शक्तियो को जेसे अतरग और बर्हिरग निमित्त कारण मिलते हे उस तरह के परिणाम उस द्रव्य मे हुआ करते है । जैसे रुई को यदि तेल ओर दीपक का निमित्त मिले तो वह रुई बत्ती के रूप मे जलकर प्रकाश करती है ऐसी ही बात ससारी जीव की भी है । जीव मे सज्जन सदाचारी बनने की शक्ति हे । इसी प्रकार यदि रुई को आग का निमित्त मिले तो रुई जलकर आग बन जाती है । उसी प्रकार ससारी जीव की दुर्जन दुराचारी ओर अज्ञानी बनने की शक्ति भी है ।

परन्तु यह उसके अतरग और बहिरग निमित्त पर निर्भर है यदि उसे किसी सज्जन, सदाचारी का समागम मिलता है तो वह उसके प्रभाव से सच्चरित्र बन जाता है ज्ञानी बन जाता है और मूर्ख, दुष्ट, दुराचारी का समागम मिले तो मूर्ख दुराचारी बन जाता है । ऐसा ही प्रसग भगवान महावीर का भी है ।

प्रसग- भगवान आदिनाथ के पोत्र, भरत चक्रवर्ती के पुत्र मारीच कुमार को कुल के अभिमान कषाय का अतरग कारण मिला तथा उस अभिमान को प्रज्वलित करने वाले बहिरग कारण मिले जिससे मारीची कुमार तीर्थंकर के पोते होते हुए भी अशुभ कर्मो के निमित्त से विविध योनियो मे भ्रमण करते रहे । सिह की पर्याय मे जब उसको साधु युगल का सपर्क मिला तो उनके सुदपदेश के निमित्त से उनके हृदय मे सत्श्रद्धा जाग्रत हुई । तब वही मारीची का जीव आत्म उन्नति करता गया ओर नौ भव बाद मे तदुभव मुक्तिगामी अतिम तीर्थकर ''वर्द्धमान'' हुए ।

वह दिन चेत्र शुक्ला त्रयोदशी का शुभ दिवस था जिसे आज भी भगवान महावीर की जन्म जयती के रूप मे मनाया जाता है । आज हम पर्यूषण पर्व मे भी भगवान के स्वप्न अवतरण व जन्म वाचना का कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाते है ओर कम से कम आठ दिवस महावीर के उपदेशो पर चलने का प्रयास करते है ।

जब क्षत्रिय राजा सिद्धार्थ के राजभवन मे माता त्रिशला ने अतिम तीर्थंकर को जन्म दिया उस महान पुत्र के जन्म के कारण राजा सिद्धार्थ का वैभव व पराक्रम बढा, सपत्ति मे अतुल वृद्धि हुई इस कारण निमित्त ज्ञानियो की सम्मति से उस महान बालक का सार्थक नाम ''वर्द्धमान'' रखा

गया। वर्द्धमान जन्म से ही मति, श्रुति और अवधि ज्ञान, सत्श्रद्धा, स्वरूपाचारण चरित्र आदि महान आत्म वैभव के धनी थे। अतः वे जन्म से ही धन्य थे। जनसाधारण की तुलना में वे प्रत्येक आत्मगुण के विकास में अग्रसर थे। अतएव उन्होंने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने अनुपम ज्ञान और बल-पराक्रम का अतिशय जनता को दिखलाया। उसी के अनुसार ''वीर, अतिवीर, महावीर, संमति, वर्द्धमान'' उनके यह नाम प्रख्यात हैं।

भगवान महावीर के समय भारत वर्ष की धार्मिक स्थिति ठीक नहीं थी। गाय-बकरी, हिरण आदि जीवित पशुओं को वेद-मंत्रों के साथ अग्निकुण्ड में हवन करने की प्रथा थी। स्वर्ग व राज्य पाने की इच्छा में यह यज्ञ यजमान पुरोहितों द्वारा कराये जाते थे और इसी को लोगों ने धर्म मान लिया था। निर्दोष पशु हत्या ने धर्म का आवरण पहन रखा था। मूक निरपराध पशुओं की रक्षा करने वाला न तो कोई प्रभावशाली राजा था और न कोई धर्म गुरु और न ही साधारण जनता में हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाने वाला था। इस तरह पवित्र भारत भूमि हिंसा के प्रचार से अपवित्र हो रही थी।

हिंसा को अहिंसा मानने रूप अज्ञान को निर्मूल करने तथा जनता को धर्म का वास्तविक स्वरूप अवगत कराने के लिए भगवान महावीर ने अपना समय राजभवन में व्यतीत करना उपयुक्त नहीं समझा और 30 वर्ष की आयु में सांसारिक तथा शारीरिक मोह-ममता का परित्याग करके राजभवन से निकल पडे और स्वाधीन सिंह-वृत्ति अपनाकर स्वयं साधु दीक्षा ली। तत्पश्चात् आत्मशुद्धि द्वारा परमात्मा पद प्राप्त करने के लिए एकांत-शांत वन प्रदेश में कठोर तपस्या करने लगे। लगातार 12 वर्षो तक मौन प्रशांत भाव से आत्म-साधना करते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने आत्मशुद्धि प्राप्त करके परमात्मा पद प्राप्त किया। जिससे वे सर्वज्ञ वीतरागी और हितोपदेशी बन गये।

तदनंतर उन्होंने जनता का पथ-प्रदर्शन किया। जनता का धार्मिक अज्ञान दूर किया। हिंसा अहिंसा का सरल भाषा में बोध कराया। प्रभावशाली फल यह हुआ कि जो मनुष्य धर्म के नाम पर पशुओं का वध करते थे उन्होंने यह हिंसा कृत्य छोड दिया। इस तरह 30 वर्षो तक अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि का धर्म प्रचार किया। भगवान के भाल से हिंसा का कलंक हटाया था। और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को पावापुरी से आवागमन की परम्परा को निर्मूल करके अजर-अमर होकर मुक्ति प्राप्त की।

आज एक बार फिर वर्तमान को वर्द्धमान की आवश्यकता है क्योंकि आज फिर वही हिंसा का तांडव नृत्य भारत भूमि पर लहराने लगा है। जहां दूध की नदियां बहती थी, वहां आज खून की नदियां बहने लगी हैं। आज भाई-भाई को मारने पर तुला है, अब केवल अपना फायदा देख रहे हैं। ऐसे समय में वक्त यह कह रहा है ''महावीर वापिस आओ।'' ☆

सुकृत

श्री आशीष कुमार जैन (13 वर्ष)

भगवान मुझे ही सब दुख दे दे। जन-जन सारे सुख पाये। जैसे तन की व्याधियॉ करती है मन को बलहीन वैसे ही मन के विकार भी करते हे तन को बलहीन। जरूरतमद को थोडा आराम दे सकु मुस्कुराहट से, मीठे शब्दो से या अच्छे कामो से या सुख सुविधाये जुटाकर।

जो ज्ञानी है वह अपने सब कर्म विचारपूर्वक करता है तथा परिणाम भगवान को अर्पण कर देता है किन्तु जो अज्ञानी है वह अच्छे काम का कर्ता स्वय बनता है और जब दुखद परिणाम होता है तो वह रोता चिल्लाता है, "हे भगवान यह क्या हो गया ?" अज्ञानी पुरुष का अपने कर्म पर कोई अधिकार नहीं होता, चलते-चलते मेज से ठोकर खा लेगा, और नहीं तो अलमारी बद करने मे अपनी अगुली दरवाजे मे दबा लेगा। आप देखिए, ये सब चीजे जिन से वह चोट खा रहा है निर्जीव है, कुछ करने मे असमर्थ है किन्तु अज्ञानी अपने ही स्वभाव से चोट खा रहा है और दोष किसी व्यक्ति को या भगवान को देता है।

आदमी जैसे कर्म करता है उसे अपने कर्मो का फल भी वैसा ही मिलता हे। यह तो प्रकृति का नियम है। अगर आपने बबूल बोया है तो आम के फल की आशा करना व्यर्थ है।

आदमी के सग कोई नाते रिश्तेदार भाई-बधु नहीं जाता, साथ जाता है तो केवल दान-पुण्य ही, इसलिए अपनी शक्ति और सामर्थ्य के हिसाब से दान करना चाहिये।☆

पूजा

कु आकाक्षॉ जैन (12 वर्ष)

पूजा के लिए काफी नहीं है माला घुमा देना। किसी मदिर मे कभी सिर को झुका देना। पूजा है किसी बे-आसरा को आसरा देना। किसी मजबूर का कर्जा चुका देना। किसी को जालिम से छुडवाना। किसी की मुश्किल मे काम आना। किसी भूखे को दो रोटी खिला देना। किसी नगे को कुछ कपडे दिला देना। किसी बेसहारा की इज्जत बचाना। किसी घमण्डी के सिर को झुका देना। यही पूजा है।

खुशी चाहते हो तो दूसरो को खुशी प्रदान करो। जो दूसरे को दुख देता है स्वय दुख प्राप्त करता है। यह सबसे बडा नियम है। भलाई सदा प्रसन्नता प्राप्त कराती है। बुराई सदा दुख, मानसिक उद्विग्नता, अन्दर की छटपटाहट दिलाती है।

यह ससार सुख का स्थान है क्योकि भगवन इसकी देखभाल कर रहे है। मुश्किल पडी तो क्या हुआ, मुश्किल दूर करने वाला तो है। सिर पर पडी तो क्या हुआ, सिर पर ईश्वर तो है। जब तक जियो, जब तक कर सको, भला करो, भला करो, भला करो।

जो कुछ होना है वह सब पहले से ही निश्चित है- दिव्य दृष्टि हो तो आदमी अभी देख सकता है कि क्या सब कैसे होने वाला है। भगवान का नाम सेहत, सारे बल, खूबसूरती, खुशी और आनन्द देने वाला है। ☆

जैन सिद्धांत और विज्ञान

श्री प्रवीण भंडारी

प्राकृतिक चिकित्सा आहार विहार के नियम द्वारा मानव को स्वस्थता प्रदान करती है। उसके सिद्धान्तों को देखा जाये तो वे मूलतः प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जैन सिद्धांतों से भिन्न नहीं हैं। विज्ञान आज मान रहा है कि वनस्पतियों (फल-फूल-पेड-पौधे-घास-फूस) में जीव है परन्तु जैन सिद्धान्त इस बात को कई हजारों वर्ष पूर्व सिद्ध/प्रमाण कर चुका है।

वर्तमान युग (विज्ञान युग) के वैज्ञानिक आज तक भी जिस चीज की तह (गहराई) में नही पहुंच पाये वहां जैनाचार्य, मनीषी (विद्वान) कई हजारों वर्ष पूर्व पहुँचकर सत्य प्रमाण लाये हैं।

जैन सिद्धान्तों में पानी छानकर पीना, रात्रि भोजन नहीं करना, बाजार की दूषित सामग्री का भक्षण नही करना आदि अनेक बातें हैं, जिन्हें वैज्ञानिक स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से उपयुक्त बताते हुए छने पानी के लिए घर पर वाटर फिल्टर लगाने की सलाह दे रहे हैं। प्रतिदिन विभिन्न संचार साधनों के जरिए स्वास्थ्य विभाग, विज्ञान, दूरदर्शन, आकाशवाणी द्वारा देश की जनता को समझाया जाता है पानी में अनेक छोटे-छोटे (सूक्ष्म) कीटाणु एवं अघुलनशील पदार्थ होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

सदियों (वर्षो) से आयुर्वेद चिकित्सक, डॉक्टर्स भी कहते आये हैं, सोने से कम से कम तीन घण्टे पूर्व भोजन करना चाहिए, रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। क्योंकि रात्रि में भोजन करने से अपच, एसीडीटी, कब्ज, आफरा आदि अनेक प्रकार की बीमारियों के होने का खतरा रहता है। दिन के ताप से कई सूक्ष्म कीटाणु मर जाते हैं ? जबकि रात्रि को उत्पन्न हो जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अति घातक होते हैं। जैन धर्म ने यह बात हजारों वर्ष पूर्व कही है, वह वैज्ञानिक आज सत्य मान रहे हैं और जीवन में स्वीकार कर रहे हैं। जैन सिद्धान्त के अनुसार पदार्थ बहुत ही छोटे कणों से बना है जो इतने सूक्ष्म हैं कि माइक्रोस्कोप से भी नहीं दिखाई देते हैं इसी बात को आज विद्यालयों में बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बताई जा रही है। प्रातःकाल नवकारशी को जैन सिद्धांत में बहुत महत्त्व दिया गया है। इसे भी आज विज्ञान स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से अति उत्तम मानता है। क्योंकि रात्रि में जो सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते हैं वह सूर्योदय के साथ (सूर्य के ताप से) समाप्त हो जाते हैं। इस हेतु सूर्योदय से अडतालीस मिनट बाद अन्न जल लेने से वे हमारे भक्षण (खाने में) में भी नहीं आते जो कि स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं एवं हमारे सिद्धान्त से जीव हिंसा भी नहीं होती।

हर खाद्य पदार्थ को शुद्ध रखने की समयावधि जैन सिद्धान्त में बताई है। विभिन्न खाद्य पदार्थों में जीव कितने समय में उत्पन्न हो

जाते है यह तथ्य विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। उसके अनुसार प्रत्येक सामग्री खाद्य पदार्थों पर समाप्ति दिनाक डालना अनिवार्य कर दिया गया है। जैन सिद्धातो मे शाकाहार सदैव प्रथम स्थान पर रहा है। शाकाहार सभी दृष्टि से देखा जाए तो श्रेष्ठ है, यह हमारी बुद्धि, विवेक, मानवता को सदैव जगाए रखता है। हमारे जीवन को सदाचारी बना, दीर्घायु प्रदान करता है। इसी बात को ध्यान मे रख आज पश्चिमी देश भी शाकाहार को बढावा दे रहे है। जल्दी सोना, जल्दी उठना जो कि हमारी प्राचीन सस्कृति का नियम है, इसे भी विज्ञान ने सहर्ष स्वीकारा है। जीवन को सफल बनाने हेतु जो सिद्धात विज्ञान आज बता रहा है इन सिद्धान्तो को हमारे केवली परमात्मा, जैनाचार्यों, मनीषियो द्वारा हजारो वर्ष पूर्व बताये गये थे। यदि दृढ़ता एव विश्वास से देखा जाए तो जैन सिद्धान्त पूर्ण रूपेण विज्ञान पर आधारित एक पवित्र जीवनशैली है जो प्रेम, करुणा, अहिंसा और अनेकान्त रूपी रत्न को पाप्त करने मे सहायक होते है। ये सिद्धान्त वर्तमान मे बिलखती चित्कार करती मानव जाति के लिए अमृत के समान है। ✫

(पृष्ठ स 56 का शेष भाग)

सावधानी रखने की। आज छोटी सी रेल यात्रा मे असावधानी रखने पर हमारा कीमती सामान चोरी चले जाने का हमे हर समय भय रहता है, हमे चौकन्ना रहना पड़ता है। यात्राओ मे कितनी सावधानी की आवश्यकता है इसका अनुमान तो हम सहज ही लगा सकते है। जब सासारिक रेल, बस आदि की यात्राओ से हम उकता जाते है तब हमारी विश्राम की इच्छा होती है, हम विश्राम करते है लेकिन यह विश्राम हमारा अल्पकालीन होता है, इसमे स्थायित्व का अभाव होता है जबकि इस सासारिक विश्रामस्थल से परे जीव का एक स्थाई विश्राम घर है जो लोक अत मे है वहा जाकर फिर ससार मे आना नहीं पड़ता है। जन्म मरण क बधन से सदैव के लिये छुटकारा मिल जाता है। वह छुटकारा पाने के लिये तो हमे तीर्थकरो द्वारा भाषित चार प्रकार के धर्म-दान, शील, तप और भावना का अनुसरण करना पड़ता है। इन चारो प्रकार की धर्माराधानो के लिये वर्ष मे कई पर्वो का वर्णन किया गया है उनमे पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व मुख्य है। तो आईये हम इनकी ऐसी आराधना करे कि जिससे हमारा भवभ्रमण हमेशा के लिये खत्म हो जाय।

ऐसा ही शुभातिशुभ प्रयास हमारे महापुरुषो ने किया और अपने भव का अत किया, उन्होने हमारे लिये भी वही मार्ग बताया जो अपने लिये किया फिर उसमे देर किस बात की।

'शुभ भवतु'। ✫

कितना उचित है दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप

श्रीमती संतोष देवी छाजेड़

दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप करना कतई सामाजिकता नहीं कही जा सकती । यह तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने की कुचेष्टा है । सलाह या मार्गदर्शन के नाम पर किया गया हस्तक्षेप मानव द्वारा मानव की स्वतंत्रता का हनन है। दूसरों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप करने की नीति से आत्मविश्वास में कमी आती है । चाहे स्त्री हो या पुरुष वह अपने निजी विचार एवं दर्शन रखता है । जिनके आधार पर जीवन को उपयोगी एवं रचनात्मक बनाने का प्रयास करता है । उसे अपने कार्यो पर प्रेरणा एवं प्रशंसा चाहिए न कि किसी प्रकार का हस्तक्षेप ।

अकारण ही दूसरों के विचारों को नकारते हुए अपने ही विचारों को थोपने का प्रयास करना हस्तक्षेप करने की सबसे भौंडी एवं घातक प्रणाली है । यह कहा जा सकता है कि हस्तक्षेप करना कभी मार्गदर्शन नहीं हो सकता अपितु यह तो मार्ग का बंधन है जहां न सोच है और न गति । अच्छा क्या है और बुरा क्या है इसे एक निश्चित आयु तक तो सिखाना उपयुक्त रहता है किन्तु असामाजिक मान्यताओं एवं संकीर्ण मानसिकताओं से ग्रस्त विचारों के भय से दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप करने के औचित्य पर विचार करना आज अनिवार्य हो गया है । व्यक्ति की सीखने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। वह अनुभवों के आधार पर सीखता भी है और निष्कर्ष भी निकालता है तथा अधिकतर यह देखा गया है कि व्यक्ति अच्छा करने एवं अच्छा सीखने के सतत प्रयास करता है जिससे उसे सफलताएं भी मिलती हैं, अच्छाई भी मिलती हैं और बुराई भी। वह अपने विवेक एवं परिस्थितियों के अनुकूल हर बात को समझने का प्रयास करता है किन्तु यह तभी संभव है जब व्यक्ति के जीवन में बात-बात पर हस्तक्षेप करके उसे हतोत्साहित न किया जाए। व्यक्तिगत जीवन हो या पारिवारिक जीवन दोनों में ही हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए । अनेक व्यक्तियों का यह शौक होता है कि वे स्वयं एवं अपने परिवार की ओर कोई ध्यान नहीं देते किन्तु दूसरा क्यों और क्या कर रहा है, इस बात को जानने के लिए चिंतित अवश्य रहते हैं तथा जब भी जहां भी मौका मिलता है आलोचना करने से चूकते नहीं ।

अतः किसी के कार्यो में अनावश्यक हस्तक्षेप करने एवं बिना मांगे सलाह देने से वचना ही श्रेयस्कर है । ☆

सामायिक क्या, क्यों और कैसे ?

श्री रतनलाल रायसोनी जैन, जयपुर

सामायिक का प्रभाव सामायिक का अर्थ सम+ईक=स्वय से मिलन का रास्ता अर्थ के साथ-साथ इस शब्द की व्याख्या भी करनी है।

जैसे आप रोज रोज परिवार से मिलते हे आप रोज-रोज समाज के लोगो से मिलते है, आप यदि किसी सार्वजनिक व्यापार मे है, तो नये-नये ग्राहक से मिलते है आप यदि किसी सरकारी पद पर है तो नित नये लोगो से मिलते है। कई नये पुराने व्यक्तियो के सम्पर्क मे आते है। यही नहीं ससार मे कई-कई नयी वस्तुओ से भी मिलते है, जिसका आपसे कोई सबध नहीं है, फिर भी मिलते ह लेकिन इसके बाद भी आपको अपने आपसे मिलने का समय नहीं है, अपनी आत्मा से साक्षात्कार करने का अवसर नहीं है लेकिन सामायिक के माध्यम से अपनी आत्मा से मिलने का अवसर है। यह अवसर सासारिक सबधो से अलग रहने की एक क्रिया हे। स्वय के उद्धार का साधन मात्र है क्योकि शरीर साधन है ओर आत्मा अमर है। पूर्वाचार्यो ने यह सामायिक का समय इतना कम रखा कि साधारणत मनुष्य को पता नहीं चलता है। 24 घटे मे से केवल 48 मिनिट इस सुअवसर का वर्गीकरण कई प्रकार से कर सकते हैं जैसे माला गिनना, क्रिया करना, स्वाध्याय करना, स्तवन, सज्जाय इत्यादि अपने को रुचि लगे ऐसा समय का उपभोग कर सकते है, इत्यादि।

यह समय पूर्वाचार्यो ने एक के बाद एक को विरासत मे दिया है जैसे कि अतीत चौबीसो के प्रवर्तक, वर्तमान चौबीसी के प्रवर्तक आदि साधु साध्वी श्रावक श्राविका वृन्द ने एक के बाद दूसरे को विरासत मे दिया है।

हम सब वर्तमान चौबीसी के अन्तिम तीर्थकर महावीर के उपासक ह जिन्होने ससार को बताया कि जीयो और जीने दो। महावीर ने कहा कि सबका किया कार्य अधिक आनन्द देता है इसी प्रकार स्व का किया धर्म उपकार भी उतना ही आनन्द देता है। यह सत्य है कि वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर भगवान महावीर ने स्वय के कानो मे कीले ठुकने के बाद भी दूसरो को दोष नहीं दिया बल्कि यह कह दिया कि मैंने जो भी कष्ट दूसरो को हस-हस कर दिया है उसके अनुरूप ही आज मुझे भी यही उपसर्ग, कष्ट भोगना पडेगा।

सामायिक मे एकाग्रता ओर शात वातावरण होना आवश्यक है इसीलिए अधिकाश तीर्थ स्थल पहाडो पर है जहा पूर्ण शाति और सुरम्य वातावरण मिलता है जैसे सम्मेत शिखर, सिद्धाचलजी, शखेश्वर, तारगाजी, बद्रीविशाल,

वैयारिकगिरी गढ़ गिरनार, यहां तक कि जयपुर में चूलगिरी भी जयपुर नगर से दूर दुर्गम पहाड़ी पर ही नवीन स्थान की स्थापना की है ।

एक संस्मरण और है जिसमें मिनिट के मौन को महत्त्व दिया है । योरोप के ही नहीं वरन संसार के महान हंसोड़े कलाकार चार्ली चेपलीन ने अपनी जीवनी में लिखा है कि 1 घंटे में से केवल 2 मिनट के लिए आंखें मूंद लेने से जो आनन्द मिलता है उसका कोई जवाब नहीं है । 24 घंटे में की गई सामायिक भी मात्र 2 मिनट की आराधना, साधना है ।

सामायिक क्यों और कैसे ?

सामायिक स्वयं को आत्मा से मिलाने का साधन मात्र है । यह सही है कि सामायिक करने के लिये घर से दूर उपाश्रय, स्थानक, साधना स्थल पर जाना श्रेयस्कर है लेकिन आज के युग में घर से निकलना भी दूभर है तथा जो स्थान शहर से दूर है आवागमन के साधन यातायात तथा अन्य परेशानी भी अवरोध है । और घर में घर का वातावरण, कोलाहल- टी.वी., रेडियो तथा आस-पास के वातावरण में टेपरीकार्डर इत्यादि का चलन है । फिर भी मेरा मानना है कि थोडा समय भी जीवन में बदलाव ला सकता है । कहा भी है कि—

BETTER LATE THAN NEVER.

करत-करत अभ्यास के जडमत होत सुजान ।
ररारि आवत जात ते सिल पर होत निशान ॥

मेरा स्वयं का अनुभव है, जो सबके साथ बांटना चाहता हूँ । मेरे में भी सब एब थे, सामयिक प्रभाव से वे अब भूल गया हूं, छोड दिये हैं, मैंने भी धीरे-धीरे साहस जुटाकर सब कुछ पाया है यहां तक कि सभी सुखों के साथ साथ संतोष धन भी पाया है ।

जो धन, गजधन और बलिधन रतन धन खान,
जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान ।

सामायिक का प्रभाव

सामायिक एक प्रक्रिया है जिसमें व्यावहारिक कपडे बदलाकर बिना सिले हुए वस्त्र पहन कर बैठना होता है । एक वस्त्र से शरीर के नीचे के अंग ढकना होता है तो दूसरे वस्त्र से ऊपर का शरीर । कोई मुँहपत्ती बाधंता है तो कोई हाथ में रखता है आसन तो होता है मुंहपत्ती रखने का अर्थ है संयम से बोलना आदि । जैसे कोई मनुष्य में अन्न जल के अभाव में शरीर में कृशता आती है कमजोरी आती है, जैसे ही अन्न जल की उपलब्धता होती है शरीर स्वस्थ हो जाता है । ठीक उसी प्रकार जो मनुष्य सामायिक नहीं करता है उसकी आत्मा भी कमजोर हो जाती है लेकिन सामायिक करने वाले के मन में आत्म बल उत्पन्न हो जाता है । इसका महत्त्व वही जान सकता है जो सामायिक करता है । सामायिक एक प्रेम रस है जिसे जो करता है वही पा सकता है । जो नहीं करता वह वंचित रह जाता है ।

जय महावीर ।

सद्गुरुशरण

श्री राजेन्द्र लूनावत

अनेक पतझड एव झझावातो से झकझोरा हुआ जीवन एक राह पर आ खडा होता है । वस्तुत वह जीवन ही क्या जो सघर्ष एव सफलता का अनुभव ही न करे । दुनिया इसी का नाम हे जो सुख के सपने एव दुख की दुनिया को बनते बिगडते देखे । परिमार्जित जीवन की सीढी से चढते उतरते आशा और निराशा से सराबोर हो । इस अपार ससार दरिया के जल की शीतलता अथवा उष्णता को समभाव प्रदान करने की पतवार मात्र सदगुरु शरण है ।

जो अपने जीवन मे सद्गुरु की शरण स्वीकार कर लेता है, निश्चित रूपेण सफलता की कुजी पा जीता है । जीवन धन्य बना लेता हे । अपने बुद्धिबल को एक सच्चा प्रकाश देकर हृष्ट-पुष्ट बना लेता है सदगुरु शरण बिन जीवन बिना बाती के दीपक सम होता है । किसी कवि ने सही ही कहा है—' गुरु गोविद दोउ खडे, काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपणो गोविद दियो बताय।'' वस्तुत गुरु अभिष्ट से मिलाने वाला है, सर्वार्थ सिद्धि प्रदाता है । सद्गुरु ज्ञान का पुज होता है, लब्धि का निधान होता है । माता जिस प्रकार अपनी सतान की प्रगति से प्रसन्न एव सतुष्ट बनती है उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य की सफलता से प्रसन्न एव हर्षित होता है । फलत गुरु, शिष्य रूपी गागर मे सागर भरता है । जैन जगत मे परमात्मा महावीर के प्रथम शिष्य गणधर पद से विभूषित अनन्त लब्धि के निधान इन्द्रभूति गोतम प्रत्यक्ष प्रमाण है जिन्होने स्वय केवल ज्ञान न पाकर गुरु के प्रति समर्पण भक्ति से ही सतुष्टी पायी। 500 शिष्यो को केवल ज्ञानी बना दिया । इष्ट दान मे कल्पवृक्ष भी जिनकी समता नही धरता।

जैन जगत मे परमात्मा ऋषभदेव के युग से यही परम्परा रही है कि सभी तीर्थकर समोशरण मे देशना देते हुए, सशय निवारण करते हुए साधुपद की स्थापना से चतुर्विध सघ एव जिन शासन की स्थापना करते है परमात्मा के ये प्रथम शिष्य ही गणधर पद को सुशोभित करते हुए इन्होने परमात्मा द्वारा भाषित त्रिपदी देशना के सार को अपनी रास भक्ति एव परमात्मा के अतिशय से आगम मे सजोया- इन आगमो के 36 अग (विभाग) है । इस जिनवाणी को परमात्मा क विरह काल मे उनके पट्टधर गीतार्थ गुरु हमे आगम सार के रूप मे रसास्वादन कराते रहे हे इसी श्रृखला मे आज भगवान महावीर के 2500 वर्षोपरात भी हम, जिनवाणी का अमृत सिचन उनकी पट्ट परम्परा मे शोभित सद्गुरुओ से पाते है।

गुरु के उपकारो की यशोगाथा जितनी गाई जाए कम है। सद्गुरुओ के प्रताप से ही आज हमे सद्साहित्य का विपुल भडार उपलब्ध है । इसी कडी मे राजस्थान मे जैसलमेर के विपुल

ज्ञान भंडार आज भी अनेक गुरुओं द्वारा रचित एवं ताम्र पात्र हस्त लिखित ग्रन्थों के रूप में उनकी यशोगाथा गाते हैं । यह ऐसा अद्वितीय अनूठा संकलन है जिसमें जीवन के हर पहलू की पेचीदगी एवं गुत्थियों का सुगम समाधान सुलभ है- चाहे आध्यात्मिक जगत हो, चाहे भौतिक व रासायनिक प्रसंग उन सद्गुरुओं ने आज की क्लिष्टतम समस्याओं का भी समाधान अपनी कृतियों में संजो रखा है । इस साहित्य में अपनी सतत् दीर्घ साधना, चिंतन व मनन का पृथक प्रयास एवं गहन अध्ययन का पांडित्य एवं मर्म परोसा है, जिसे हम अल्पकाल में इनके अध्ययन से पा जाते हैं । गुरु कृपा का इससे बढ़कर और क्या जीवंत प्रमाण होगा ।

जैन जगत में गुरुभक्त ऐसे अनेक देदीप्यमान नक्षत्र हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से भावी पीढी के ज्ञानार्जन के लिए बहुत कुछ किया है । ऐसे ही प्रखर एवं तीक्ष्ण बुद्धि के धनी प्रगाढ ज्ञान के भंडार 1444 ग्रन्थों के रचयिता श्री हरि भद्र सूरि हुए हैं, जिनकी प्रतिभा का द्योतक उनका साहित्य है ।

सदगुरु साधना के सागर होते हैं, उनके सान्निध्य से ही मंत्र भी सधते हैं- गुरु वाणी मंत्र सम फलती हैं यदि श्रद्धा से उनका सामीप्य कर ज्ञानार्जन एवं आत्मरंजन किया जाए । आत्मा परिमार्जित होकर जीवन उपकृत एवं सन्मार्गी बनता है मात्र सदगुरु शरण से । दुराचार एवं दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति मिलती है मात्र सद्गुरु शरण से । गुरुवाणी श्रवण से आत्मा को परमात्मा में विलीन होने का मार्ग प्रशस्त होता है । गुरु निष्ठा श्रद्धा एवं विवेक को जाग्रत कर क्रिया के प्रति निष्ठावान बनाकर सतत् साधना को प्रेरित करती है । गुरु द्रोणाचार्य का एकलव्य को बाण चलाने की कला सिखाने हेतु शिष्य बनाने से इन्कार करने पर शिष्य एकलव्य द्वारा गुरु की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर उसको इष्ट एवं आराध्य गुरु मान कर एक सच्ची सोच से बाण कला में निपुणता प्राप्त करने का ज्वलंत प्रमाण इतिहास में साक्षी है । सच ही कहा है गुरु बिन ज्ञान नहीं । गुरु गम्य बनकर सच्ची भक्ति एवं लगन से ज्ञानार्जन सुगम होता है ना कि मात्र ग्रन्थ एवं शास्त्रों को अपनी आलमारी में सग्रहित कर संजोने से । प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरुकुल व्यवस्था भी गुरु के प्रति श्रद्धा भक्ति का अटूट प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है । आज के भौतिकवादी युग में गुरु के प्रति युवा वर्ग में घटती हुई श्रद्धा अनेक समस्याओं का सृजन मात्र कर रही है । जैन जगत के सर्वसार मंत्र नवकार में भी गुरु पद की महिमा 3 पदों में गाई है । आचार्य उपाध्याय एवं साधु पद-गुरुपद की श्रृंखला में ही आते हैं । वस्तुतः साधु पद गुरु पद की पहली सीढी है जिसकी सफल साधना आचार्य पद तक पहुंचा कर अरिहंत एवं सिद्धत्व को दिलाती है ।

आइए हम सब मिलकर शुद्ध मन से भावपूर्वक पर्वाधिराज पर्यूषण की आराधना करते हुए शुद्ध हृदय से क्षमा भाव को जीवन में संजोए एवं सदा गुरु शरण में रहकर सभी जीवों के साथ करुणा मैत्री भाव को परिवर्तित करते हुए आत्मा को विशुद्ध निर्विकार, निरंजन, निराकार बनाकर सिद्ध शिला पर आरोहण कराने में अग्रसर हों ।

☆

अमूल्य मोती

संग्रहकर्ता—श्री दर्शन छजलानी

मत्र जीवन शुद्ध करना है तो खून शुद्ध करो, खून शुद्ध करना है तो आहार सुधारो। आहार शुद्ध बनाना है तो नवकार मत्र गिनो, जाप द्वारा अन्न के कण-कण को पवित्र करो।

सुख-दुख सुख और दुख एक सिक्के के दो पहलू है। किन्तु यदि दुख मे ही लीन रहोगे तो दुखी बनोगे। सुख का अनुभव करोगे तो सुखी बनोगे। दोनों का साथ चितन करोगे तो वैरागी बनोगे। यदि दोनो से विरक्त हो जाओगे तो वीतरागी बन जाओगे।

अति आचार बडा सुन्दर शब्द है, उसके साथ 'अति' जुड जाये तो बनेगा अत्याचार। अर्थ का अनर्थ हो जायेगा, हर वस्तु के साथ अति जुड जाये तो बनी बनायी वस्तु को विकृति और विनाश की ओर ढकेल देती है।

धर्म धर्म माने क्या है ? विश्व के सत्य एव सनातन नियमो का निरासक्त अभ्यास। सत्य एव सनातन भावो का सहज भाव से स्वीकार।

दिव्य शक्ति कार्य के आरम्भ मे जिसमे विवेक हो, कार्य करते समय जिसमे जाग्रति हो, कार्य के बाद जिसमे धैर्य व क्षमता हो, उसकी दिव्य शक्ति जाग जाती है। उसे दिव्य शक्ति की अपेक्षा नहीं रहती।

सत्य की रक्षा जीवन सोचने और सही कहने और सबधो की सुरक्षा के लिए ही नहीं बल्कि सत्य की रक्षा के लिए भी है।

सगम भक्ति एव समर्पण की भावना मे फूल की सी सुगध है, और वह सुन्दरता और सदुपयोगता का सुन्दर सगम है।

धन्य जीवन मानव जीवन पाकर साधु सतो के आशीष पावे तो जीवन धन्य होता है। आशीष प्राप्त न कर सके तो इतना निश्चय करना है कि किसी से न सेवा लेगे और न आश्वासन।

विद्या सच्ची विद्या की प्राप्ति गुरु के पास बैठने मात्र से नहीं होती, अपितु गुरु के हृदय मे प्रवेश करने से होती है।

पुण्योदय आप दुर्जन से दूर रहेगे तो आपका अकेले का पुण्योदय जाग्रत होगा लेकिन आप दुर्जनता से दूर रहेगे तो आपके साथ लाखो का पुण्योदय जाग्रत होगा।

सफल जीवन देने के लिए जीवन जीना आसान है, किन्तु पाने के लिए जीवन जीना मुश्किल है।

वास्तविकता चिन्तन तीन प्रकार के होते है, निराशावादी, आशावादी एव वास्तविकता वादी।

निराशावादी कहते है कि ससार मे केवल अधकार है, दो रातो के बीच केवल एक ही दिन आता है। आशावादी कहते है कि ससार

प्रकाशवान है, दो दिनों के बीच केवल एक ही रात आती है। किन्तु वास्तविकतावादी कहते हैं कि दिन और रात की संख्या समान है। तुम जीवन में आशावादी यदि बन नहीं सकते तो कोई बात नहीं किन्तु वास्तविकता को अवश्य स्वीकारो।

पवित्र पाया : जिसका पाया पवित्र है उसका सर्वस्व पवित्र है। गृह का पाया माता है नेता का पाया मंत्री है। जीवन का पाया संयम है धंधे का पाया प्रामाणिकता है, भक्ति का पाया समर्पण है, संघ का पाया एकता व प्रेम है, समाज का पाया संत है, धर्म का पाया सत्य है।

मांग : प्रभु से कुछ भी मांगने की आवश्यकता नही है, यदि मांगना है तो ऐसा मांगो जो जिनेश्वर के सिवाय कोई अन्य नहीं दे सके।

शुभ दिन : जन्म दिवस माता-पिता के प्रति कृतज्ञता की घोषणा का दिवस दीक्षा दिवस-गुरु कृपा की प्राप्ति का दिवस।

धीर-वीर : वीतरागिता प्राप्त करनी है तो जो होता है उसे मात्र देखते रहें उससे शोकाकुल न होवे और न हर्षित होवे। उसका तिरस्कार इन्कार एवं धिक्कार न करें। उसका स्थिरता से निरीक्षण करते रहें, धीर बनकर सहन करते रहें, तब आप वीर बनकर विजयी होंगे।

धर्म की आराधना : धर्म की आराधना के लिए समय + शक्ति + समझ की आवश्यकता है। बाल्यावस्था में समय है + शक्ति है पर समझ नहीं है। युवावस्था में शक्ति है + समझ है पर समय नही है, वृद्धावस्था में समय है + समझ है पर शक्ति नही है। अर्थात् जीवन में एक भी अवस्था ऐसी नही है जिसमें तीनों का संगम हुआ हो। इसलिए जब-जब अवसर मिले तब-तब उसका लाभ अवश्य उठालें।

तिजोरी : मन तिजोरी है, उसमें केवल ज्ञान, क्षमा, संतोष आदि रत्न है पर मोह राजा ने सील लगाकर उसे बंद कर दिया है। उस पर क्रोध, मान, माया, लोभ नाम के पहरेदार खडे कर दिये हैं। हटाइये मोह को, सील निकाल दें तो केवल ज्ञान प्रकट होगा।

जैन धर्म : अनंत प्राणियों के अनंत अपराधों को, अनंत क्षमा करने वाला धर्म ''जैन धर्म''।

जय महावीर ! ☆

सब लोगों की शारीरिक प्रकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। अतः सबके लिए न उपवास तप है और न खाना तप। किसी के लिए उपवास तप है और किसी के लिए खाना तप। साधक को अपनी शारीरिक प्रकृति के अनुसार चुनाव करना चाहिए। ध्यान की प्रगति में जब उपवास सहायक लगे तब उपवास को और जब युक्ताहार (पौष्टिक तथा मात्रायुक्त भोजन) सहायक लगे तब युक्ताहार को प्राथमिकता देनी चाहिए। न उपवास का आग्रह उपयुक्त होता है और न खाने का आग्रह उपयुक्त।

जैन पहेलियाँ

श्रीमती कल्पना जैन (आवड)

1 दो अक्षर का मेरा नाम
रहता है वह सुख के धाम
काम-धाम से है बेकाम,
जान पाए कोई मेरा नाम । (सिद्ध)

2 मै हूँ सब पापो का बाप,
नाम बताये मेरा आप
सारा जग मेरे अधीन,
सब कुछ फिर भी मैं दीन। (लोभ)

3 मुस्कुराती है सूरत मेरी
मनमोहक है मूरत मेरी
मै सारे जग को ठगती हूँ,
दो अक्षर से वश करती हूँ (माया)

4 दो अक्षर का मेरा नाम,
पॉच भाइयो का है धाम
मुझको जो अपनाता है,
वह नरको मे जाता है । (पाप)

5 तीन अक्षर का मेरा नाम
आता हूँ मुक्ति के काम
प्रथम कटे ता रम जाऊँ,
अन्त कहे तो घर जाऊँ । (धरम)

6 जिसके सिर पर मै हूँ आता,
उसके होठ भुजा फड़काता
जो मुझमे अधा हो जाता,
छोटा वड़ा न उसे सुहाता । (क्रोध)

7 मै सबको कसकर दु ख देती,
सबकी सुख शाति हर लेती
मै हूँ आकुलता की माता,
मेरा नाम किसे है आता । (कषाय)

8 मुझे चाहिये रुपया पैसा,
बोलो मेरा रूप है कैसा
तृष्णा देवी मेरी माता,
तीन लोक की सम्पत्ति खाता (परिग्रह)

9 जो जीवो को दु ख देता है,
वह मुझको धारण करता है
राग-द्वेष ही मेरा भाई,
मुझसे ही दुनिया भरपाई (हिसा)

10 एक स्थान ऐसा है ना वैसा
जीव अनत रहते वहा पर
लड़ते है न भिड़ते वहॉ पर
फिर भी आनद रहता । (मोक्ष)

सब कुछ कर्माधीन

श्री प्रताप सिंह लोढा, जयपुर

मनुष्य का शरीर सांसारिक कर्मो के संपादन का साधन है। मनुष्य के कर्म से ही पुनर्जन्म अथवा मोक्ष की पृष्ठभूमि तैयार होती है। मानव शरीर जीव को अनेक योनियों मे भटकने, अनेक जन्मों के पुण्य कृत्यों से मिलता है। यही कारण है जिससे मनुष्य जन्म को बहुत दुर्लभ और मूल्यवान कहा गया है। मनुष्य जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसे कर्म योनि और भोग योनि दोनों कहा गया है। इसके अलावा मनुष्य में पुण्य संचय और परलोक सुधार की योग्यता भी होती है। भगवान ने मनुष्य को बुद्धि भी दी है जिससे उसे अच्छा/बुरा का ज्ञान प्राप्त होता है। मानव के सुखी होने का मतलब वह तन से पुष्ट है और मन से तुष्ट है।

मनुष्य का कर्म हमेशा उसके साथ उसकी परछाई की तरह रहता है। मनुष्य को कर्म करने में उसकी आत्मा भी बहुत बडा पार्ट प्ले करती है। आत्मा स्वयं में शुद्ध होती है, शीतल और निजगुण स्वभावी होती है अतः आत्मा मनुष्य को बुरे कर्म/पापकर्म करने के लिए बाध्य नहीं करती है लेकिन अनादिकाल से यह तर्क चला आ रहा है कि कभी आत्मा ने कर्म को पराजित किया है और कभी कर्म ने आत्मा को। मतलब यह हुआ कि कौन किसको पराजित करता है यह अभी भी अज्ञात है। जीव जब अपना स्वभाव भूल जाता है तब कर्म उसे अपना गुलाम बना लेता है और उसे संसार में भ्रमण कराता है। जीव कर्म को बांधने वाला है और कर्म बंधने वाला है। जीव अपनी अज्ञानता के कारण यह समझाता है कि वह कर्म के अधीन है। कर्म जैसा चाहेगा जीव को वैसा करना पडेगा। वह सोचता है कि मानव जब पैदा होता है तब उसके पूर्व जन्म पाप पुण्य का इतिहास उसके साथ लेकर आता है और उन पाप पुण्य के कर्मो के इतिहास के अनुसार उनके संबंधित ग्रहों में पैदा होता है और यही ग्रह कर्म और आत्मा को पराजित करता है। ये ग्रह अपना प्रभाव उन पर डालता है और उसी अनुसार अमुक अमुक कर्म मनुष्य को करने के लिए बाध्य करते हैं। मनुष्य के कर्म उसके चाहने और न चाहने से नहीं किए जा सकते हैं। कर्मो में तब्दीली बहुत मामूली तौर पर ही हो पाती है जो मनुष्य राग-द्वेष, मोह माया के जाल में फंसा हुआ है वह पापात्मा कहा जाता है और जो मोह माया, राग द्वेष से मुक्त है वह पुण्यात्मा कहा जाता है। प्राणघात फरेब, व्यभिचार, झूठ, निन्दा, कटुवचन, कटुवाणी, पर-स्त्री गमन, असत्य, दूसरों की बुराई की इच्छा, असत्य, हिंसा, दया, दान में अश्रद्धा आदि में लिप्त मनुष्य पापात्मा है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र वाला मनुष्य पुण्यात्मा है।

भगवान सर्वज्ञ है, निराकार है। ईश्वर और अराध्य की महिमा श्रद्धा और निष्ठा पर टिकी है आपके मन ने जिस पत्थर को भगवान मान

लिया उसमे भगवान अवतीर्ण हो जाता है। विश्वास और निष्ठा के बिना न मूर्ति मे भगवान है, न मदिर मे। ईश्वर मनुष्य के हृदय मे होता है। अत भगवान भावना मे होता है ओर इसीलिए भावना के बिना अराध्य कहीं नहीं है—''भावना हि भगवान है'' ओर यही कारण है कि हम हमारे तीर्थकरो के गुणा की मूर्ति म भगवान भावना मे रखकर उनकी पूजा करते है।

इस तनाव भरे विषाक्त वातावरण मे स्वय के द्वारा स्वय को देखना ही सही समाधान है। यह अर्थ युग है। मनुष्य के सारे विचार अर्थ केन्द्रित है और उसी के उपार्जन मे पागल हो रहा है और यह नहीं देखता है कि वह इसके उपार्जन मे नैतिकता अपना रहा है या नहीं, कहीं दूसरे के हक को तो नहीं मार रहा है सचय वह पाप कर्म से कर रहा हे या पुण्य कर्म से। वह तो धनोपार्जन कर उसकी पहचान बनाने मे लग रहा हे। ऐसे धनोपार्जन से पापो का बधन होता हे। वह जा पापो का बधन कर रहा है उसे इस लोक मे और परलोक मे भोगना ही पडेगा। अपना यहा का जीवन व परलोक का जीवन दु खमय और हीनयोनि मे पुनर्जन्म को जन्म दे रहा है। ऐसी धारणा प्रचलित है कि जीव को मनुष्य जीव चौरासी लाख योनियो मे बावन अरब वर्ष गुजरने के बाद मिलता है।

क्षमा करना बडा धर्म है चाहे छोटे से मागी जाय या बड़ो से। धर्म को हमेशा मनुष्य को हर कर्म के साथ परछाई की तरह चिपकाए रखना चाहिये ताकि अपका हर कृत्य सतकृत्य होगा। हर सत्कार्य—सत्य बोलना, विवेक रखना, दानी होना, करुणा रखना, दया रखना, दूसरे के दु ख दर्द मे शेयर करना उसकी सेवा करना, दरिद्र व्यक्ति का परोपकार करना उसको अपने पुत्र की तरह वात्सल्यता देना यह सब पुण्य कार्य है, यही तीर्थ है।

तपस्या करना आसान है लेकिन तपस्वी की जाच तो उसके ससार के प्राणियो के सम्पर्क मे आने पर ही मालूम की जा सकती है। सासारिक वातावरण मे आने पर वे कितना सयम रख पाते ह यह देखने की बात है। अपने पाप पुण्य के बधन के कर्मो का आये दिन समीक्षा करते रहना चाहिए ताकि जो पाप कार्य हमारे द्वारा हो गए हे वे दुबारा न हो पाए। इससे हम जीवन मे पाप बन्धनो को छोडते हुए पुण्यार्जन कार्य मे अग्रसर होते जाएगे। अन्त करण से आत्मसात् होने पर ही यह लोक व परलोक सुखमय या मोक्ष के मार्ग पर ले जाने मे सक्षम होगा। ☆

हे चेतन। तुझे परम-पुण्योदय से दुर्लभ मानव-भव मिला है तो अब तू अपने ज्ञान को उज्ज्वल कर। मानव-जीवन के परम कर्त्तव्य को समझ। यह अमूल्य जन्म निष्फल न हो भावी दु खो-आपत्तियो का कारण न बने इस हेतु हित-अहित कर्त्तव्याकर्त्तव्य, प्राप्तव्य का विवेक कर- उनके अन्तर को समझ।

ह्रिंकार धाम-नागेश्वर तीर्थ

श्री चिमन भाई मेहता

प्राचीन काल से ही भारत वसुन्धरा देवताओं को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। अपने 24 तीर्थकर इसी भूमि पर अवतरित हुए हैं। उनमें से 23वें तीर्थकर श्री भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के विभिन्न तीर्थस्थल यथा शंखेश्वर, कापरडा, नाकोडा, मेडता, नागेश्वर आदि साधु भगवन्तों एवं यात्रियों की आस्था के प्रमुख केन्द्र स्थान रहे हैं।

जिन शासन शिरोमणि, महान तपस्वी नमस्कार महामंत्र आराधक, भगवान महावीर का अहिंसा का संदेश जन-जन तक पहुंचाकर विश्वशांति की पताका फहराने वाले, देवद्रव्य वृद्धि पर विशेष श्रद्धा प्रेमी, दिव्यमणि समान पू. आचार्य श्रीमद् विजय ह्रिंकार सूरीश्वर जी म.सा. की गुणगाथा का प्रमुख केन्द्र ह्रिंकार धाम नागेश्वर तीर्थ पर निर्माणाधीन है।

आपके जयपुर में सम्पन्न हुये चातुर्मास काल में आपकी सद्प्रेरणा से श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय में प्रारम्भ हुई सामूहिक स्नात्र पूजा की व्यवस्था, जिन भक्ति की अनूठी परम्परा निर्बाध गति से चली आ रही है। नागेश्वर धाम में श्री करमचंद जी वाफना के सुपुत्र आप श्री आचार्य श्री भगवन्त भगवान पार्श्वनाथ के दरबार में प्रभु भक्ति में लीन होकर दिनांक 20.4.92 को पंचतत्त्व में विलीन हो गये थे।

आपके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि देने के बाद आपके परिवार और गुरुभक्तों द्वारा यहां पर गुरुमंदिर ह्रिंकार-धाम बनवाने के लिये विचार व्यक्त किये। जिस पर तीर्थपेढी नागेश्वर द्वारा भी स्वीकृति प्रदान कर दी गई। इतना ही नही गुरुभक्तों की ओर से पू. आचार्य श्री की प्रतिमाह पुण्यतिथि पर बम्बई, जयपुर, मद्रास, रतलाम, दिल्ली, जावरा आदि स्थानो से भक्तगण पधारकर बडी-बडी महापूजनों का आयोजन कर अपनी ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

यहां पर विशालकाय गुरु मंदिर बन रहा है जिसके तलघर में पू. गुरुदेव की "27" इंच की प्रतिमा एवं पार्श्वनाथ पट्ट विराजमान किया जायेगा। प्रथम तलघर पर मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान आजू-बाजू चन्द्रप्रभु एव विमलनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान की जायेगी।

पू. गणीवर्य श्री पद्मविजय जी म.सा. ने प्राण प्रतिष्ठा का मुहुर्त माघशुद्धि छट्ठ ता. 11.2.2000 प्रदान किया है। सभी साधर्मी वन्धुओं से नम्र निवेदन है कि गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिये तन-मन-धन से सहयोग दें एवं अवश्य नागेश्वर तीर्थ पधार कर प्रभु दर्शन भक्ति का लाभ लेवें।

श्रद्धांजलियाँ

उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म सा

परम पूज्य उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म सा के आकस्मिक एव असामयिक निधन पर श्री जैन श्वे तपा सघ की साधारण सभा द्वारा पारित शोक प्रस्ताव —

'परम पूज्य उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागर जी म सा के आकस्मिक एव असामयिक निधन पर श्री जैन श्वे तपा सघ जयपुर की यह साधारण सभा हार्दिक शोक एव सवेदना व्यक्त करती है।''

उपाध्याय श्री का जन्म लगभग 62 वर्ष पूर्व आसोज सुदी 14 सवत 1994 के शुभ दिन श्री हुकमराज जी सा मुणात पिताजी श्री एव श्रीमती ज्ञानदवी माताश्री के यहा हुआ था। आपने अपनी जीवन यात्रा राजकीय सेवा से प्रारम्भ की थी लेकिन पूर्व जन्म के सस्कारो से ओतप्रोत आपमे वैराग्य भावना उद्वलित हो रही थी जिसस आपका मन न राज्य सेवा म लग रहा था और न ही सासारिक कार्यकलापा मे।

जेठ वदी 5 सवत 2016 के दिन मेडता रोड तीर्थ पर आपकी दीक्षा आचार्य श्री पदमसागरसूरी जी म सा के पास सम्पन्न हुई थी। आपकी बडी दीक्षा भी फाल्गुन शुक्ला 3 सवत 2018 को चान्दराई ग्राम राजस्थान मे ही हुई थी।

25 वर्ष के कठोर साधु जीवन को व्यतीत करने के बाद फाल्गुन शुक्ला 13 सम्वत् 2043 का आपको पन्यास की पदवी से एव वैशाख शुक्ला 3 सम्वत् 2049 को आपको उपाध्याय की पदवी स विभूपित किया गया था। आपमे अध्यापन की अनोखी शक्ति कण्ठ म जादू, चेहरे पर हमेशा लहरान वाली मुस्कुराहट शात एव मृदु स्वभाव आत्मा मे तपश्चर्या का तेज था।

सम्वत् 2050 म आपका जयपुर मे चातुर्मास हुआ था और मार्च 1998 माह म आपका जयपुर म पुन पदार्पण हुआ था। यह चातुर्मास जयपुर म ही करने की भावना थी लेकिन आचार्य पदवी के योग करने के कारण यह सभव नहीं हो सका था।

भविष्य की कल्पनाये और थी एव विधि का विधान और था। जिस रोग के लक्षण तक दृष्टिगोचर नहीं हुए वह विकराल रूप मे यकायक प्रकट हुआ जिसकी परिणति देहावसान के रूप मे सामने आई।

ऐसी महान आत्मा के प्रति यह सघ हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित करत हुए जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे।

श्री रणजीत सिंह जी भंडारी

संघ के कर्मठ सदस्य एवं भूतपूर्व संघ मंत्री रहे श्रीमान रणजीत सिंह जी का दि. 7 अक्टूबर, 98 को देहावसान हुआ। आपके निधन पर संघ की महासमिति द्वारा पारित प्रस्ताव—

''श्रीमान भंडारी सा का जीवन जिन शासन, धर्म, संस्कृति एवं संघ को पूर्ण रूपेण समर्पित रहा है। आज के युग में ऐसे गिने चुने ही व्यक्ति विद्यमान है जो बारह व्रतधारी श्रावक हो। तपागच्छ संघ, जयपुर के तो वे प्राण समान रहे है। तत्कालीन समय में सघ के सस्थापको मे अपनी कर्मठता, क्रियाशीलता एवं दूरदर्शिता के कारण सुदृढ स्तम्भ के रूप मे सिद्ध हुए थे। लगभग 35 वर्ष पूर्व सम्वत 2020 में वे सघ की महासमिति के सदस्य निर्वाचित होकर संघ सचालन के कार्यो में जुडे। तीन साल के सदस्य के कार्यकाल के पश्चात् सम्वत 2023 से सम्वत 2041 तक के समय मे (सिवाय सम्वत 2029 से 2031 तक के महासमिति के कार्यकाल को छोडकर) वे 14 वर्षो तक उपाश्रय मत्री के रूप में रहकर साधु-संतो एव श्रावक श्राविकाओ की सेवा एवं मार्गदर्शन करते रहे। सम्वत 2032-33 में आपने सघ मंत्री के पद के दायित्व को संभालकर समस्त गतिविधियों का संचालन किया था। तदनन्तर महासमिति के सदस्य नही होते हुए भी जागरूक प्रहरी के रूप मे नव-निर्वाचित सदस्यों का मार्गदर्शन करते हुए हर कार्यकलापो का गुण दोषों के आधार पर मूल्यांकन कर प्रेरणा प्रदान करते रहे।

प्रभु भक्ति की भावना से तो वे इतने अधिक ओत-प्रोत थे कि कोई भी पूजा पढाने का कार्य उनके बिना होता ही नहीं था। सामायिक प्रतिक्रमण, नियम, पच्चक्खाण स्वयं तो नियमित रूप से करते ही थे नई पीढी को भी इस ओर निरन्तर प्रेरित करते रहे।

सर्वोदयी विचारधारा के पोषक रहे। सादगी पूर्ण जीवन जीते हुए जीवन पर्यन्त खादी को ही धारण करते रहे। वे एक ऐसे साधक थे जो स्थितियों-परिस्थितियों को महत्त्व नहीं देकर समन्वय एवं समझौतावादी दृष्टिकोण को अपनाने में कभी संकोच नही करते थे। सघ मे शांति एवं एकता उनके लिए सर्वापरि थी।

ऐसे स्वनाम धन्य, सघ के कर्मठ, सजग, जागरूक एवं प्रेरणा पदाता व्यक्तित्व के चले जाने से इस श्रीसंघ एव समस्त जैन जगत मे जो रिक्तता पैदा हुई है उसकी सहज पूर्ति सम्भव नहीं है। उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण कर धर्म एवं संघ सेवा में समर्पित होना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एवं परिवारजनों सहित सभी को उनका अभाव सहने की शक्ति प्रदान करे, यही प्रार्थना है।''

श्रीमान् पुखराज जी सिघी

श्रीमान पुखराज जी सिघी का दिनाक 8 जून, 1999 को आकस्मिक एव असामयिक निधन हुआ। अत्यन्त दु ख का विषय था कि अपने कार्य के प्रति समग्ररूपेण सेवा भाव से समर्पित व्यक्तित्व एकाएक चले गये। खुशबू ऑफसेट प्रिन्टर्स की स्थापना के साथ ही उन्होने न केवल जैन श्वे तपा सघ अपितु जैन धर्म के सभी सम्प्रदाया एव सघो के मुद्रण कार्य को पूर्ण लगन निष्ठा और शुद्धता के साथ सम्पन्न करने मे भरपूर सहयोग प्रदान किया।

साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा की इस सघ के द्वारा प्रकाशित आठ पुस्तको का मुद्रण कार्य तो उन्होने किया ही साथ ही इस श्री सघ की स्मारिका माणिभद्र के दो अको को जिस अनूठे रूप मे प्रकाशित किया वह उनके कार्य का स्वय दिग्दर्शन कराता है।

साधु-सतो के सम्पर्क मे आने से उनमे धार्मिक भावनाये भी उत्तरोत्तर विकसित हो रही थीं। धर्मक्रियाओ के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन किस तरह से करना चाहिये इसका उन्होने अपने जीवन से जो रूप प्रदर्शित किया वह नवयुवको सहित सभी के लिये प्रेरणा का स्रोत बन गया है।

आपकी माताश्री श्रीमती शान्ता बाई सिघी जैसी तपस्विनी और धर्मनिष्ठ महिला के सस्कारो को आपने अपने जीवन मे मूर्त रूप प्रदान किया। ऐसी आत्मा के एकाएक चले जाने से इस श्रीसघ को ही नहीं समस्त जैन समुदाय को अपार क्षति हुई है जिसकी पूर्ति सहज समव नहीं है। जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे। यही प्रार्थना है।

श्री नेमीचद जी सा बैद

धर्मप्रेमी एव रत्न पारखी श्री नेमीचद जी सा मेहता घाट वालो का दि 6 7 99 को देहावसान हो गया। आपका आगरा मे सन् 1922 मे जन्म हुआ था। आप अपने पिता श्री फूलचन्दजी सा वेद के साथ जयपुर आये एव विद्या अर्जन के पश्चात् जवाहरात के व्यवसाय मे प्रवृत्त हुए।

सयोगवश सन् 1961 मे घाट मदिर के निर्माता परिवार सेठ श्री गुलाब चद जी सा मेहता एव धर्मपत्नी रतन कवर के आय दत्तक पुत्र बने एव सुविख्यात घाट के मदिर की निरतर सुव्यवस्था आपने बनाये रखी- फाल्गुन बदी 5 को वहा वार्षिकोत्सव मनाते रहे।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे यही प्रार्थना है।

श्रीमान् राजकुमार जी साहब दुगड

श्रीमान् राजकुमार जी साहब दुगड का देहावसान दि 28 10.98 को हुआ वे न केवल नवयुवक मंडल बल्कि इस संघ के अन्तर्गत सचालित नवयुवकों की संस्था श्री आत्मानंद जैन सेवक मडल के सस्थापक सदस्यो म से रहे। वे सघ की महासमिति के भी सदस्य रहे थे। स्वप्नोतरण आदि सघ की विभिन्न गतिविधियों मे सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। नवयुवको के लिए तो वह प्रेरणा के स्रोत ही थे।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे यही प्रार्थना है।

श्रीमान् मिठालाल जी कुहाड़

समाज शिरोमणि वयोवृद्ध, धर्मनिष्ठ श्रीमान मिठालाल जी कुहाड का दि 30 जुलाई, 99 को आकस्मिक निधन हुआ। अपनी वयोवृद्ध अवस्था के होते हुये भी आप जीवनपर्यन्त धार्मिक कार्यकलापो, सामाजिक उत्थान और जिनेश्वर देव के शासन की अभिवृद्धि में एकनिष्ठ भाव से समर्पित रहे।

दिनांक 29 4 99 को जव इस सघ के अन्तर्गत वरखेडा म जीर्णोद्धार के पश्चात नवनिर्मित हुए गर्भ गृह में तीर्थाधिपति भगवान आदीश्वर स्वामीजी की प्रतिमा को गर्भगृह मे प्रवेश कराने का वडा चढावा लेकर आपने अक्षयपुण्योपार्जन का लाभ प्राप्त किया था। आचार्य श्रीमद्विजय नित्यानद सूरीश्वर जी म सा के साथ प्रतिमा को गर्भगृह में विराजित कर जिस प्रकार वे भाव विभोर होकर समर्पित हुए वह दृश्य अलोकिक था। यह कल्पना भी नही थी कि इतनी शीघ्र वे चले जायेंगे। आपके सुपुत्र श्री पारस जी कुहाड सुप्रसिद्ध एडवोकेट है। आपकी धर्मपत्नि भी जीवनपर्यन्त धार्मिक कार्यकलापो में समर्पित रही।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे यही कामना है।

श्री सपतलाल जी मेहता

श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ, जयपुर के मुनिम के पद पर लगभग 30 वर्षो तक कार्यरत रहे श्री सम्पतलाल जी मेहता का दि 12 6 99 को असामयिक देहावसान हुआ। उन्हे श्रद्धाजलि देने हेतु श्री सघ की बैठक हुई जिसमे निम्नानुसार प्रस्ताव पारित किया गया —

"श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ की आज दि 12 6 99 को आयोजित यह सभा श्री सम्पतलालजी मेहता, मुनीम सा के असामयिक एव आकस्मिक निधन पर गहरा शोक एव सवेदना व्यक्त करती है।

श्री सम्पतमलजी मेहता ने निरन्तर लगभग 30 वर्षो तक इस सघ की सम्पूर्ण निष्ठा लगन, मेहनत एव ईमानदारी से सेवा की। एक तरह से वे सघ की पेढी के प्राण थे। ऐसे गिने चुने लोग ही होते है जो अपने कार्यो से ऐसी छाप छोड जाते है जो कालान्तर तक उनकी याद ताजा बनाए रखती है। उनके निधन से समस्त श्रीसघ को अपार क्षति हुई जिसकी पूर्ति सहज सभव नहीं है लेकिन विधि के विधान के आगे किसी का वश भी नही है।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे और परिवारजनो सहित सभी को उनका अभाव सहन करने की शक्ति दे यही प्रार्थना है।"

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नाकित का भी देहावसान हुआ —

1 श्रीमती बसती देवी धर्मपत्नी स्व श्री कस्तूर मल जी शाह (भू अध्यक्ष श्री जैन श्वे तपा सघ)

2 श्रीमती राधा देवी सुराणा धर्मपत्नी श्री बदन सिह जी सुराणा

3 श्रीमती फूलीबाई, धर्मपत्नी श्री मानमल जी खिवसरा

श्री जैन श्वे तपा सघ एव सपादक मडल आप सभी के प्रति हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित करता है।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार में सहयोगकर्ता

अप्रेल, 1998 से मार्च, 1999

चित्र	भेंटकर्ता
स्व. श्रीमती भँवरबाई, ध.प. श्री फूलचंदजी वैद	श्री प्रेमचंदजी वैद एवं परिवार, आगरा वाले
स्व. श्री रामरतनजी कोचर	श्री विजय कुमार जी कोचर
श्री हीराभाई चौधरी	सुपुत्र श्री महेन्द्रजी, श्रीपालजी महिपाल जी चौधरी
श्रीमती जीवन कुमारी ध.प. श्री हीराभाई चौधरी	पुत्रवधू श्रीमती उर्मिलाजी, अन्नूजी, राजश्री जी
श्री रणजीत सिंह जी भंडारी	श्री अशोक कुमार जी भंडारी
प्रतिक्षित	श्री लक्ष्मण सिंह जी सिंघवी
प्रतिक्षित	श्री खीमराज जी पालरेचा

श्री सुमतिनाथ जिनालय में अष्टप्रकारी पूजा सामग्री

भादवा सुदी 5 से 2055 से भादवासुदी 4 सं. 2056 तक

भेंटकर्ताओं की शुभ नामावली

1.	अखण्ड ज्योत	श्री लक्ष्मण सिंह जी सिंघवी
2.	पक्षाल पूजा (दूध)	श्री खेतमल जी जैन
3.	बराम, खसकूची, अंगलूना	श्री कोचर परिवार
4.	चन्दन पूजा	श्री शाह कल्याणमल जी कस्तूरमलजी
5.	केशर पूजा	श्रीमती पुष्पा देवी संचेती
6.	धूप पूजा	श्री सोहनराज जी पोरवाल
7	अंग रचना (वरक)	श्री नरेश कुमार जी दिनेश कुमार जी राकेश कुमार जी मोहनोत
8.	पुष्प पूजा	श्री सरदारमल जी भागचन्द जी छाजेड (ओसवाल अगरबत्ती)

विगत प्रकाशित विवरण के पश्चात् वर्ष 1998-99 मे

बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार मे विभिन्न सस्थाओ से प्राप्त योगदान

1,11,111/-	श्री जैन श्वे तपा सघ, महावीर स्वामी नूतन जिनालय, नागौर
1,00,000/-	श्री सुमतिनाथ भगवान जैन श्वे मदिर, दादाबाड़ी, मद्रास
1,00,000/-	श्री देरासर फाड उपाश्रय ट्रस्ट/भोरोली
31,000/-	श्री नेहरू बाजार श्वे मूर्तिपूजक जैन सघ ट्रस्ट, मद्रास
25,000/-	श्री प्रिसेज स्ट्रीट लोहाचाल जैन सघ, मुबई
21,000/-	श्री मालण जैन सघ, सूरत
11,000/-	श्री सम्भवनाथ जैन मदिर ट्रस्ट, मद्रास
11,000/-	महावीर नगर श्वे मूर्तिपूजक जैन सघ, मुबई
3,111/-	श्री शातिनाथ आराधना भवन, विराट नगर, मुबई
3,111/-	श्री शातिनाथ स्वामी तथा श्री ऋषभदेव स्वामी गृह चैत्य, मलाड, मुबई

श्री वर्द्धमान आयबिल शाला की स्थाई मितिया वर्ष 1998-99

1,002/-	श्रीमती गुमान कॅवर जी लूनावत
501/-	श्री दीपचन्द जी पन्नालाल जी वैद
501/-	श्री फतेहसिह जी बावेल
501/-	श्री केशरी मल जी मेहता
501/-	श्री मोतीलाल जी वेद मेहता
501/-	श्री मोतीलाल जी कटारिया
501/-	श्री सरदामल जी भागचन्द जी छाजेड
501/-	श्री खेतमल जी जैन
501/-	श्री जितेन्द्र भाई कल्याण भाई राव, अहमदाबाद
453/-	श्रीमती माणक कवर जी मेहता
273/-	श्री जसवत मल जी साड
151/-	स्व श्री नारायण दास जी पल्लीवाल हस्ते श्री उत्तम चन्द जी
151/-	श्री केशरी चन्द जी सुराना

151/- श्री धर्म चन्द जी मेहता

151/- श्री राजेन्द्र कुमार जी चतर

151/- श्रीमती मीना देवी मेहता

151/- श्री कानमल जी अजय कुमार जी ढड्ढा

151/- श्री गुमानचंद जी सोहन लाल जी कोचर

151/- श्री बद्रीप्रकाश जी आशीष कुमार जी जैन

151/- श्री विजय राज जी लल्लू जी

151/- श्री सौभाग्य चन्द जी बाफना

151/- श्रीमती नर्मदा देवी पोरवाल

151/- श्री राजकुमार जी अभय कुमार जी चौरडिया

151/- श्रीमती प्रेमलता जी भंडारी

151/- श्री दीप चन्द जी चौरडिया

151/- श्री मदन राज जी कमल राज जी राकेश कुमार जी सिंघवी

151/- श्री बच्चू भाई शांतिभाई

151/- श्री पारसमल जी मेहता

151/- श्री ज्ञानचंद जी सुभाष चंद जी छजलानी

151/- गुप्त हस्ते श्री इन्द्र चन्द जी भंडारी

151/- श्री सूरज चन्द जी बूरठ

151/- श्री मगन लाल जी करसन जी शाह मुंबई

151/- श्री चम्पालाल जी मेहता

151/- श्री चन्द्र सिंह जी दोषी

151/- श्री भरतभाई अमर सी भाई, अजमेरा, सूरत

151/- श्री अमरसी भाई, सूरत

151/- श्री जयंती लाल गगल भाई

151/- श्री हीराचंद जी चौरड़िया

151/- श्री फतेह सिंह जी प्रमोद कुमार जी महावीर चन्द जी बावेल

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

श्री अशोक पी जैन, मत्री

नौजवान किसी भी सस्था के आधार होते है । श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल श्री जेन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ का अभिन्न अग है । इस मण्डल परिवार को श्वेताम्वर समाज द्वारा विभिन्न गतिविधियो हेतु याद किया जाता है ।

गत वर्ष विराजित म साध्वी श्री सुमगला श्री जी म सा की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री प्रफुल्ला श्री जी म सा आदि ठाणा के चातुर्मास के दौरान जो भी धार्मिक गतिविधियाँ हुई उसमे मण्डल परिवार ने सम्पूर्ण सहयोग दिया ।

मण्डल परिवार द्वारा श्री सुमतिनाथ जिनालय का गुम्बज से फर्श तक का शुद्धिकरण किया गया जिसम सभी सदस्यो एव तपागच्छ सघ के सदस्यो ने अपना सहयोग दिया । तत्पशचात् अठारह अभिपेक भी करवाया ।

आचार्य श्री नित्यानद सूरीश्वर जी म सा के जयपुर आगमन पर मण्डल परिवार ने अपना सहयोग दिया । मण्डल परिवार की ओर से दो यात्री बस बरखेडा दर्शनार्थ हेतु ले जायी गई ।

हाली पर मण्डल परिवार की एक यात्री बस जयपुर से बरखेडा होती हुई माऊन्ट आबू, जीरावला पार्श्वनाथ नादिया नितोडा अजारी नाकोडा की यात्रा हेतु गई ।

मण्डल परिवार को यहा विराजित साधु सतो का आशीर्वाद एव मार्गदर्शन मिलता रहता है । मे तपागच्छ सघ के सभी युवा वर्ग जा सामाजिक एव धार्मिक कार्य हेतु अपनी सेवाये देना चाहत है उनस निवेदन करता हूँ कि वे आत्मानन्द जैन सेवक मडल के सदस्य वन । मै मण्डल परिवार की तरफ स आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मडल क सभी सदस्य श्री जेन श्वे तपा सघ एव अन्य सभी सघो द्वारा आयोजित धार्मिक एव सामाजिक सास्कृतिक कार्यक्रमो मे निष्ठापूर्वक सेवाए प्रदान करत रहगे ।

अत म अज्ञानतावश हुई किसी भूल के लिए हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ ।

मडल के सस्थापको म से श्री राजकुमार जी दूगड अव हमार बीच नहीं रहे उनका दिया हुआ मार्गदर्शन हमे प्रेरणा देता रहेगा ।

आत्मानद जैन सेवक मडल परिवार की कार्यकारिणी विगत वर्प की भॉति है—

अध्यक्ष	श्री विजयकुमार सठिया
उपाध्यक्ष	श्री नरेश मेहता
मत्री	श्री आशोक जैन
सयुक्त मत्री	श्री भरत शाह
कोषाध्यक्ष	श्री प्रकाश मुणोत
सगठन मत्री	श्री सुरेश जैन
सास्कृतिक मत्री	श्री प्रितेश शाह
सूचना एव प्रसारण मत्री	श्री सजय मेहता
शिक्षा मत्री	श्री विपिन मेहता

कार्यकारिणी सदस्य

श्री आशोक जेन (शाह) श्री धनपत छजलानी श्री ललित दूगड, श्री राजेन्द्र डासी । ☆

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

श्रीमती उषा सांड, महामंत्री

कहने को मेरे पास बहुत कुछ है पर शुरू कहां से करूँ ये मैं सोच नहीं पा रही हूँ क्योंकि शब्दों की अभिव्यक्ति सही तरीके से करके ही मैं सुमती जिन श्राविका संघ की सही तस्वीर प्रस्तुत कर सकती हूँ।

प्रातः स्मरणीय देवेन्द्र श्री जी म.सा. की सद्प्रेरणा से संगठित महिलाओं का यह संगठन पूजा पढाने के उद्देश्यों के साथ-साथ समाज सेवा व महिला उत्थान के कार्य में भी अग्रसर है।

गत वर्ष विराजित महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म सा. की सुशिष्या प्रफुल्लप्रभा श्री जी म. सा. आदि ठाणा की प्रेरणा से सांस्कृति संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें मचित नाटक ''अमर कुमार'' को सभी दर्शकों ने हृदय से सराहा व नाटिका के अलावा भक्तिपूर्ण नृत्य व भजनों ने ऐसा समा बांधा कि समय का पता ही नहीं चला। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दिनेश कुमार जी मूथा ने की एवं उन्होंने 2100/- रुपये श्राविका संघ को भेंट किये। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती जोरावर बाईसा शाह ने अपनी तरफ से 2100/- रुपये नकद व कार्यक्रम के कलाकारों को प्रोत्साहन स्वरूप भेंट दी। विशिष्ठ अतिथि श्रीमती मनोहर बाई भड़कतिया ने 1100/- रुपयें देकर मंडल परिवार का उत्साह बढ़ाया। आप सभी को हार्दिक धन्यवाद। नाटक अमर कुमार की प्रस्तुति धार्मिक पाठशाला के बच्चों ने की, इसके लिए हम श्रीमती मंजू पी चौरडिया के आभारी हैं जिन्होंने नाटक मंचित कराया एव सभी कलाकारों को स्मृति चिह्न भेट किये। सांस्कृतिक संध्या पर सभी गणमान्य अतिथियों को ''माणिभद्र बाबा'' की 10 x12 की तस्वीरयुक्त घडी स्मृति स्वरूप भेंट की गई।

''नारी जीवन उत्थान के विविध आयाम'' विषय पर सुमति जिन श्राविका संघ ने महिला गोष्ठी आयोजित की। इस सफल एवं समयानुकूल गोष्ठी की अध्यक्षता का गौरव श्रीमती जतनवाईसा गोलेछा ने प्रदान किया, सा श्री पीयूषपूर्णा जी प्रमुख वक्ता थी। वीर बालिका महाविद्यालय की प्राचार्या डा. भगवती स्वामी ने विस्तारपूर्वक समझाकर समयानुकूल विषय को गरिमा प्रदान की। समस्त अतिथि विभिन्न संघ के सदस्यों ने भी इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये व श्राविका संघ ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं स्मृति चिह्न भेंट किये।

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी चातुर्मास हेतु पधारने वाले साधु सतो की अगवानी की व मगल गीत प्रस्तुत किये। बरखेडा तीर्थ के गर्भगृह मे तीर्थाधिपति का प्रवेश कराने हेतु पधारने वाले आचार्य नित्यानद जी म सा व महत्तरा सुमगला श्री जी म सा के आगमन पर मगल कलश लेकर स्वागत किया व सभा भवन मे स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

श्वेताम्बर सघ द्वारा आयोजित गोठ एव बहुमान समारोह मे सुमति जिन श्राविका सघ ने पूर्ण सहयोग देकर अपने व तपागच्छ सघ के नाम को रोशन किया।

तपागच्छ सघ द्वारा निर्मित किये जाने वाले विजयानन्द विहार नामक नये भवन हेतु श्री सुमति जिन श्राविका सघ ने 21,000/- (इक्कीस हजार) देने की घोषणा की है।

जयपुर शहर व आसपास के सभी मदिरो की वार्षिक पूजाओ मे सघ ने बराबर पूजा पढाकर हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। विभिन्न महानुभावो द्वारा आयोजित पूजाओ को पढाकर भी श्राविका सघ ने अपनी परम्परा को बनाये रखा है।

श्राविका सघ की सदस्याए पूर्व की भाति इस साल भी माह की 1 व 15 तारीख को मिलती रही है। पहली तारीख को सामायिक के पश्चात् धार्मिक चर्चा की जाती है व 15 तारीख को पूजा पढाई जाती है जिसका खर्च श्री सुमति जिन श्राविका सघ की बहने क्रमवार से वहन करती है।

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी सघ द्वारा नूतन वर्ष मिलन व होली मिलन समारोह का आयोजन किया जिसमे मडल की सदस्याओ के अलावा पूर्व श्राविका सघ की सदस्याए एव गणमान्य अतिथि आमत्रित थे। इस अवसर पर अल्पाहार के कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। यह मेरा समस्त कथन अधूरा ही है अगर मे इसमे हमारे गुरुजी श्री धनरूपमल जी नागौरी का जिक्र नहीं करू क्योकि हमारी पूजा सबधी कोई भी कठिनाई को वही आज तक हल करते आये ह और मुझे विश्वास है कि आगे भी करते रहेगे।

मै आभारी रहूँ कि सुमति जिन श्राविका सघ की समस्त बहनो की जिन्होने अपने घरबार का काम छोडकर सघ के कार्यक्रमो मे हिस्सा लेकर मडल का गौरव बढाया है।

आगे भी हमे सदा सकल श्रीसघ शुभचितको एव तपागच्छ सघ के कर्मचारियो का यथावत सहयोग मिलता रहेगा, इसी आशा के साथ अत मे उन सभी महानुभावो का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होने हमको अब तक सहयोग दिया है। वन्दे वीरम्।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.) जयपुर

स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर : बढ़ते कदम

सुश्री सरोज कोचर, शिविर संयोजिका

जैसा कि निरन्तर अकित किया जाता रहा है कि परमार क्षत्रियोद्धारक, वर्तमान गच्छाधिपति परम श्रद्धेय आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ श्री सघ मे भी समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष की स्थापना की गई थी।

विगत सात वर्षो से आर्थिक उन्नयन हेतु महिलाओ को स्वावलम्बी बनाने के लिये स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश मे लगाया जाता है। इस वर्ष दिनांक 25 मई, 99 से 1 माह के शिविर का आयोजन किया गया जिसमे 1057 बहिनो ने भाग लिया। इस शिविर मे आंग्ल भाषा सुधार, सॉफ्ट टॉयज, मेहन्दी, पॉट पैंटिग, कढाई, ऊन के खिलौने, रफू, एक्यूप्रेशर, केनवास पैटिग, पाक-कला, सिलाई, मोती के आभूषण, फ्लावर मैकिग, बैडशीट डिजाइनिंग, पर्स बैग का प्रशिक्षण दिया।

शिविर का शुभारम्भ महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की पावन निश्रा मे हुआ था तथा सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी मुख्य अतिथि थे। प्रशिक्षण पूरा होने पर दिनाक 4.7 99 को शिविर का समापन समारोह विराजित पूज्य मुनिवर की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ था।

शिविर संयोजिका सुश्री सरोज कोचर ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि सबके लिए उद्यम व परिश्रम स्वयं एक गुरु है। वह हमें पुरानी रुढ़ियों के वातावरण से बाहर निकालकर सृष्टि की पाठशाला में लाता है। इससे जहां हमारे चरित्र में निखार आता है वहीं पर परिश्रम से ही हम धैर्य, साहस और कठोरता का पाठ सीख सकते है। इससे हमारे सकल्प को दृढ आधार मिलता है।

शिविरार्थी छात्रा कु रश्मि पटेल ने शिविर के अनुभव एवं लाभ के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमने यहां जो कुछ भी सीखा है उससे न केवल हमारा कलात्मक विकास हुआ है बल्कि सरकार निर्माण भी हुआ है। इस प्रशिक्षण से हम केवल अपने घर को ही सजा संवार नहीं सकते अपितु औरों को भी प्रशिक्षण दे सकते है। यह प्रशिक्षण हमे स्वरोजगार के अवसर प्रदान कराता है।

इस अवसर पर प्रशिक्षण के पश्चात् सभी कक्षाओ मे परीक्षा पश्चात् प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

शिविर में निम्नलिखित बहिनो ने निःशुल्क प्रशिक्षण देकर अपनी अमूल्य सेवाए इस प्रकार दी जिनका अभिनदन किया गया :—

1	श्रीमती प्रगति दीक्षित	आग्ल भाषा मे सुधार
2	श्रीमती अनिता वदलिया	पाक कला
3	श्रीमी मंजु जी ढढ्ढा	केनवास पटिग
4	श्रीमती अभिलाषा जैन	सिलाइ
5	डॉ रेखा जेन	एक्यूपशर
6	सुश्री विनीता जैन	पॉट पटिग
7	सुश्री प्रिया सोनी	मेहन्दी एव वैडशीट डिजाइनिग
8	सुश्री सुरेखा जैन	कढ़ाई
9.	सुश्री सुनयना जैन	ऊन के खिलौने
10.	सुश्री अलका गोयल	रफू
11.	सुश्री सुधा जायसवाल	साफ्ट टायज
12	सुश्री कनक धारा सोनी	मोती के आभूषण
13	सुश्री रागिनी वर्मा	[illegible]
14	कु रेखा जैन	ऊन के खिलौने एव फ्लावर मैकिंग।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पं.), जयपुर

महासमिति वर्ष-1997-99

क्र स	पद नाम	पदाधिकारी	पता	दूरभाष निवास	दूरभाष कार्यालय
1	अध्यक्ष	श्री हीराभाई चौधरी	6 चाणक्यपुरी बनीपार्क	204611 363432	213495 212580
2	उपाध्यक्ष	श्री तरसेम कुमार पारख	198, अक्षयराज, आदर्श नगर	601342	606899
3	सघ मत्री	श्री मोतीलाल भड़कतिया	32, मनवाजी का बाग एम डी रोड	602277	669369
4	सयुक्त सघमत्री	श्री राकेश मोहनोत	12, मनवाजी का बाग एम डी रोड	605002	609363
5	कोषाध्यक्ष	श्री दानसिह कर्णावट	ए-3 विजय पथ, तिलक नगर	621532	565695
6	मडाराध्यक्ष	श्री जीतमल शाह	शाह बिल्डिग चौड़ा रास्ता	564476	—
7	मदिर मत्री	श्री खिमराज पालरेचा	451 ठा पचेवर का रास्ता ह रास्ता	562063	564386
8	उपाश्रय मत्री	श्री अभय कुमार चौरड़िया	जी सी इले 257 जौहरी बाजार	569601	562860
9	आ भो मत्री	श्री सुभाष चन्द छजलानी	141 जय जवान कॉलोनी-II, टोक रोड	554689	554690
10	शिक्षा मत्री	श्री गुणवत मल साड	1842 चौबियो का चौक, घी वालो रा	560792	—
11	सयोजक बरखेडा मदिर	श्री उमरावमल पालेचा	3854 एम एस बी का रास्ता	564503	574173
12	स ज कॉ मदिर	श्री मोतीचद वैद	1189 जोरावर भवन रा परतानियो	565896	—
13	स चन्लाई मदिर	श्री राजेन्द्र कुमार लूणावत	456 ठा पचेवर का रा, हल्दियो रा	571830	565074
14	स उपकरण भ	श्री महेन्द्र कुमार दोसी	10, प्रताप नगर (II), बरकत नगर	590662	563574
15	स विजयानद विहार	श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत	2135-36 लूणावत मा, रा हल्दियो	561882	571320
16	सदस्य	श्री कुशलराज सिहवी	2-घ-7 जवाहर नगर	654409	651783
17	सदस्य	श्री चिमनलाल मेहता	1880, जयलाल मुशी रा चादपोल बा	321932	—
18	सदस्य	श्री नरेन्द्र कुमार कोचर	4350 नथमल जी का चौक जौ बा	564750	—
19	सदस्य	श्री नवीन चन्द शाह	ए-5 विजय पथ तिलक नगर	620682	562167
20	सदस्य	श्री भँवरलाल मूथा	18 कल्याण कॉलोनी सीकर हाऊस	305527	206094
21	सदस्य	श्री आर सी शाह	आर सी शाह एण्ड कपनी जौहरी बा	554605 554607	565424 566590
22	सदस्य	श्री विक्रम शाह	इण्डियन वूलन कॉ पानो का दरीबा	669910	665033
23	सदस्य	श्री सजीव जैन	पी-19 मधुबन कॉलोनी टोक रोड	513134	567904
24	सदस्य	श्री सुरेन्द्र कुमार ओसवाल	212 फ्रटियर कॉलोनी आदर्श नगर	602680	314857
25	सदस्य	श्री सुशील कुमार छजलानी	51 देवी पथ जवाहर लाल नेहरू मार्ग	570995	562789
1	विशष आमत्रित	श्री चिन्तामणि ढड्ढा	ऊँचा कुआ हल्दियो का रास्ता	565119	560409
2	विशेष आमत्रित	श्री विजय कुमार सेठिया	सचेती हाऊस एम एस बी का रास्ता	569614	—
3	विशेष आमत्रित	श्रीमती सुशीला छजलानी	570, ठा पचेवर का रास्ता ह रास्ता	562997	569311

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजीकृत) जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1998-99

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

श्री मोतीलाल भड़कतिया, संघ मंत्री

सेवा में,

प.पू. आचार्य देवेश श्री नीति-हर्ष सूरीश्वर जी म.सा. के पट्टधर प्रशान्त महोदधि प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय महेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के अंतिम अन्तेवासी अध्यात्मयोगी मधुर प्रवचनकार प.पू. मुनिवर्य **श्री मणिप्रभ विजय जी म.सा.** एवं

वर्तमान गच्छाधिपति प.पू. आचार्य देवेश श्रीमद्विजय अरिहंतसिद्ध सूरीश्वर जी म.सा. की समुदायवर्ती सा. श्री ललित प्रभा श्री जी म.सा. की विदुषी शिष्या युवति संस्कार ज्ञान प्रदीपिका प.पू. सा. श्री हर्षप्रभाश्री जी म.सा., सा. श्री मृदुरसा श्री जी म., सा. श्री त्रैल्योक्य रसा श्री जी म., सा. श्री साहित्यरसा श्री जी म., सा. श्री ज्ञायिक रसा श्री जी म., सा. श्री शुद्धात्मरसा श्री जी, सा श्री कर्त्तव्यरसा श्री जी म., सा श्री चिन्मय रसा श्री जी म.सा. आदि ठाणा।

एवं समस्त सकल श्री संघ।

वर्ष 1997 से 99 के लिए कार्यरत महासमिति की ओर से यह तीसरा वार्षिक प्रतिवेदन एव आय-व्यय विवरण 1998-99 प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है। महासमिति के दूसरे वर्ष के कार्यकलापों का यह विवरण है और अभी वर्तमान वर्ष के कार्यकलाप भी इसी महासमिति के अन्तर्गत संचालित हो रहे हैं।

विगत चातुर्मास

जैसा कि आपको विदित है कि पिछले वर्ष आ. श्री वल्लभसूरी जी म.सा. की समुदायवर्ती महत्तरा सा श्री सुमंगला श्री जी म सा की शिष्या-प्रशिष्या सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म-सा, सा. श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। पर्यूषण पर्व से पूर्व सम्पन्न हुए विभिन्न कार्यकलापों का विस्तृत विवरण पिछले अंक में प्रकाशित किया गया था। तदनन्तर 19 अगस्त, 98 से आपकी पावन निश्रा में पर्यूषण पर्व की भव्यातिभव्य आराधनायें सम्पन्न हुई थी। प्रथम दिन अष्टाह्निका प्रवचन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। प्रथम दिन में श्री ज्ञानचंद जी तिलकचंदजी पालावत की ओर से श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, द्वितीय दिवस को श्री विजयराज जी लल्लू जी मूथा परिवार की तरफ से श्री अंतराय कर्म निवारण पूजा तथा, तृतीय दिवस को श्री ज्ञानचंदजी सुभाषचंद जी छजलानी परिवार की ओर से श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा पढाई गई। पोथाजी का जुलूस ले जाने का लाभ श्री प्रकाश भाई जी शाह एवं श्री

राजीव कुमार जी सजीव कुमार जी साड परिवार द्वारा लिया गया । आगरा वालो के मदिर मे भक्ति हुई तथा दूसरे दिन उनके द्वारा कल्पसूत्रजी को बाहराने का लाभ लिया गया । ज्ञान पूजाओ के पश्चात् कल्पसूत्रजी पर वाचन प्रारम्भ हुआ ।

दि 23-09-98 को भगवान महावीर जन्म वाचना महोत्सव मनाया गया । स्वप्न अवतरण मे चढावे का कीर्तिमान स्थापित हुआ । माणिभद्र के 40वे अक का विमोचन श्रीमती लाडबाई सिघी के कर कमलो से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर मासक्षमण एव अन्य विशिष्ठ तपस्या करने वाले तपस्वियो का अभिनन्दन किया गया । साथ ही इस अवसर पर श्री अमर जैन चिकित्सालय के डा अरुण जन एव डा शाभा सेठिया का साधु सतो की आर विशेषकर विगत वर्ष मे साध्वी श्री पद्मरेखा श्री जी म सा के गभीर आपरेशन एव चिकित्सा कार्य मे उल्लेखनीय सेवा और योगदान करने के लिए स्मृति चिह्न भेटकर स्वागत-सत्कार किया गया । पूर्ववत् इस अवसर पर मोदक की दो प्रभावना के दो सद्गृहस्थो द्वारा लाभ लिए गए । आठो ही दिन भव्यातिभव्य अग रचनाए और रात्रि भक्ति का कार्यक्रम दि 25-8-98 को श्री सुमति जिन श्राविका सघ के तत्वावधान मे सास्कृतिक एव भक्ति सध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ ।

सम्वत्सरी के दिन वारसा सूत्र वोहराने का लाभ श्री हीराभाई मगलचन्द जी चोधरी (मगलचद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया । खरतरगच्छ की साध्वी समुदाय एव श्रीसघ के साथ सामूहिक चैत्यपरिपाटी हुई एव सायकाल सम्वत्सरी प्रतिक्रमण के साथ पर्यूषण पर्व सम्पन्न हुआ । आठो ही दिन एकासणा, चौसठ पहरी पौंषध आदि तपस्या करने वालो के एकासणे की व्यवस्था का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा लिया गया । पर्यूषण मे बेला एव चातुर्मास काल मे बडी तपस्याए करन वालो के पारणे का लाभ श्रीमती भीखी बाई वद परिवार द्वारा लिया गया ।

पर्यूषण पर्व पूर्ण होने के पश्चात् भी आपके प्रवचन समय समय पर होते रहे तथा धार्मिक शिविर आदि के आयोजन होते रहे । इस बार श्वेताम्बर जेन समाज का सामूहिक क्षमापना दिवस श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन मे मनाया गया जिसमे सभी आम्नाओ एव सघो की चारित्र आत्माओ एव पदाधिकारिया ने सघ-समुदाय व साथ भाग लिया । श्री अरुण दुगड, महानिरीक्षक कारागार मुख्य अतिथि थे । आसोजी ओली की आराधनाये भी आपकी निश्रा मे सम्पन्न हुई । आलीजी कराने का लाभ श्री बाबूलालजी तरसेमकुमार जी पारख परिवार द्वारा लिया गया । ओलीजी के अवसर पर दसाह्निका महोत्सव का आयोजन रखा गया जिसमे दि 26-9-98 का श्री माणिभद्र पूजन श्री नरेशकुमार जी, दिनश कुमार जी राकेश कुमार जी माहनात परिवार द्वारा (2) 27-9 को श्री गौतम स्वामी पूजन श्री हीराभाई चोधरी (मगलचन्द ग्रुप) परिवार द्वारा (3) 28-9 को श्री उवसग्गर पूजन श्रीमती कमला बैन भोगीलाल शाह परिवार द्वारा (4) 29-9 को श्री लघुशाति पूजन श्री कन्हयालाल जी दोलतराजजी शिवचन्द जी जन परिवार द्वारा (5) 30-9 को श्री नवकार महामत्र

पूजन श्री ज्ञानचन्द जी सुशील कुमार जी छजलानी द्वारा (6) 1-10 को श्री भक्तामर पूजन श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लूणावत द्वारा (7) 2-10 को श्री पार्श्व पद्मावती पूजन श्री दशरथ चंद जी लखपत चंदजी भंडारी द्वारा (8) 3-10 को श्री चौबीस जिन पूजन- श्रीमती यशोदा बेन बाबूलालजी मेहता द्वारा (9) 4-10 को श्री सिद्धचक्र पूंजन श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर एवं (10) 5-10 को नवपदजी की पूजा श्री बाबूलाल जी तरसेम कुमार जी जैन परिवार द्वारा पढाई गई । श्रीमान धनरूपमलजी नागौरी ने विधि विधान सम्पन्न कराये तथा श्री सुमतिजिन श्राविका संघ की सदस्याओं एवं श्री गोपालजी एवं पार्टी केकडी वालों ने भक्ति रस की गंगा बहाई ।

ओलीजी के पश्चात् नूतन वर्षाभिनन्दन एवं चौमासी चौदस की आराधनायें आपकी निश्रा में सम्पन्न हुई । चौदस के दिन चार माह तक क्रमिक अट्ठम में भाग लेने वाले तपस्वियों एवं वरखेडा तीर्थ के निमित्त वर्ष भर तक प्रतिमाह एक आयंबिल करने वालों का स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया गया ।

चातुर्मास परिवर्तन कराने का लाभ श्री वसन्त भाई केशवलाल शाह परिवार द्वारा लिया गया । आपके निवास स्थान पर श्री संघ के साथ पहुंचने पर आपका प्रवचन हुआ और संघ भक्ति की गई ।

वरखेड़ा तीर्थ के चल रहे विशाल जीर्णोद्धार कार्य के अवलोकन एवं मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु एवं जयपुर में बनने वाले नये भवन का भूमि पूजन, शिला स्थापना, नामकरण आदि कार्यो को सम्पन्न कराने हेतु शांतिदूत आचार्य श्री नित्यानन्दसूरी जी म सा. एवं महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. के शीघ्र ही जयपुर पहुंचने की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए श्रीसंघ की ओर से की जाने वाली व्यवस्थाओं आदि में मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु आपसे यहीं पर विराजने की विनती की गई जिसे आपने कृपा पूर्वक स्वीकार किया ।

महिला संगोष्ठी

श्री सुमति जिन श्राविका संघ के तत्त्वावधान में दि. 10-11-98 को महिला संगोष्ठि का आयोजन किया गया । जिसमें महिलाओं से सम्बन्धित क्रिया-कलापों एवं समस्याओं पर विचार विमर्श हुआ । संगोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती जतनबाई गोलेछा, अध्यक्षा श्री खरतरगच्छ संघ ने की तथा डा. भगवती स्वामी प्रधानाचार्या श्री वीर बालिका महाविद्यालय मुख्य अतिथि थी ।

बरखेडा में चातुर्मास

जैसा कि पिछले अंक में अंकित किया गया था कि अभी यहां पर विराजित साध्वी मंडल में से सा. श्री मृदुरसाश्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 ने बरखेडा तीर्थ पर प्रथम बार चातुर्मास किया है । आप सभी वहां पर धर्म आराधना में संलग्न रहीं तथा वैय्यावच्च की समुचित व्यवस्था इस श्रीसंघ द्वारा की गई । आपकी प्रेरणानुसार ही दि. 6-9-98 को यहां पर श्री ऋषि मंडल महापूजन पढाई गई एवं साधर्मी वात्सल्य का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । प्रथम बार भगवान की पालना

सहित ग्राम बरखेडा मे चेत्य परिपाटी जुलूस निकाला गया।

आ श्री नित्यानन्द सूरी जी म सा का आगमन

जैसा कि आपको विदित है कि इस श्रीसघ के अन्तर्गत सचालित बरखेडा तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार कार्य गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्‌विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म सा के आशीर्वाद, आचार्य श्रीमद्‌विजय नित्यानन्दसूरीश्वर जी म सा के मार्गदर्शन एव महत्तरा सा श्री सुमगला श्री जी म सा आदि ठाणा की पावन निश्रा मे दिसम्बर 1995 मे प्रारम्भ हुआ था जो अबाध गति से चल रहा हैं। सम्पूर्ण मार्बल के जिनालय का गर्भगृह ओर शिखर पूर्ण रूपेण निर्मित हो चुके हे। कोली चौकी, रग मडप का कार्य जारी है।

आचार्य भगवन्त के पजाब से राजस्थान आकर कुचेरा मे चातुर्मास करते ही निरतर आपसे सम्पर्क बनाए रहे और समय-समय पर न केवल प्रतिनिधि मडल अपितु बसे तक ले जाकर आपसे जयपुर पधार कर चल रहे कार्य का अवलोकन कर मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु विनती करते रहे और आपने भी चातुर्मास की पूर्णता के पश्चात् जयपुर पधारने की स्वीकृति प्रदान की थी ओर उसी क अनुरूप विहार कर दि 28-11-98 को आप जयपुर पधारे।

आपक जयपुर आगमन पर 29-11-98 को भव्य नगर प्रवेश एव अभिनन्दन समारोह दि 2-12-98 को सघ के नूतन क्रय किए गए भवन का भूमि पूजन 4-12-98 को शिलान्यास समारोह, 11-12-98 को बरखेडा मे उत्तरग स्थापना समारोह एव दि 16-12-98 का सक्रान्ति समारोह एव नूतन भवन का नामकरण "विजयानन्द विहार" के आयोजन सम्पन्न हुए।

आपके जयपुर प्रवास काल मे सम्पन्न हुए कार्यक्रमो का विस्तृत विवरण सलग्न परिशिष्ट "क" पर विस्तार से दिया गया हे।

आपने बरखेडा तीर्थाधिपति आदीश्वर भगवान के बिम्ब का गर्भगृह मे प्रवेश का मुहूर्त 29 अप्रेल 1999 का प्रदान किया। सघ की आर स यह कार्य आपकी पावन निश्रा मे सम्पन्न कराने का आग्रह और अनुरोध किया गया और सघ की विनती को मान देकर आपने इसकी भी स्वीकृति प्रदान की ओर उसी के तदनुरूप दि 25-4-99 को किशनगढ से उग्र विहार कर दि 29-4-99 को बरखेडा तीर्थ पधारे और उपरोक्त कार्य सम्पन्न कराया जिसके लिए जयपुर श्री सघ आपका अत्यन्त कृतज्ञ एव ऋणी ह।

चरित्र आत्माओ का अभिनन्दन

विगत चातुर्मास काल मे खरतरगच्छ आमनाय श्री सा श्री मोक्षरत्ना श्री जी म सा की मासक्षमण की तपस्या के उपलक्ष मे आयोजित समारोह मे इस श्रीसघ की ओर स स्मृति चिह्न भेटकर अभिनन्दन किया गया।

महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा की निश्रा एव समुदाय मे दि 21 2 99 को बीकानेर मे सुश्री सजीता कोचर, ममता गोलेछा एव नीरू कोचर, दि 30 4 99 को साडेराव मे कुमारी ममता एव सगीता चौपडा एव दि 20 6 99 को बेडा मे कुमारी अजना की दीक्षाओ के अवसर पर सघ के प्रतिनिधिगण उपस्थित हुए और आचार्य

भगवंत, महत्तरा साध्वी म.सा. आदि को कामली बोहरा कर एवं दीक्षार्थी बहनों को स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया गया ।

साधारण सभा की बैठकें

समस्त श्रीसंघ की इस बार साधारण सभा की दो बैठकें क्रमशः दि. 15.8.98 एवं 11.10.98 को सम्पन्न हुई एवं सभी शंकाओं का उसी समय निराकरण किया गया एवं प्राप्त सुझावो पर यथाशक्य क्रियान्विति की गई ।

साधु-साध्वी वृन्द का शुभागमन

विगत वर्ष से अब तक निम्नांकित साधु-साध्वी जी म.सा. का जयपुर आगमन हुआ :

1. सा. श्री चारित्ररत्ना श्री जी म.सा
2. सा. श्री हेमरत्ना श्री जी म.सा.
3. सा. श्री सौम्यकला श्री जी म.सा.
4. अंचलागच्छीय गणीवर्य श्री महोदय सागर जी म.सा.
5. पन्यास श्री पदमविजय जी म सा

शोकाभिव्यक्ति

विगत काल में जहां अनेक उपलब्धियां हुई वहीं संघ से जुडे अनेक महानुभावों के देहावसान से अपूरणीय क्षति भी हुई है ।

सर्वप्रथम उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म.सा. का अल्पकालीन रुग्णता के पश्चात अहमदाबाद मे आकस्मिक एवं असामयिक कालधर्म हुआ । उनकी समाधि यात्रा में जयपुर श्रीसंघ की ओर से अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी, श्री कुशलराज जी सिंघी इत्यादि उपस्थित हुए थे। दि. 11.10.98 को जयपुर में आयोजित साधारण सभा की बैठक में आपका गुणानुवाद कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

इस श्रीसंघ के कर्मठ सदस्य एवं पूर्व में रहे उपाश्रय व संघ मंत्री श्री रणजीत सिंह जी भंडारी का देहावसान तो अपार क्षति था ही, महासमिति के पूर्व मे रहे सदस्य श्री राजकुमार जी दूगड, श्री नेमीचन्द जी मेहता घाट वाले, श्री मीठालाल जी कुहाड, श्री पुखराज जी सिंघी, श्री सम्पतमल जी मेहता संघ के मुनीम एव श्रीमती बसन्तदेवी शाह धर्मपत्नी शाह किस्तूरमल जी, श्रीमती फुली बाई, मातु श्री भौंरी लाल जी रानी वाला, श्रीमती राधा देवी सुराणा के देहावसान से भी अपार क्षति हुई है।

सभी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संदेश प्रेषित किये गए ।

आणन्द जी कल्याणजी ट्रस्ट में प्रादेशिक प्रतिनिधि

आणन्द जी कल्याणजी ट्रस्ट में श्री नरेन्द्र कुमार जी लूनावत जयपुर क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत रहे हैं । इनका तृतीय कार्यकाल पूर्ण होने पर पुनः आपका ही नाम प्रेषित किया गया ह ।

वर्तमान चातुर्मास

विगत चातुर्मास पूर्ण होने के पश्चात इस वर्ष के चातुर्मास के लिए निरंतर प्रयास किए गए । शक्यता के अनुसार पावागढ, हस्तिनापुर, दिल्ली आदि स्थानों पर गए, कइयों की सेवा में विनती पत्र भी प्रस्तुत किए गए ।

इसी बीच विराजित पूज्य मुनिराज श्री

मणिप्रभ विजय जी म सा एव साध्वी श्री हर्षप्रभा श्री जी म सा आदि ठाणा-3 का भी बरखेडा तीर्थ पर आगमन हुआ एव पूर्व मे विराजित सा श्री मृदुरसा श्री जी ठाणा-5 के साथ मिलकर आप इस क्षेत्र म विचरण करते रहे और बरखेडा के नूतन गर्भ गृह मे तीर्थाधिपति के प्रवेश के अवसर पर भी आपने पधारकर होकर निश्रा प्रदान की। आप सभी से यह चातुर्मास जयपुर मे ही करने की आग्रह भरी विनती की गई जिसे आपने मान देकर सघ पर असीम कृपा की है।

आषाढ शुक्ला 6 रविवार 18 जुलाई, 99 को आपका भव्य चातुमार्सिक नगर प्रवेश हुआ। त्रिपोलिया गेट से जौहरी बाजार होते हुए आत्मानन्द जैन सभा भवन पहुचने पर धर्म सभा हुई जिसमे आपका भाव भरा स्वागत किया गया। धर्म सभा को आपने भी सम्बोधित किया। इस अवसर की प्रभावना श्री हीराभाई चोधरी (मगलचद ग्रुप) परिवार द्वारा की गई। इस उपलक्ष मे आयोजित सामुदायिक आयम्बिल कराने एव दिन मे श्री पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री भवरलाल जी मूथा परिवार द्वारा लिया गया।

दि 27-7-99 के चौमासी चोदस के दिन आयोजित धर्म सभा मे पच प्रतिक्रमण सूत्र वाहराने का लाभ भी श्री हीराभाई मगलचन्द जी चौधरी (मगलचद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया। श्रावण वदी 2 दिनाक 30-8-99 को ज्ञानपूजाओ के साथ सूत्र बोहराने के साथ ही आपके सूत्र पर आधारित प्रवचन हो रहे ह। प्रतिदिन सघ पूजाए हो रही है तथा पूर्ववत् चौमासी चौदस से हो क्रमिक अट्ठम की तपस्याये हो रहे है। साकडी अट्ठाई इस वर्ष की नवीन उपलब्धि है।

पूज्य मुनिराज की प्रेरणा एव पू साध्वी जी म सा की निश्रा मे 10 रविवारीय श्री सुशील भक्ति ललित हर्ष कन्या शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है जिसका शुभारभ दि 8 अगस्त, 99 को सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने दीप प्रज्वलित कर किया और तभी स निरतर प्रति रविवार को आध्यात्मिक ज्ञान सस्कार सत्र चल रहे है। शिविर की पूर्णाहुति 17 अक्टूबर, 99 को होगी।

दि 9 से 11 अगस्त, 99 तक सामूहिक अट्ठम की तपस्या हुई। तपस्वियो का पारण कराने का लाभ श्री मोतीलाल जी भडकतिया परिवार द्वारा लिया गया।

दि 17 अगस्त, 99 से दि 25 8 99 तक नौ दिवसीय नवकार मत्र के एकासणे हुए है। एकासणे कराने का लाभ (1) श्री नरेश कुमार जी दिनेश कुमार जी राकेश कुमार जी मुणोत (2) श्री दान सिह जी करनावट (3) श्री तरसेम कुमार जी पारख (4) श्री भवर लाल जी मूथा (5) श्री चौधरी हीराभाई (मगलचद ग्रुप) (6) श्री पूनम चन्द नवीन भाई (7) श्री सुभाष शाह एव कमला बहन शाह (8) श्री बच्चु भाई शान्तीभाई शाह (9) श्री देवेन्द्र कुमार जी सुरेन्द्र कुमार जी परिवार (ओसवाल साबुन) द्वारा लिया गया हे।

आप श्री की प्रेरणा से कारगिल मे शहीद हुए सैनिको की सहायतार्थ धनराशि एकत्र की गई है जो मुख्यमत्री सहायता कोष मे जाएगी।

दि. 7 सितम्बर, 99 से आप श्री की पावन निश्रा में पर्यूषण पर्वाधिराज की भव्यातिभव्य आराधनायें सम्पन्न होने जा रही है।

स्थायी गतिविधियाँ

विगत चातुर्मास के पश्चात् कतिपय उल्लेखनीय कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं संघ की स्थायी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

श्री संघ के 272 वर्षीय प्राचीन जिनालय की व्यवस्था निरन्तर सुचारू रूप से संचालित होती रही है। पूर्वानुसार भादवा सुदी 11 आचार्य श्री हीरसूश्वर जी म सा. की एव ज्येष्ठ सुदी 8 को श्री विजयानंद सूरी जी म.सा. की जयन्ती के उपलक्ष मे पूजायें पढाई गई जिनका लाभ श्री बद्रीप्रसाद जी आशीष कुमार जी जैन परिवार द्वारा लिया गया।

इस जिनालय का वार्षिकोत्सव भी पूर्ववत् इस वर्ष भी ज्येष्ठ सुदी 10 वि.सं. 2056 दि. 23 जून, 1999 को सम्पन्न हुआ। श्री संघ की ओर से सत्तरह भेदी पूजा पढाई गई और साधर्मी वात्सल्य सम्पन्न हुआ। ध्वजा चढाने का लाभ श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया।

लगभग 17 वर्ष पूर्व आचार्य श्रीमद्विजय हींकार सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा से प्रारम्भ की गई सामूहिक स्नात्र पूजा पढाने का कार्य भी निरंतर जारी है। वर्ष भर के लिए प्रतिमाह एक बार अपनी ओर से पूजा पढाने वालों ने अपने नाम पूर्व में ही सूचीबद्ध करा रखे है जिनके द्रव्य लाभ से वाद्ययन्त्रों एवं अष्टप्रकारी पूजा सामग्री के साथ प्रतिदिन स्नात्र पूजा पढाई जा रही है। सितम्बर 98 से अगस्त 99 तक एक वर्ष में इसके तहत रु 16,800/- की प्राप्ति एवं रु. 15,359/- साजीन्दो एवं अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री पर व्यय हुए हैं।

जिनालय में पूजा करने वालों के उपयोगार्थ वाछित अष्टप्रकारी पूजा सामग्री भक्तिकर्ताओं की ओर से उपलब्ध कराई जा रही है। भादवा सुदी 5 से प्रारम्भ एक वर्ष के लिए सामग्री भेंटकर्ताओं के नामों की घोषणा पर्यूषण पर्व के अवसर पर ही कर दी जाती है। सामग्री भेंटकर्ताओं का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

मूल गंभारे, फेरी एवं चित्रदीर्घा का जीर्णोद्धार कराया गया है और गंभारे में पेटिंग का कार्य जारी है। अब तक लगभग सत्तर हजार की राशि लग चुकी है और पेंटिंग का कार्य अभी भी जारी है। जिन प्रतिमाओं की चांदी की आंगीया नहीं थी वे भी बनवा दी गई हैं।

इस जिनालय के अन्तर्गत वर्ष 1998-99 में रु. 9,67,358/65 की आय और रु. 1,49,652/50 का व्यय हुआ है। बची हुई राशि का उपयोग बरखेडा तीर्थ मंदिर जीर्णोद्धार मे किया गया है।

श्री सीमन्धर स्वामी मंदिर, जनता कॉलोनी

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है।

यहाँ का वार्षिकोत्सव परम्परागत रूप से

मिगसर वद 12 स 2055 दि 15-11-98 को सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा आदि ठाणा की निश्रा मे सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण का लाभ पूर्ववत् डॉ भागचन्दजी छाजेड परिवार को दिया गया। सत्तरह भेदी पूजा पढाने का लाभ श्री बाबूलाल जी तरसेम कुमार जी जैन परिवार द्वारा लिया गया। साधर्मी वात्सल्य श्री सघ के चिट्ठे से सम्पन्न हुआ।

इस जिनालय के अन्तर्गत रु 21,117/15 की आय तथा रु 45,460/50 का व्यय हुआ है।

श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ, वरखेड़ा

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार कार्य के बारे मे समय-समय पर विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की जाती रही है। दिसम्बर 95 मे प्रारम्भ हुआ जीर्णोद्धार कार्य अबाध गति से चलते हुए गभारे और शिखर निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया है और अब आगे कोली चौकी और रग मडप निर्माण का कार्य चल रहा है। उत्तरग स्थापना का कार्य पू आ श्री नित्यानद सूरी जी म सा एव महत्तरा सा श्री सुमगला श्री जी म सा आदि ठाणा की पावन निश्रा मे दि 11-12-98 को सम्पन्न हुआ था।

जैसा कि आपको विदित है कि गच्छाधिपति आ श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा के आशीर्वाद, आ श्रीमद्विजय नित्यानन्द सूरीश्वर जी म सा के मार्गदर्शन एव महत्तरा साध्वी सुमगला श्री जी म सा की निश्रा मे इस तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हुआ था। आ श्री नित्यानन्द सूरी जी म सा से समय-समय पर मार्गदर्शन और मुहुर्त प्राप्त होते रहे। श्री सघ द्वारा उनसे निरतर आग्रह भरी विनती की जा रही थी कि एक बार वे स्वय यहा उपस्थित होकर कार्य का अवलोकन करने की कृपा करे और उन्होने भी कुचेरा का चातुर्मास पूर्ण कर शीघ्रातिशीघ्र यहा पधारने की कृपा की। चल रहे निर्माण कार्य का अवलोकन कर आपने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए श्रीसघ को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

यहा पर तीर्थाधिपति के साथ प्राचीन 3 अन्य जिन बिम्ब, मणीभद्र जी, भोमिया जी चक्रेश्वरी देवी और दो चरण पादुकाये है जिन्हे भी पुन प्रतिष्ठित किया जाना है। उपरोक्त बिम्बो को व्यवस्थित रूप से प्रतिस्थापित करने एव ग्राम के नामानुसार एव तीर्थ के अनुरूप कतिपय नए जिनबिम्ब एव देहरिया (गोखल) बनाने का मार्गदर्शन आपने प्रदान किया। दि 29-4-99 को तीर्थाधिपति को गर्भगृह मे प्रवेश कराने से पूर्व इस सम्बन्ध मे आपसे गहन चितन मनन चलता रहा और महासमिति के निर्णयानुसार यहा पर दस गोखले (देहरिया) एव छ नई प्रतिमाये भराकर विराजमान कराने का निश्चय किया गया। प्रतिमाजी भराई एव गोखलो के निर्माण के पृथक-पृथक नकरे निर्धारित किए गए और यह अकित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि दानदाताओ ने हाथो हाथ प्रतिमा भराई और गोखले निर्माण का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त कर लिया।

लाभार्थियो का विवरण निम्नानुसार है—

प्रतिमाजी एव गोखले—

(1) भगवान पुडरिक स्वामी का गोखला निर्माण व नवीन प्रतिमा भराई का लाभ शाह कल्याणमल जी किस्तूर मल जी परिवार ने लिया है।

(2) भगवान सीमन्धर स्वामी—

प्रतिमा- श्री मदनलाल जी प्रकाशचंद जी हस्तीमलजी बंगाणी, नागौर

गोखला- श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लूनावत परिवार ।

(3) भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी की नूतन प्रतिमा 31 इंच की के साथ 2 प्राचीन प्रतिमाओं सहित तीन प्रतिमाओं की देहरी—

श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा भराई एवं गोखला के निर्माण का लाभ श्रीमती जीवनकुमार हीराभाई चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार ने लिया है।

(4) श्री शांतिनाथ स्वामी की 25 इंच की नूतन प्रतिमा एवं एक प्राचीन प्रतिमा के साथ 3 प्रतिमाओं का गोखला । तीसरी श्री विमलनाथ स्वामी की प्रतिमाजी भराई का लाभ प्रतिष्ठा के अवसर पर चढावे से दिया जावेगा ।

श्री शांतिनाथ स्वामी की प्रतिमाजी भराई, एवं गोखले का निर्माण का लाभ श्री दानासिंह जी कर्णावट परिवार ने लिया है ।

(5) श्री पद्मावती देवी की 25 इंच की नूतन प्रतिमा भराई एवं गोखला निर्माण का लाभ—

श्रीमती पद्मा बहिन तरसेम कुमारजी पारख (श्री वावूलाल तरसेम कुमार जैन)

(6) श्री माणीभद्र जी का गोखला

श्री नरेश कुमारजी, दिनेश कुमारजी, राकेश कुमारजी मोहनोत परिवार ।

(7) श्री भोमिया जी का गोखला

श्री भंवरलाल जी मूथा परिवार

(8) श्री चक्रेश्वरी देवी का गोखला

श्रीमती सुनीता रानी जैन, वर्धमान मेडिकल स्टोर

(9) चरण पादुकाओं के दो गोखले—

श्री रूपचंदजी संजय कुमार जी डागा

प्रतिमा भराने वालों के नाम प्रतिमाजी के नीचे तथा गोखले निर्माण में सहयोगकर्त्ताओं के नाम शिलालेख पर अंकित किए जायेंगे । सभी गोखले मार्बल के बनकर आ गए हैं और कक्ष-निर्मित हो रहे हैं । नूतन प्रतिमाएं भी बनकर आ रही हैं ।

गंभारे में प्रवेश—

बैशाख सुदी 14, दि. 29-4-99 को प.पू. आचार्य भगवन्त एवं महत्तरा सा. म.सा के साथ-साथ विराजित मुनिवर्य श्री मणिप्रभ विजय जी एवं सा. श्री हर्षप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा, सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म., सा. श्री पूर्णप्रज्ञा श्री जी म.सा., श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म.सा., खरतरगच्छीय सा. श्री निर्मला श्री जी म. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में तीर्थाधिपति को मूल गंभारे में प्रवेश कराने का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ । जिनालय के आगे के निर्माण कार्य को दृष्टिगत रखते हुए एक और कमरे का निर्माण कराकर सभी प्राचीन बिम्बों को अस्थायी रूप से यहां विराजित किया गया है ।

तीर्थाधिपति को मूल गम्भारे में प्रवेश कराने का लाभ श्रीमान मीठालाल जी कुहाड द्वारा लिया गया था । अन्य सभी प्रकार के चढावे भी इस

अवसर पर बुलाए गए। श्री सघ की ओर से साधर्मी वात्सल्य हुआ ।

निर्माण कार्य निरन्तर जारी है। रग-मडप का कार्य पूर्ण होते ही चौकी, सीढिया, द्वार आदि का कार्य प्रारम्भ कर दिया जायेगा ।

आ श्रीमद् विजय नित्यानद सूरी जी म सा से प्रतिष्ठा का शुभ मुहुर्त प्रदान कर उन्हीं की पावन निश्रा मे प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न कराने की विनती की गई है और इस सम्बन्ध मे निरन्तर उनके सम्पर्क मे है । उचित अवसर पर शीघ्र ही प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी । इतना तो सतोष का विषय है ही कि तीर्थाधिपति को उसी पूर्व स्थान पर पुन विराजमान करने का जो दायित्व श्रीसघ द्वारा लिया गया था वह गर्भगृह मे प्रवेश से पूर्ण हो ही गया है । जिनालय निर्माण पूरा होने तक प्रतिदिन आयम्बिल की तपस्या करने का क्रम जारी हुआ था वह प्रतिष्ठा होने तक जारी रहेगा ।

भोजनशाला भवन निर्माण का कार्य दि 18-1-98 को श्री बुधसिह जी मोतीचन्द जी वैद के सौजन्य से प्रारम्भ हुआ था एव भवन का दूसरा भाग भी सघ की निधी से बन कर पूर्ण हो गया है । भवन के एक भाग के नामकरण का लाभ इन्हे ही दिया गया है । शेष भाग के लिए दानदाता के आगे आने पर उनका नामाकन हो सकेगा । भोजनशाला के लिए फोटु लगाने का नकरा 5100/- निर्धारित किया गया था उसमे भी अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ है और उपयुक्त समय पर भोजनशाला शुरू की जावेगी।

इस वर्ष की सबसे बडी उपलब्धी राजमार्ग से बरखेडा ग्राम तक पक्की डामर सडक बनने की रही है । वर्षो के निरतर प्रयास के पश्चात् भी यह कार्य जो अब तक नहीं हो सका था वह इस वर्ष पूरा हो गया । डामर की पक्की सड़क बन जाने से आवागमन सुगम हो गया है । प्राधिकरण से सडक बनवाने मे उल्लेखनीय सहयोग प्रदान करने के लिए श्री नोरतमलजी झाडचूर का वार्षिकोत्सव के अवसर पर माल्यार्पण के साथ स्मृति चिन्ह भेट कर स्वागत किया गया ।

दो मजिली धर्मशाला का निर्माण होने के पश्चात् भी भविष्य की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए और कमरे बनाने के प्रस्ताव है लेकिन भूमि की उपलब्धता अभी तक नहीं हो सकने के कारण अभी लबित है ।

तीर्थ का वार्षिकोत्सव इस बार फाल्गुन सुदी 13 दि 28 2 99 को धूमधाम से मनाया गया । आदीश्वर पच कल्याण पूजा एव साधर्मी वात्सल्य के साथ यह महोत्सव सम्पन्न हुआ ।

तीर्थ की अभिवृद्धि हेतु महत्तरा सा सुमगलाश्रीजी, सा प्रफुल्लप्रभा श्री जी आदि ठाणा की प्रेरणा से प्रतिमाह के अतिम रविवार का एक बस ले जाने की व्यवस्था की गई है । यात्रियो के लिए सभी प्रकार की व्यवस्था निशुल्क है जिसकी पूर्ति के लिए 5100/- का नकरा निर्धारित किया गया है । वर्ष भर के लिए भक्तिकर्ता लाभार्थियो न अपने-अपने नाम से प्रतिमाह की बस सुरक्षित करा ली है और 4 माह से यह क्रम जारी है ।

तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य पर इस वर्ष 14 20,878/25 की आय ओर रु 27,24,347/50 का व्यय तथा अब तक कुल रु 79,34,103/- की आय आर

रु. 1,18,30,454/45 का व्यय हो चुका है।

योजना विशाल एवं महत्वाकांक्षी है जिसके लिए आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि देवद्रव्य के सुरक्षित एवं समुचित उपयोग हेतु अखिल भारतीय स्तर के संघों, ट्रस्टों एवं पेढियों से और उदारमना सहयोग प्रदान करने की साग्रह विनती तो है ही व्यक्ति विशेष भी अपने द्रव्य को जिन शासन सेवा में अर्पित करने में पीछे नहीं रहेंगे ऐसी आशा है।

श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी परिवार के सौजन्य से मूलनायक भगवान की चांदी की विशाल आंगी बनकर प्राप्त हो गई है।

श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारु रूप से संचालित होती रही है। आवश्यक मरम्मत सफेदी के साथ एक और स्नानागार का निर्माण कराया गया है। यहां पर विराजित तीनों जिन बिम्बों की चांदी की आंगियां बना दी गई हैं। मूल नायक श्री शांतिनाथ स्वामी की आंगी श्री कपिल भाई केशवलाल शाह के सहयोग से प्राप्त हुई है।

इस जिनालय का वार्षिकोत्सव परम्परागत रूप से मगसर बदी 5 रविवार दि. 8 नवम्बर, 98 को धूमधाम से मनाया गया। सत्रहभेदी पूजा पढाने के साथ श्रीसंघ द्वारा साधर्मी वात्सल्य का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। ध्वजा चढाने का लाभ भी पतनमल जी नरेन्द्र कुमार जी लुनावत द्वारा लिया गया।

जिनालय के अन्तर्गत रु. 24,208/85 की आय तथा रु. 19,522/- का व्यय हुआ। निमार्ण कार्य पर रु. 12,462/- व्यय हुए हैं।

श्री जैन श्वे. तपागच्छ उपाश्रय

संघ के दोनों ही उपाश्रयों की व्यवस्था सुचारु रूप से सम्पन्न होती रही है। आवश्यक मरम्मत आदि कार्य कराए गए हैं।

श्री विजयानन्द विहार

जैसा कि पूर्व में विदित कराया जाता रहा है कि घीवालों के रास्ते में मकान सं. 1816 खरीदा गया था और पुराने जीर्ण-शीर्ण भवन को गिराकर समतल भूमि बनाने का विवरण पिछले प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया गया था।

विगत पर्यूषण के अवसर पर नव-निर्मित होने वाले चार मंजिले भवन की रूपरेखा और लाभार्थियों के लिए नकरों का विवरण प्रकाशित किया गया। श्रीसंघ में इस भवन के निर्माण के प्रति इतनी गहरी भावना थी कि पर्यूषण पर्व के समय म ही सभी नकरें पूर्ण हो गए और निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है।

आ. श्रीमद् विजय नित्यानंदसूरीजी म.सा. एवं महत्तरा सा. जी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दि. 2.12.98 को श्री पूनमचन्द नवीन भाई शाह परिवार द्वारा भूमि पूजन एवं दि 4 12.98 को श्री हीराभाई चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार के कर कमलों से शिलान्यास का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। विस्तृत विवरण पृथक से परिशिष्ठ-'क' में प्रकाशित किया गया है।

दि. 16.12.98 को संक्रांति महोत्सव के अवसर पर महासमिति की सहमति से इस भवन

का नामकरण "विजयानन्द विहार" नाम से आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से किया गया। इस अवसर पर सभी भाग्यशाली लाभार्थियो का बहुमान किया गया जिनका विवरण सलग्न परिशिष्ट 'ख' मे दिया गया है।

निर्माण कार्य हेतु 9 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है जिसमे श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत सयोजक, श्री हीराभाई चोधरी, श्री मोतीलाल जी भडकतिया, श्री राकेश कुमार जी मोहणोत, श्री दानसिह जी कर्णावट, श्री राजेन्द्र कुमार जी लूणावत, श्री चिन्तामणि जी ढड्ढा, श्री भागचद जी छाजेड एव श्री विमल कुमार जी सिघवी शामिल है।

हॉल व कमरो आदि के नकरे तो पूर्ण हो गए लेकिन यह कार्य अत्यधिक खर्च साध्य हे जिसके लिए प्रवचन हाल मे शिलालेख पर भवन सहयोगी के रुप मे नाम लिखाने का नकरा 21000/- निर्धारित किया गया है जिसमे अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है। इस वर्ष की प्राप्तिया रु 3,31,000 एव खर्च रु 49,150 हुआ है। निर्माण प्रगति पर है - समस्त नींवे भरकर मेजलाइन की छत डाल दी गई है-पर्यूषण बाद हाल की छत डालने की तैयारी है। जुलाई, 99 तक कुल रु 10,28,607/- की प्राप्ति एव रु 5,85,462/- का व्यय हो चुका है।

श्री वर्धमान आयम्बिलशाला

इस सींगे की आर्थिक स्थिति सुदृढ एव व्यवस्था पूर्ववत् कायम है लेकिन आयम्बिल करने वालो की उपस्थिति अपेक्षानुरुप पर्याप्त नहीं है। आयम्बिल करने वाले इसका अधिक से अधिक उपयोग करे तभी इसकी सार्थकता रहेगी।

आसोज मास की ओली कराने का लाभ श्री बाबूलाल जी तरसेम कुमार जी पारख परिवार द्वारा एव चैत्र मास की ओली कराने का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा लिया गया।

इस सीगे मे रु 1,04,117/90 की आय एव रु 68,890/- का व्यय हुआ है।

श्री जैन श्वे भोजनशाला

भोजनशाला की व्यवस्था वर्ष भर सुचारु रूप से सचालित होती रही है। बाहर से आने वाले यात्रियो, अतिथियो के साथ-साथ स्थानीय महानुभावो को अल्पराशि मे शुद्ध भोजन उपलब्ध हो रहा हे।

इस सीगे के अन्तर्गत रु 1,79,929/50 की प्राप्ति एव रु 1,84,548/50 का व्यय हुआ है।

श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवाकोष

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित इस कोष मे रु 22,051 की प्राप्ति एव साधर्मियो की सेवा हेतु रु 12,586/- व्यय किये गए है।

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

महिलाओ को स्वावलम्बी बनाकर जीविकोपार्जन करने मे सक्षम बनाने की दृष्टि से ग्रीष्मावकाश मे शिविर का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। इस वर्ष भी सुश्री सरोज कोचर शिविर सचालिका के सहयोग एव कार्य सचालन से दि 25 मई से 25 जून तक एक माह के शिविर का

आयोजन किया गया। शिविर सम्बन्धी विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है। शिविर का समापन समारोह दि. 4 7.99 को श्री हीराभाई चौधरी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमें शिविर में प्रशिक्षण प्रदान करने वाली प्रशिक्षिकाओं का स्मृति चिन्ह भेंट कर बहुमान किया गया। प्रशिक्षण के प्रत्येक अनुभाग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को भी स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रोत्साहित किया गया।

श्री साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय साध्य इस सीगे के अन्तर्गत रु. 4,95,764/05 की आय एवं रु. 3,86,545/50 का व्यय हुआ है। वर्ष भर में चार बार आयोजित होने वाले वार्षिकोत्सवों के अवसर पर होने वाले साधर्मी वात्सल्य, साधर्मी सेवाकोष, मणीभद्र प्रकाशन आदि विभिन्न कार्यकलापों की टूटत-बचत का समायोजन इसी सीगे में होता है। इतना अधिक द्रव्य-भार युक्त होने पर भी इस वर्ष भी यह सीगा टूटत से मुक्त रहा हे।

श्री ज्ञान खाता

इस सीगे के अन्तर्गत रु. 1,21,603/20 की आय एवं रु. 35,822/- का व्यय हुआ।

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर म.सा. के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में प्रकाशित होने वाले ग्रंथ में इस श्रीसंघ की तरफ से 11000/- एवं 3000/- की राशि भेंट की गई है।

साहित्य प्रकाशन में साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म.सा. का बहुत योगदान रहा है। इसी संघ द्वारा सौजन्यकर्त्ता श्री हीराभाई चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार के सहयोग से प्रकाशित ''साधना व आराधना'' नामक पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति भी पुनः प्रकाशित कराई गई यह भी अब समाप्त प्रायः है और मांग को देखते हुए संभवतः शीघ्र ही तृतीय आवृत्ति प्रकाशित हो। इसके अतिरिक्त ''वीजाक्षर सहित अन्नानुपूर्वी'' श्री मीठालाल जी कुहाड के आर्थिक सहयोग से, ''प्रातः सुमिरण'' श्री जवाहरलाल जी चौरडिया एवं ''श्री वर्द्धमान सामायिक आराधना'' श्री पुखराज जी सिंघी के सहयोग से प्रकाशित हुई है। सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.सा. द्वारा संकलित सज्झाय, स्तवन आदि की ''श्री कल्याण सम्पतमाला'' नाम से प्रथम आवृत्ति लगभग 20 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी। इसी की परिष्कृत परिवर्तित द्वितीय आवृत्ति भी अभी हाल में ही इस श्रीसंघ के तत्वावधान में प्रकाशित हो गई है।

धार्मिक पाठशाला

अथक प्रयासों के पश्चात् भी चल रही धार्मिक पाठशाला का यथोचित उपयोग नहीं हो रहा है। छात्र-छात्राओं की पर्याप्त उपस्थिति नहीं होने से इसकी उपयोगिता संदिग्ध बन जाती है। अभिभावकगण अधिक से अधिक संख्या में अपने बच्चों को इस धार्मिक पाठशाला में भेजें तभी इसकी उपयोगिता है।

सिलाई शाला

यह व्यवस्था भी जारी है और सिलाई प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है जिसका उपयोग

महिलाओ और बालिकाओ द्वारा किया जा रहा है।

मणिभद्र स्मारिका

भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस पर प्रकाशित होने वाली इस सघ की वार्षिक स्मारिका के 40वे अक का प्रकाशन यथा समय हो गया था। स्मारिका का विमोचन श्रीमती लाडबाई सिघी के कर-कमलो से सम्पन्न हुआ था। 41वा अक भी पूर्ववत् यथा समय आपकी सेवा मे प्रस्तुत हो रहा है। 40वे अक के प्रकाशन पर 48,899/- रु का व्यय तथा विज्ञापन द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान करने वालो से रु 61,351 की प्राप्ति हुई थी।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मडल एव श्री सुमति जिन श्राविका सघ

सघ के साथ सलग्न नवयुवको का कार्यशील सगठन श्री आत्मानन्द जैन सेवक मडल एव महिलाओ का सगठन श्री सुमति जिन श्राविका सघ की गतिविधियॉ धार्मिक एव सामाजिक आयोजनो की सफल क्रियान्विति हेतु वर्ष भर सुचारु रूप से सचालित होती रही हैं।

दोनो के ही वार्षिक प्रतिवेदन पृथक से प्रकाशित किये जा रहे है।

सघ की आर्थिक स्थिति

इस वर्ष सघ के कोष मे कुल रु 47,84,315/65 की आय तथा रु 43,38,190/15 का व्यय हुआ है जिसका विस्तृत विवरण सलग्न अकेक्षित आय-व्यय विवरण एव चिट्ठा वर्ष 1998-99 मे दिया गया है। बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार एव विजयानन्द विहार जैसी विशाल एव खर्च साध्य योजनाओ के साथ सभी सीगो मे हो रही बढोत्तरी के पश्चात् भी कुल 4,46,190/15 की बचत रही है यह श्रीसघ के लिए सतोष का विषय तो है लेकिन उपरोक्त दोनो योजनाओ को पूर्ण करने के लिए अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।

आगामी चुनाव

वर्तमान मे कार्यरत् महासमिति का कार्यकाल अप्रैल, 2000 मे तीन साल पूरे हो जाने से पूरा हो जावेगा। बरखेडा की प्रतिष्ठा और विजयानन्द विहार निर्माण कार्य को पूर्ण कराने जैसे चुनौती पूर्ण कार्य आगे होने है। प्रयास यही रहेगा कि आगामी चुनाव यथा समय सम्पन्न होकर नई महासमिति दायित्व सभाल ले।

सघ के सदस्यो का पजीकरण

जैसा कि आपको विदित है कि अब यह सघ पजीकृत है और पिछले चुनाव की प्रक्रिया म पजीकृत सदस्य ही भाग ले सके थे। सदस्यता शुल्क की राशि 5/- प्रति तीन वर्ष के लिए निर्धारित है। पूर्व मे पजीकृत सभी सदस्यो का सदस्यता शुल्क जनवरी, 2000 से बकाया की श्रेणी मे आ जाएगा। अत सघ के सभी पजीकृत सदस्यो से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराने हेतु परिवार के सभी सदस्यो के शुल्क को समय पर जमा कराने की कृपा करे।

इस बीच परिवार मे परिवर्तन होने यथा - नए सदस्यो के बालिग होने, विवाह के कारण कमी-बढोतरी होने, किन्हीं के देहावसानवश हुए रिक्त स्थान आदि का विवरण भी प्रस्तुत करन की कृपा करे ताकि सशोधित मतदाता सूची तेयार की

जा सके। जो महानुभाव अभी तक शुल्क जमा कराकर सदस्य नहीं बने हैं उनसे भी सविनय एवं साग्रह निवेदन है कि संघ की पंजीकृत सदस्यता प्राप्त कर जिनेश्वरदेव के शासन की सेवा में भागीदार बनकर पुण्योपार्जन करें।

कर्मचारी वर्ग

किसी भी संस्था के सुव्यवस्थित संचालन में कर्मचारी वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान रहता है और उनकी लगन, ईमानदारी और निष्ठा से ही संस्था सफलीभूत होती है। वर्ष भर में कार्यरत् सभी कर्मचारियों का भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है।

लेकिन सबसे दुखद स्थिति श्री सम्पतमल जी मेहता, मुनीमजी के असामयिक और आकस्मिक निधन की रही है। वे पिछले लगभग 30 वर्षो से इस श्रीसंघ की जिस लगन, परिश्रम, ईमानदारी और कार्यकुशलता से सेवा करते रहे, संघ की उत्तरोत्तर प्रगति में जो योगदान करते रहे वह चिरस्मरणीय रहेगा। उनके देहावसान पर सभा आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजिल अर्पित की गई।

पूर्ववत् कर्मचारियों के वेतन में अप्रैल, 99 से पर्याप्त वेतन वृद्धि की गई है और एक माह का वेतन पारितोषिक स्वरुप प्रतिवर्ष दिया जा रहा है।

धन्यवाद ज्ञापन

उपरोक्त विवरण में प्रसंगवश आए हुए दानदाताओं, भक्तिकर्त्ताओं और सहयोगियों का नामोल्लेख ही हो सका है लेकिन महासमिति सभी ज्ञात-अज्ञात नामों सहित श्रीसंघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति अपना आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझती है जिनकी शुभेच्छा और सक्रिय सहयोग एवं विश्वास से ही महासमिति अपने दायित्व का भली प्रकार निर्वहन कर सकी है। महासमिति अपने कार्यकाल की सफलताओं का सारा श्रेय श्रीसंघ को देते हुए अनजाने में हुई भूलों के लिए श्रीसंघ से क्षमा याचना करती है।

श्री राजेन्द्र कुमार जी चतर, सी.ए. जिन्हें साधारण सभा द्वारा भी तीन वर्षो के लिए संघ का अंकेक्षक नियुक्त किया गया था, निरंतर संघ के अंकेक्षण कार्य को निःशुल्क पूरा कर रहे हैं। महासमिति आपके एवं आपके पुत्र श्री राकेश कुमार जी सी.ए. के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करती है।

समापन

इस प्रकार महासमिति द्वारा अनुमोदित वार्षिक प्रतिवेदन एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण वर्ष 1998-99★ श्रीसंघ की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं।

जय महावीर !

★ नोट : संघ के पंजीकृत विधान के अनुसार अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा 1998-99 का अनुमोदन संघ की साधारण सभा की आगामी बैठक में किया जाना है। उक्त विवरण श्री संघ के सभी माननीय सदस्यों की सूचनार्थ प्रकाशित किया गया है। इसी प्रति का उपयोग साधारण सभा की बैठक में भी करने की कृपा करें।

परिशिष्ट–क

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्दसूरीश्वरजी म सा का प्रथम बार जयपुर आगमन एव विविध आयोजनो का विवरण निम्नानुसार है—

श्रीमद् आत्म-वल्लभ-समुद्र पाट परम्परा पर बिराजित वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म सा के आज्ञानुवर्ती आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्दसूरीश्वरजी म सा एव मुनिराज श्री जयकीर्तिविजयजी म सा कुचेरा का यशस्वी चातुर्मास, मेडता तीर्थ का पैदल यात्री सघ एव अजमेर सक्राति एव आराधना भवन के उद्घाटन का कार्य सम्पन्न करा कर जयपुर पधारे । दि 28 11 98 को आप जयपुर के उपनगर सोडाला पधारे । श्री जैन श्वे सघ, सोडाला के तत्वावधान मे निर्मित हो रहे जिनालय एव आराधना भवन मे कुछ समय के लिए प्रवास किया एव धर्म जागृति की प्रेरणा देते हुए शाम को आप तपागच्छ सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी (मगलचद ग्रुप) के निवास स्थान पर पधारे ।

रविवार, दि 29 नवम्बर, 1998 को प्रात 9 बजे आपका जयपुर मे नगर प्रवेश का आयोजन रखा गया था । चैम्बर भवन पर पहुचने पर आपका श्रीसघ की ओर से समैय्या किया गया और भव्य शोभा यात्रा के साथ आप तपागच्छ सघ के घी वालो के रास्ते मे स्थित जिनालय एव उपाश्रय मे पधारे । वडी सख्या मे श्रद्धालु श्रावक श्राविकाये तो साथ थे ही, मार्ग मे स्थान-स्थान पर गहुलिया करके गुरु भक्ति की गई । श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पहुचने पर सर्व प्रथम आपने सुमतिनाथ जिनालय मे जिनेश्वर देव के दर्शन एव चैत्यनन्दन करने के पश्चात सभा भवन मे पवेश किया । हाल मे पहुचने पर भी गाजे-बाजे के साथ आपका स्वागत किया गया ।

आपके मगलाचरण एव शुभ आशीर्वाद के साथ धर्म सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई । सर्वप्रथम श्री सुमति जिन श्राविका सघ की सदस्याओ ने स्वागत गीत पस्तुत किया । तत्पश्चात् आदर्शनगर महिला मण्डल की ओर से भक्ति गीत प्रस्तुत किया गया । तपागच्छ सघ के सघ-मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने जहा एक ओर सघ की गतिविधियो की जानकारी दी वहीं आचार्य भगवन्त का जीवन परिचय भी प्रस्तुत किया । सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने सघ की ओर से आपका अभिनन्दन करते हुए आपकी पाट परम्परा द्वारा समय-समय पर जयपुर तपागच्छ सघ पर किए गए उपकारो का उल्लेख किया साथ ही सन् 1995 के चातुर्मास मे महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी की प्रेरणा निश्रा एव मार्गदर्शन मे बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य एव सघ के लिए नए भवन की खरीद की पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत की । इसी विगत चातुर्मास मे महत्तरा साध्वीजी म सा की सुशिष्या सा प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म सा एव साध्वी पीयूषपूर्णाश्रीजी म सा आदि ठाणा

द्वारा सम्पन्न कराए विभिन्न अनुष्ठानों का विवरण भी प्रस्तुत किया। तदनन्तर आपको कामली बोहरा कर आपका अभिनन्दन किया गया। आज ही महत्तरा साध्वीजी म.सा. की गुरुवर्या स्व. साध्वी श्री सम्पतश्रीजी म.सा. का दीक्षा दिवस भी था जिनके प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित किये गये।

संघ की ओर से अभिनन्दन करने के पश्चात् जयपुर में स्थित श्वेताम्बर आमनाय के सभी संघों के पदाधिकारियों ने अपने भावोद्‌गारों से आपका स्वागत किया। सर्वप्रथम खरतरगच्छ संघ के संघ मंत्री श्री उत्तमचन्दजी बडेर, तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष श्री राजकुमार जी बरडिया, श्रीमाल सभा के अध्यक्ष श्री दुलीचन्दजी टांक, मुलतान सभा के मंत्री श्री नेमकुमारजी जैन, जवाहर नगर श्वेताम्बर संघ के श्री उमरावमलजी संचेती, मालवीय नगर संघ के अध्यक्ष श्री रूपचन्दजी भंसाली, सुमति जिन श्राविका संघ की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला छजलानी एवं आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के मंत्री श्री अशोक पी. जैन ने आचार्य श्री के जयपुर आगमन पर अपनी भावोभिव्यक्ति से स्वागत किया। श्री चन्द्रप्रकाशजी बेगानी एवं श्री राजकुमारजी वरडिया ने गुरुदेव के प्रति सृजित भजन प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा., सा. प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म., सा. पूर्णप्रज्ञाश्रीजी म., सा. पीयूषपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 तो उपस्थित थी ही, जयपुर में विराजित खरतरगच्छीय आमनाय की साध्वी सज्जनमणि श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा., सा श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. आदि भी अपने शिष्य समुदाय के साथ उपस्थित थी।

साध्वी श्री शशीप्रभाश्रीजी म.सा. ने अपने भावोद्‌गारों में कहा कि बीकानेर में एक बार उनका चातुर्मास भी आचार्य श्री के साथ ही था और उस समय दोनों के सामंजस्य से जिस प्रकार के आयोजन सम्पन्न हुए थे वे आज भी वहाँ के लोगों की चिर-स्मरणीय यादगार बने हुए हैं।

साध्वी पीयूषपूर्णा श्रीजी ने गुरुदेव की महिमा का बखान करते हुए गुरुदेव के आगमन की संघ द्वारा की जा रही चिर-प्रतीक्षा एवं यहां के कार्यकलापों का विवरण दिया। महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्रीजी ने अपने विगत 1995 एवं 96 के दोनों चातुर्मासों का स्मरण करते हुए जयपुर तपागच्छ संघ द्वारा उनके बताए मार्गो पर चलते हुए शासन शोभा और अभिवृद्धि के कराए जा रहे कार्यो के लिए संघ की प्रशंसा करते हुए मंगल कामना की।

अन्त में आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म.सा. ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के इस भौतिकवादी युग में सुख-सुविधाओं के अनेक साधन होने पर भी व्यक्ति दुखी है। यदि सच्चे सुख की प्राप्ति करनी है तो धर्माचरण एवं धार्मिक क्रियाओं को करना होगा। जिस प्रकार बिजली के एक तार के अन्दर अनेकों छोटे-छोटे तारों को गूंथ कर एक शक्तिशाली तार बनाया जाता है उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की धर्मक्रियाएं करके आत्मा को शक्तिशाली बनाकर आत्मोन्नति के मार्ग पर अग्रसर होना होगा।

सभा का संचालन संघ मंत्री श्री मोतीलाल

भडकतिया ने किया।

इस अवसर पर सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी - मगलचन्द गुप की ओर से साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन भी रखा गया जिसमे बडी सख्या मे भाई बहिनो ने भाग लिया।

मौन एकादशी एव आचार्य श्री समुद्रसूरीश्वरजी म सा की जन्म जयन्ती के उपलक्ष मे धर्म सभा।

सोमवार, दि 30 नवम्बर, 98 को प्रात 9 00 बजे श्री शिवजीराम भवन मे धर्म सभा हुई जिसमे मौन एकादशी की आराधना के साथ-साथ आचार्य श्री समुद्रसूरीजी म सा की जन्म जयन्ती के उपलक्ष मे गुणानुवाद सभा हुई जिसमे अन्य वक्ताओ के साथ-साथ आचार्य श्री नित्यानन्द सूरीजी म सा ने कहा कि महापुरुषो ने अपने जीवन मे कठिन तपस्या और ज्ञान ध्यान से जिन आदर्शो एव जीवन मूल्यो की स्थापना की थी उनका स्मरण कर मौखिक विवेचन करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु उन पर आचरण कर जीवन मे उतारना ही सही अर्थो मे गुणानुवाद एव उन्हे सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आज ही साध्वी श्री सज्जनश्रीजी म सा की पुण्य तिथि भी थी और इसीलिए खरतरगच्छ सघ के धर्म स्थल शिवजीराम भवन मे खरतरगच्छ एव तपागच्छ आमनायो के तत्वावधान मे सामूहिक आयोजन रखा गया था जिसमे अन्यान्य के साथ दोनो ही समुदायो की साध्वी मण्डल उपस्थित थी।

इस अवसर पर सज्जनमणि साध्वी श्री शशीप्रभाश्रीजी म ने कहा कि आज मौन एकादशी के दिन साधक को अन्तर्मुखी बनकर आत्म चितन करना चाहिए कि उसने जीवन मे क्या खोया और क्या पाया है। धन उपार्जित कर लेना ही पर्याप्त नहीं है जब तक जीवन मे धर्म नहीं होगा आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। उन्होने आचार्य श्री समुद्रसूरीजी म सा एव साध्वी सज्जनश्रीजी म सा के जीवन पर भी प्रकाश डाला।

तपागच्छ सघ के नव-निर्मित होने वाले भवन का भूमि पूजन

दि 2 दिसम्बर, 98 बुधवार। सन् 1996 मे महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्रीजी म सा के चातुर्मास काल मे सघ के लिए घीवालो के रास्ते मे खरीदे गए भवन निर्माण कार्य का शुभारम्भ आपकी पावन निश्रा मे भूमि पूजन से हुआ।

सर्वप्रथम श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन से आप चतुर्विध सघ के साथ निर्मित होने वाले भवन के प्रागण पर पधारे। भूमि पूजन का लाभ लेने वाले श्री पूनमचन्दभाई शाह एव उनके परिवार के सदस्यो के साथ उनके पुत्र श्री नवीनभाई एव जितेन्द्रभाई शाह भी थे। भूमि पूजन की क्रियाये सम्पन्न होने के पश्चात् धर्म सभा हुई जिसको सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म सा ने कहा कि मनुष्य अपने पुण्य से धन सम्पत्ति अर्जित करता है लेकिन इसकी सार्थकता अपने भौतिक सुख सुविधाओ का सग्रह करने मे ही नहीं है अपितु अर्जित धन को धार्मिक कार्यो, पीडित मानवता की सेवा और अभावग्रस्तो के अभाव दूर करने मे लगाने से ही है। दूसरो का हित चिन्तन करने, उनके दु ख दर्द दूर करने मे

सहायक बनने से सहज ही आत्मिक सुख एवं शांति का अनुभव होता है और यही सच्चा सुख है। महत्तरा साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने कहा कि इतिहास साक्षी है जिसमें विश्व विजेताओं को भी अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं सम्पत्ति धर्म कार्यों में लगाने के लिए उनकी माताओं ने प्रेरित किया था। आपने भवन के शीघ्र पूर्ण होने की मंगल कामना भी की।

इस अवसर पर भूमिपूजनकर्त्ता श्री पूनमचन्दभाई शाह परिवार का श्रीसंघ की ओर से इस अवसर पर उपयोग में लाए गए चान्दी के फावडे को भेंट कर अभिनन्दन किया गया। शाह परिवार द्वारा भी आचार्य एवं साध्वीजी म. को कामली बोहराई गई तथा श्रीफल की प्रभावना की गई। संयोजक श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दि. 3 दिसम्बर, 98 को भी श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में धर्म सभा हुई जिसमें आचार्य भगवन्त का प्रवचन हुआ जिसमें आपने साधक को निरन्तर आत्म कल्याण के लिए आराधना साधना करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी द्वारा सम्पादित तीन पुस्तकें - (1) प्रातः सुमिरण (2) अनानुपूर्वी बीजाक्षर सहित एवं (3) श्री वर्धमान सामायिक आराधना का विमोचन भी किया गया। इस अवसर तीनों ही पुस्तकों के द्रव्य सहायक श्री जवाहरलालजी चौरड़िया, श्री मीठालालजी कुहाड एवं श्री पुखराजजी सिंघी एवं उनकी माताजी तपस्विनि श्रीमती शान्ताबाई सिंघी का भी अभिनन्दन किया गया। श्री भंवरलालजी मूथा परिवार एवं बेड़ा श्रीसंघ की ओर से संघ पूजा की गई।

संघ के निर्मित होने वाले भवन का शिलान्यास समारोह

दि. 4 दिसम्बर, 98 शुक्रवार। भूमि पूजन का कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् दि. 4 दिसम्बर, 98 को शिलान्यास समारोह का आयोजन आपकी पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ। पूर्ववत् आचार्य श्री चतुर्विध संघ के साथ भूमि स्थल पर पधारे। शिलान्यास स्थापना का कार्य संघ के अध्यक्ष एवं लाभार्थी चौधरी हीराभाई मंगलचन्दजी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

श्रीमती चेतना शाह ने भजन प्रस्तुत किया। तदनन्तर साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि उन्हें हार्दिक प्रसन्नता है कि तपागच्छ संघ, जयपुर उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है और आचार्य भगवन्त से मार्गदर्शन प्राप्त कर भवन की खरीद के जिस कार्य को उन्होंने सम्पन्न कराया था तथा इसमें साध्वी श्री पूर्णप्रज्ञाश्रीजी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था एवं जिस विशाल भवन के निर्माण का जो स्वप्न संजोया था वह साकार रूप लेने की ओर अग्रसर है।

इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म.सा. ने कहा कि धन एवं यौवन क्षणिक है। समय रहते इनका उपयोग करने में ही सार्थकता है। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अपने अर्जित धन को लगाना भविष्य के लिए बैंक में धन जमा कराने के समान है। इसी प्रकार जब तक शरीर स्वस्थ है त्याग-तपस्या, ज्ञान ध्यान, स्वाध्याय, आराधना

साधना की जा सकती है। समय निकल जाने पर व्यक्ति चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता।

सघ मत्री मोतीलाल भडकतिया ने कहा कि इस जयपुर श्रीसघ पर जैनाचार्य श्री विजयानन्दसूरीजी की म की असीम कृपा रही है और यहाँ का आत्मानन्द सभा भवन, आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल और सबसे मुख्य आत्मारामजी महाराज की प्रतिमा का जिनालय परिसर मे स्थापित होना उनके प्रति अगाध श्रद्धा एव भक्ति का प्रतीक है। उनके पश्चात् उनकी पाट परम्परा पर बिराजित आचार्य श्रीमद् वल्लभसूरीजी, समुद्रसूरीजी एव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीजी म सा की भी असीम कृपा रही है। उनका वर्ष 1991 मे सम्पन्न हुआ चातुर्मास आज भी जन जन के स्मृति पटल पर चिर-स्मरणीय है।

सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने भवन के निर्माण की रूपरेखा और चार मजिले भवन के नकर त्वरित गति से पूर्ण होने का विवरण पस्तुत किया। उन्हाने आचार्य भगवन्त से विनती की कि जब तक बरखेडा तीर्थ की प्रतिष्ठा एव निर्मित होने पर भवन का उद्‌घाटन का कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता उन्हे अपना सक्रिय वरद्‌हस्त प्रदान करते रहना होगा तथा मुहुर्तानुसार स्वय यहाँ पधार कर ये कार्य सम्पन्न कराने हाग।

भवन निर्माण समिति के सयोजक श्री नरेन्द्रकुमार जी लुनावत ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा विश्वास दिलाया कि यथा सम्भव शीघ्रातिशीघ्र भवन निर्माण का कार्य पूर्ण कराने का प्रयत्न किया जावेगा।

तत्पश्चात् शिलान्यासकर्त्ता श्री हीराभाई चौधरी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जीवनकुमारी, भाई श्री भाष्करभाई, पुत्र श्री महेन्द्रभाई, श्रीपाल भाई एव महिपाल भाई आदि परिवार के सभी सदस्यो का माला एव इस अवसर पर उपयोग मे आए हुए चाँदी के कटोरे एव करणी को भेट कर, बहुमान किया गया।

चौधरी हीराभाई (मगलचद ग्रुप) परिवार द्वारा कामलिया वोहरा कर आचार्य भगवन्त एव साध्वी मण्डल का अभिनन्दन किया। आपके द्वारा मोदक की प्रभावना की गई।

सभा का सचालन सघ मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने किया। सयोजक नरेन्द्र कुमार लूणावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तदनन्तर आपने मालवीया नगर उपनगर मे श्री वासूपूज्य स्वामी जिनालय मे सम्पन्न होने वाली प्रतिष्ठा (दि 7 12 98) कराने हेतु विहार किया।

प्रतिष्ठा कराने के पश्चात् आप बरखेडा तीर्थ पधारे।

बरखेडा तीर्थ मे उत्तरग स्थापना समारोह

दि 11 12 98। आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्दसूरीश्वरजी म सा एव महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा आदि ठाणा की पावन निश्रा मे सघ के अधीन बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धारातर्गत निर्माणाधीन जिनालय के गर्भ गृह के प्रवेश द्वार पर उत्तरग स्थापना का आयोजन सम्पन्न हुआ। उत्तरग स्थापना का लाभ चढावे से

श्री हीराभाई मंगलचन्द जी चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया।

इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि तीर्थों की महिमा इसी वजह से है कि यहां पर तीर्थकरों एवं तपस्वियों ने अपनी आराधना साधना से जिस सुरम्य वातावरण का सृजन किया उसका प्रभाव युगों युगों तक वातावरण में व्याप्त रहता है। जिस क्षेत्र में खून की नदियां बही हों, निरन्तर हिंसा होती हो, दुराचार और अलचार का वातावरण रहता हो, वही प्रभाव व्यक्ति के मन पर पड़ता है और वहाँ पहुँचकर व्यक्ति उसी के अनुरूप व्यवहार करने लगता है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह ऐसे वातावरण से दूर रहे तथा जहाँ कहीं पर भी देव गुरु धर्म के प्रति श्रद्धा को सम्पुष्ट करने का साधन एवं वातावरण मिले वहाँ निरन्तर सम्पर्क में रहकर अपनी आत्मा का कल्याण करें।

इस अवसर पर जयपुर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु जन उपस्थित थे। आयोजित साधर्मिक वात्सल्य का लाभ श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमारजी लुनावत परिवार द्वारा लिया गया। इससे पूर्व वरखेडा तीर्थ के संयोजक श्री उमरावमलजी पालेचा ने आचार्यश्री को कामली बोहरा कर अभिनन्दन किया।

संघ मंत्री मोतीलाल भडकतिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संक्रांति महोत्सव

दि. 16.12.98। आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-7 की निश्रा में जयपुर तपागच्छ संघ के तत्वावधान में संक्रांति महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सज्जनमणि साध्वी श्री शशीप्रभाश्रीजी म. तो उपस्थित थी ही और उन्होंने सभा को उद्‌बोधन भी दिया था, राजस्थान मंत्रीमण्डल के उद्योग मंत्री श्री प्रघुम्नसिंहजी, राजस्व मंत्री श्री किशन मोटवानी, कृषि राज्य मंत्री श्री दीपेन्द्रजी शेखावत भी उपस्थित थे, जिन्होंने भी अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

आचार्य भगवन्त के द्वारा मंगलाचरण देकर धर्म सभा का शुभारम्भ किया गया। सर्वप्रथम श्री सुमति जिन श्राविका संघ, जयपुर की सदस्याओं द्वारा गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। तदनन्तर श्री अशोक कुमार जी आगरा, श्रीमती पदमा बहिन तरसेमकुमारजी जैन जयपुर, श्रीमती चान्दरानी नाहर एवं साध्वी श्री पूर्णनन्दिताश्रीजी म.सा. ने भजन प्रस्तुत किए।

संघ के निर्मित होने वाले भवन जिसका भूमि पूजन दि. 2 दिसम्बर एवं शिलान्यास 4 दिसम्बर, 98 को सम्पन्न हुआ था, आर्थिक योगदानकर्त्ताओं का माल्यार्पण एवं श्रीफल भेंट कर स्वागत किया गया। जिनका विवरण परिशिष्ट 'ख' में दिया गया है। इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी एवं संघ मंत्री मोतीलाल भडकतिया ने आचार्य भगवन्त से इस निर्मित होने वाले भवन का नामकरण करने की विनती की। आचार्य भगवन्त ने कहा कि आत्मारामजी महाराज का जयपुर से रहे हुए

सम्पर्क एव यहॉ पर पूर्व से ही आत्मानन्द जैन सभा भवन, आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल एव मदिरजी मे स्थापित आत्मारामजी म सा की प्रतिमाजी को ध्यान मे रखते हुए नए भवन का नाम भी उन्हीं पर रखना उचित रहेगा और इसलिए नूतन भवन का नाम ''विजयानन्द विहार'' रखने की घोषणा की जिसका तुमुल ध्वनि से स्वागत किया गया ।

इस अवसर पर खोड, आगरा, लुधियाना, जम्मू, कुचेरा, अजमेर, किशनगढ, सुनाम, श्रीगगानगर, हनुमानगढ, पीलीबगा, सूरतगढ आदि विभिन्न स्थानो से सघ लेकर आए हुए प्रमुखो का स्वागत किया गया । साथ ही जयपुर के विभिन्न सघो मे खरतरगच्छ सघ की अध्यक्षा श्रीमती जतनकवरबाई गोलेछा एव मत्री श्री उत्तमचदजी बढेर, श्रीमाल सभा के श्री विजय कुमारजी श्रीमाल, मुलतान जैन सघ के अध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, मालवीय नगर जैन सघ के अध्यक्ष श्री रूपचन्दजी भसाली, जवाहर नगर सघ के अध्यक्ष श्री जयकुमार जी लोढा, सोडाला सघ के श्री भास्करभाई चौधरी आदि का भी स्वागत किया गया ।

श्री सुशील कुमार जी एव साथियो न सक्राति भजन प्रस्तुत किया एव आचार्य भगवन्त ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए जैन एकता, भाव शुद्धि एव गुरु भक्ति के प्रति श्रद्धा पर प्रकाश डाला । धर्म सभा का सचालन सघ मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने किया ।

इस अवसर पर आयोजित साधर्मिक वात्सल्य का लाभ श्री बाबूलालजी तरसेम कुमारजी सुभाषचन्दजी जैन (पारख) परिवार द्वारा लिया गया । पहले उनके परिवार की ओर से आचार्य भगवन्त एव साध्वीजी म सा को कामली वोहरा कर गुरु भक्ति की गई, तदनन्तर श्रीसघ की ओर से इनका बहुमान किया गया ।

सक्राति पश्चात् जयपुर में सम्पन्न हुए विविध कार्यक्रम—

दि 16 12 98 को आचार्य भगवत् की निश्रा मे सम्पन्न हुई सक्राति महोत्सव के पश्चात् गुरुवार दि 17 12 98 को आपका श्री आत्मानन्द जैन सभा मे प्रवचन हुआ जिसमे आपने श्रद्धा से ही सिद्धि विषय पर प्रकाश डाला। सघ पूजा श्री भवरलालजी मूथा परिवार द्वारा की गई ।

शुक्रवार, दि 17 12 98 को आपने जयपुर के उपनगर तिलक नगर, मोतीडूगरी रोड, मनवाजी का बाग आदि क्षेत्रो मे अनेको साधर्मिक भाइयो के घरो पर पगलिए किए ।

शनिवार, दि 18 12 98 को श्री मुलतान जैन सभा के द्वारा श्री महावीर स्वामी जिनालय एव सलग्न उपाश्रय मे धर्म सभा को सम्बोधित किया । इस अवसर पर आपने धर्म का मर्म समझाते हुए समता भाव धारण करने पर प्रकाश डाला । साधर्मिक वात्सत्य का आयोजन भी श्री मुलतान जैन सघ द्वारा किया गया ।

दि 20 12 98 रविवार को आप जवाहर नगर पधारे । श्री जेन श्वेताम्बर सघ जवाहर नगर द्वारा आयोजित धर्म सभा, जो तीन घण्टे से भी अधिक चली, आपने मन शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला । श्री जवाहर नगर श्वे सघ द्वारा

साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन भी इस अवसर किया गया।

दि. 21 12.98 सोमवार को आदर्श नगर में स्थित महावीर भवन में आपने प्रवचन किया तथा दोपहर में श्री बाबूलाल जी तरसेम कुमार जी के घर देरासर में अट्ठारह अभिषेक का कार्यक्रम को सम्पादित कराया।

दि. 22.12.98 को श्री एस.जे. पब्लिक स्कूल, सेठी कॉलोनी के छात्रों को आपने सम्बोधित किया और विद्यार्थियों को लगन निष्ठा एवं परिश्रम से अपनी पढ़ाई पूरी करने के साथ-साथ शिक्षकों के प्रति सम्मान, अनुशासन एवं जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना पर प्रकाश डाला। स्कूल के निदेशक श्री अभयमलजी शाह ने आपका स्वागत किया और अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर पधारने के लिए आभार व्यक्त किया।

बुधवार, दि. 23.12.98 को श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित किया। संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी एवं मंत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने आपके जयपुर प्रवास काल को चिर-स्मरणीय बताते हुए बरखेडा तीर्थ के गर्भ गृह में भगवान के प्रवेश एवं प्रतिष्ठा का कार्य आपकी ही पावन निश्रा में सम्पन्न कराने हेतु पुनः पधारने की भावभरी विनती की। आपने भी भावी जोग अनुसार यथा शक्य जयपुर श्रीसंघ की भावना को पूर्ण करने का प्रयास करने का अश्वासन दिया।

धर्म सभा के तत्काल पश्चात् आपन जयपुर से विहार प्रारम्भ किया और प्रथम पडाव में आप श्री हीराचन्दजी कोठारी के निवास स्थान पर पधारे। आपको विदा देने हेतु बडी संख्या में श्रद्धालुजन साथ थे।

(प्रस्तोता - मोतीलाल भडकतिया, संघ मंत्री)

परिशिष्ट–ख
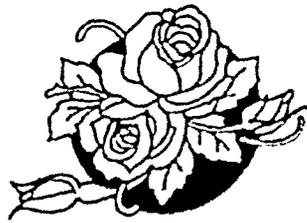
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

सघ के नए भवन विजयानद विहार निर्माण मे लाभार्थी एव सहयोगकर्त्ताओ की शुभ नामावली—

1 श्री पूनमचन्दभाई नगीनदास शाह (भूमि पूजन)

2 श्री चौधरी हीराभाई मगलचन्दजी (मगलचद ग्रुप) शिलान्यास कार्यालय कक्ष एव एक हाल।

3 श्री पतनमल जी नरेन्द्रकुमार जी लुनावत (प्रथम तल प्रवचन हाल)

4 श्री महेन्द्रसिह जी श्रीचन्दजी डागा (मेजाइन हाल)

5 श्री बाबुलालजी तरसेमकुमारजी जैन (भोजनशाला का हाल)

6 श्री देवेन्द्रकुमार जी सुरेन्द्रकुमारजी ओसवाल (ओसवाल साबुन) (एक हाल)

7 श्री दानसिहजी, किशनसिह जी, गणपत सिहजी, राजेन्द्रसिह जी कर्णावट (एक हाल)

8 श्री रतनचन्द जी सिघी (लिफ्ट)

9 श्री गुलाबमल जी सिघी, जोधपुर वाले (बोरिग)

कमरा

1 श्री लक्ष्मीचन्दजी सुनीत कुमार जी भसाली

2 श्री तपागच्छ श्राविका सघ

3 श्री सोनराजजी पोरवाल

4 श्री ज्ञानचन्दजी सुभाषचन्दजी छजलानी

5 श्री मोतीलालजी भडकतिया

6 श्री हीराचन्दजी माणकचन्दजी चौरडिया

7 श्री नरेश कुमारजी दिनेश कुमारजी राकेश कुमार जी मोहनोत

8 श्री कल्याणमलजी किस्तुरमल जी शाह

9 श्री कुशलराजजी सिघवी

10 श्री आर सी शाह

11 श्री हुकमचन्दजी कोचर

12 श्री दलपतसिहजी छजलानी

13 श्री भवरलाल जी मूथा

14 श्री ज्ञानचन्दजी तिलकचन्दजी अरुण कुमार जी पालावत

15 श्री उमरावमलजी पालेचा

16 श्रीमती लाडबाई शाह (जीतमलजी)

17. श्री जगवन्तमलजी साण्ड (श्रीमती मदनबाई सांड)
18. श्री पूनमचन्दजी पुष्पकुमार जी बुरड़ (2 कमरे)
19. श्री हीराचन्दजी जतनमल जी ढढ्ढा
20. श्रीमती उमरावकंवर बाई एवं पुत्र श्री कुशलचन्दजी लूनावत

भूमि एवं भवन निर्माण के सहयोगी

1. श्री खेतमलजी जैन
2. श्री धरमचन्द जी मेहता
3. श्री मोतीचन्दजी वैद
4. श्री शैलेशभाई हिम्मतलाल शाह
5. श्री नरेन्द्रकुमार जी भण्डारी (गुणसुन्दरी बाई)
6. श्रीमती कमलाबहन भोगीलाल शाह
7. श्री घीसूलाल जी मेहता
8. श्री सौभाग्यचन्द जी बाफना
9. श्री जयंतीलाल गगलभाई शाह
10. श्री राजकुमारजी अभयकुमारजी चौरडिया
11. श्री खीमराजजी पालरेचा
12. श्री पारसदासजी चिंतामणिजी ढढ्ढा
13. श्री हीराचन्दजी कोठारी
14. श्री बद्रीप्रकाशजी आशीष कुमार जी जैन
15. श्री बच्चुभाई शान्तिभाई शाह
16. श्री सुमति जिन श्राविका संघ
17. श्री ज्ञानचन्दजी सुशीलकुमारजी छजलानी
18. श्री मानसिंह जी मेहता
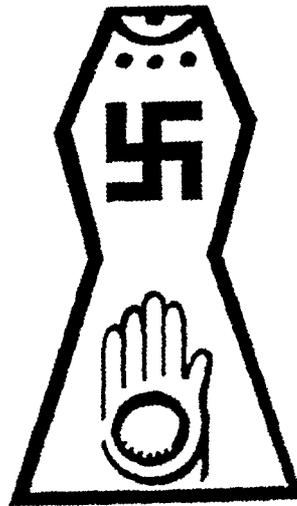
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

आय-व्यय खाता

(कर निर्धारण

गत वर्ष की रकम	व्यय		इस वर्ष की रकम
1,38,212 25	श्री मदिर खाते खर्च		1,49,652 50
	श्री आवश्यक खर्च	1,49,652 50	
41,44,823 32	श्री वरखेडा मदिर खर्च		32,86,757 00
	श्री मदिर खर्च	20,398 00	
	श्री मदिर साधारण खर्च	10,047 50	
	श्री जीर्णोद्धार खर्च	27,24,347 50	
	श्री भोजनशाला खर्च	24,331 00	
	श्री साधारण खर्च	5,07,633 00	
65,853 00	श्री जनता कॉलोनी मदिर खर्च		45,460 50
	श्री आवश्यक खर्च	45,460 50	
9,481 00	श्री चन्दलाई मदिर खर्च		19,522 00
	श्री आवश्यक खर्च	7,060 00	
	श्री जीर्णोद्धार खर्च	12,462 00	

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1998-99

वर्ष 1999-2000

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
7,18,228.45	**श्री मंदिर खाते आमद**		9,67,358.65
	श्री भंडार भेंट व गोलख आमद	9,48,816.36	
	श्री पूजन खाता	8,321.55	
	श्री जोत खाता	2,224.40	
	श्री ब्याज खाता	3,732.00	
	श्री किराया खाता	2,100.00	
	श्री मंदिर जीर्णोद्धार खाता	1,716.80	
	श्री केशर खाता	447.55	
36,38,217.85	**श्री बरखेडा मंदिर आमद**		23,37,412.65
	श्री भेंट एवं गोलख आमद	1,08,928.15	
	श्री जीर्णोद्धार खाता	14,20,878.25	
	श्री भोजनशाला फोटो खाता	3,42,923.00	
	श्री साधारण खाता	4,64,683.25	
1,28,117.35	**श्री मणीभद्र भंडार खाता आमद**		1,16,050.80
21,222.35	श्री जनता कॉलोनी मंदिर आमद		21,117.15
	श्री भेंट एवं गोलख खाता	21,117.15	
1,562.50	श्री चन्दलाई मंदिर आमद		24,208.85
	श्री जोत खाता	4,158.85	
	श्री जीर्णोद्धार खाता	20,050.00	

गत वर्ष की रकम	व्यय		इस वर्ष की रकम
6,81,979 50	श्री साधारण खर्च		3,86,545 50
	श्री आवश्यक खर्च	2,24,049 50	
	श्री साधर्मी वात्सल्य	1,04,640 00	
	श्री मणीभद्र प्रकाशन	48,899 00	
	श्री जीर्णोद्धार खाता	8,957 00	
7,820 70	श्री ज्ञान खाते खर्च		35,822 00
	श्री आवश्यक खर्च	35,822 00	
57,243 00	श्री आयम्बिल शाला खर्च		68,890 00
	श्री आवश्यक खर्च	68,890 00	
38,593 60	श्री वैय्यावच्च खाते खर्च		79,495 50
7,504 00	श्री साधर्मी सेवाकोष खाते खर्च		12 586 00
28,145 00	श्री जीवदया खाते खर्च		19 696 00
1,54,878 00	श्री भोजनशाला खाते खर्च		1,84,548 50
1,00,484 00	श्री विजयानन्द विहार निर्माण खाते खर्च		49,150 00
	श्री शुद्ध बचत सामान्य कोष मे हस्तान्तरित की गई		4,46,190 15
54,35,017 37			47,84,315 65

(हीराभाई चौधरी)	(राकेश कुमार मोहनोत)	(दानसिह कर्नावट)
अध्यक्ष	सयुक्त सघ मत्री	कोषाध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
4,25,182.83	**श्री साधारण आमद**		4,95,764.05
	श्री साधारण भेंट खाता	2,59,704.55	
	श्री ब्याज खाता	85,365.50	
	श्री किराया खाता	8,437.00	
	श्री साधर्मी वात्सल्य खाता	77,632.00	
	श्री मणीभद्र प्रकाशन खाता	61,351.00	
	श्री उद्योगशाला खाता	1,000.00	
	श्री उपाश्रय निर्माण खाता	823.00	
	श्री बहुमान खाता	1,101.00	
	श्री सदस्यता खाता	175.00	
	श्री आवेदन शुल्क खाता	175.00	
1,40,283.75	**श्री ज्ञान खाता आमद**		1,21,603.20
	श्री ज्ञान भेंट खाता	96,894.20	
	श्री ब्याज खाता	24,709.00	
1,04,548.30	**श्री आयम्बिल खाता आमद**		1,04,117.90
	श्री भेंट खाता	11,453 40	
	श्री फोटो खाता	7,777.00	
	श्री ब्याज खाता	84,887.50	
4,715.00	श्री वैय्यावच्च खाते आमद		5,232.50
28,102.40	श्री साधर्मी सेवाकोष खाता आमद		22,051.00
39,500.20	श्री जीवदया खाते आमद		41,057.30
1,62,104.00	श्री भोजनशाला खाते आमद		1,79,929.50
1,111.00	श्री विजयानन्द विहार निर्माण खाता आमद		3,31,000 00
3,606.90	श्री गुरुदेव खाते आमद		8,052 30
5,095.05	श्री शासनदेवी खाते आमद		8,603 10
559.60	श्री सात क्षेत्र खाते आमद		756.70
12,859.84	श्री शुद्ध हानि सामान्य कोष में हस्तान्तरित की गई		—
54,35,017.37			**47,84,315.65**

वास्ते चतर एण्ड चतर (चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट)

आर. के. चतर
पार्टनर

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

चिट्ठा

गत वर्ष की रकम	दायित्व		इस वर्ष की रकम
27,70,360 17	श्री सामान्य कोष		32,16,550 32
	गत वर्ष की रकम	27,70,360 17	
	इस वर्ष की बचत	4,46,190 15	
19,231 00	श्री ज्ञान स्थाई खाता		19,231 00
1,63,441 00	श्री आयम्बिल शाला स्थाई मिति		1,73,405 00
	गत वर्ष की जमा	1,63,441 00	
	इस वर्ष की रकम	9,964 00	
22,171 05	श्री श्राविका सघ खाता		22,171 05
41,581 00	श्री भोजनशाला स्थाई मिति खाता		41,581 00
2,74,233 00	श्री साधर्मी सेवाकोष स्थाई खाता		2,74,233 00
1,860 00	श्री सम्वतसरी पारना खाता		1,860 00
3,844 30	श्री नवपद पारना खाता		3,840 00
	गत वर्ष की रकम	3,844 30	
	इस वर्ष की रकम	-4 30	
51,000 00	श्री आयम्बिल शाला जीर्णोद्धार		51,000 00
—	श्री टी डी एस खाता		9,572 00
	इस वर्ष की रकम	9,572 00	
33,47,721 52			38,13,443 37

(हीराभाई चौधरी)	(राकेश कुमार मोहनोत)	(दानसिह कर्नावट)
अध्यक्ष	सयुक्त सघ मत्री	कोषाध्यक्ष

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

31-03-1999 तक

गत वर्ष की रकम	स्वामित्व		इस वर्ष की रकम
6,75,216.45	श्री स्थाई सम्पत्ति खाता		6,75,216.45
25,70,292.17	बैंको में जमा		29,50,451 42
	(1) मियादी जमा		
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	21,85,535.30	
	देना बैंक	5,32,144.00	
	(2) चालू खाता	1,435.04	
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर		
	(3) बचत खाता		
	दी बैंक ऑफ राजस्थान	2,436.36	
	बैंक ऑफ बड़ौदा	295.17	
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	2,28,605.55	
75,076.25	श्री विभिन्न लेनदारियां		1,38,176.25
	श्री उगाई खाता	618.25	
	श्री राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल	727.00	
	श्री अग्रिम खाता	1,36,831.00	
27,136.65	श्री रोकड़ बाकी		49,599 25
	Notes on Accounts Schedule-A		
33,47,721.52			38,13,443.37

वास्ते चतर एण्ड चतर (चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट)

आर. के. चतर
पार्टनर

SHREE JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH

GHEEWALON KA RASTA JOHARI BAZAR JAIPUR

SCHEDULE - "A"

Basis of Accounting and Notes on Accounts

1. Sangh follows cash basis of accounting
2. Depreciation on fixed assets not provided
3. Old property/new construction/ornaments/angies and other worship goods and articles are not included in the assets / income as usual
4. Previous year figures have been regrouped/ rearranged wherever considered necessary

Sd/ R K Chatter (8544)

Auditor's Report

1 (FORM NO 10B)

(See Rule 17 b)

AUDIT REPORT UNDER SECTION 12A(b) OF THE INCOME TAX ACT 1961 IN THE CASE OF CHARITABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OF INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of SHRI JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH Ghee Walon Ka Rasta Jaipur as at 31st March 1999 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust or institutions

We have obtained all the informations and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh subject to the comments that immovable properties Jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income and Expenditure are accounted for on receipt basis as usual

In our oponion and to the best of our information and according to the information given to us the said accounts subject to above give a true and fair view

(1) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named trust/institution as at 31st March 1999

(2) In the case of the Income & Expenditure Account of the profit or loss of its accounting year ending on 31st March 1999

The prescribed particulars are annexed here to

Place Jaipur
Dated 28 8 99

FOR CHATTER & CHATTER
CHARTERED ACCOUNTANTS
R K Chatter (8544)
Sd/ (R K CHATTER)
PARTNER

विज्ञापन दाताओं

के प्रति

हार्दिक आभार
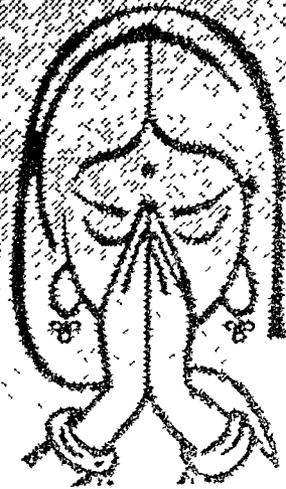
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री आत्मानंद जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार,

जयपुर – 302 003 (राज.)

फोन : 563260, 569494

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

घर, यात्रा तथा मन्दिर में देव दर्शन के लिये
कलात्मक जैन प्रतिमाओं की प्राप्ति के लिए
विश्वसनीय सम्पर्क सूत्र

नरेश मोहनोत
दिनेश मोहनोत
राकेश मोहनोत

रत्नो की सभी प्रकार की प्रतिमा व
फिगर्स के निर्माता व थोक व्यापारी

सम्पर्क

मोहनोत ज्वैलर्स

जयपुर

4459, के जी बी का रास्ता
जौहरी बाजार
जयपुर-302 003
फोन 561038/567374

12 मनबाजी का बाग
मोती डूगरी रोड जयपुर - 302 004
फोन 605002/609363
फेक्स 0141-609364

मुबई
28/11 सागर सगम बान्द्रा रिक्लेमेशन
बान्द्रा (वेस्ट) मुबई - 400 050
फोन 6406874/6436097

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के उपलक्ष में हमारी शुभकामनाएं :

➢ चौधरी यात्रा कम्पनी

➢ पिंकी आटो फाईनेन्स लि.

438, इन्दिरा वाजार, जयपुर
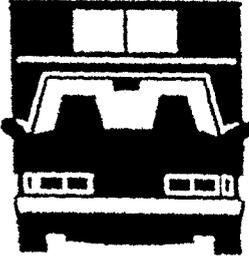
नये पुराने वाहनों पर
उचित ब्याज दर पर
ऋण सुविधा उपलब्ध है।
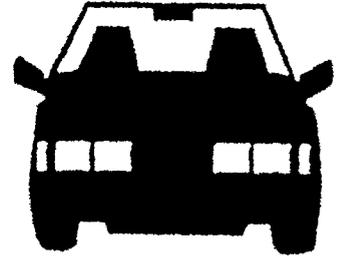
हमारे यहां यात्रा, घूमने या किसी भी कार्य के लिये बसें,

एयर कंडीशन बसें, कार इत्यादि उपलब्ध रहती हैं।

बाजार दर से किफायत हमारी विशेषता है।

समाज सेवा में वर्षों से समर्पित हैं।

Ph. : (O) 310099, 317605, (R) 567314